RAMKUMAR VARMA KE EKANKIYOM KA EK ADHYAYAN

Thesis submitted to
COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
for the degree of
DOCTOR OF PHILOSOPHY

By
BERLEY K. P.

Head of the Department
Prof. (Dr.) P. V. VIJAYAN
Dean Faculty of Humanities

Supervising Teacher
Prof. (Dr.) P. A. SHEMIM ALIYAR
Dept. of Hindi

DEPARTMENT OF HINDI
COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
KOCHI – 682 022

1993

CERTIFICATE

This is to certify that this THESIS is a bonafide record of work carried out by BERLEY, K.P., under my supervision for Ph.D. degree and no part of this has hitherto been submitted for a degree in any University.

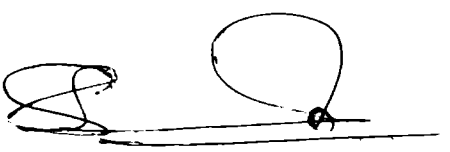

Prof.(Dr.) P.A.SHEMIM ALIYAR
Supervising Teacher
Professor
Department of Hindi
Cochin University of
Science and Technology

Kochi-682022
8.12.1993.

ACKNOWLEDGEMENT

This work was carried out in the Department of Hindi, Cochin University of Science and Technology, Kochi-682022 during the tenure of Fellowship awarded to me by the Cochin University of Science and Technology. I sincerely express my gratitude to the Cochin University of Science and Technology for the help and encouragement.

Department of Hindi,
Cochin University of
Science and Technology,
Kochi-682022

8.12.1993.

K.P Berley

BERLEY, K.P.

आमुख

डॉ. रामकुमार वर्मा बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं । हिन्दी साहित्य के आधुनिक साहित्यकारों में उन्हें प्रमुख स्थान है । हिन्दी साहित्य के नाटक, कविता, निबन्ध, आलोचना, एकांकी आदि सभी क्षेत्रों में उन्होंने तूलिका चलायी है । लेकिन उनकी ख्याति कवि, नाटककार एवं एकांकीकार के रूप में है । पाश्चात्य तकनीक से प्रभावित होकर उन्होंने हिन्दी एकांकी साहित्य को एक नया मोड दिया । केवल एक एकांकीकार के रूप में नहीं बल्कि एकांकी के जनक तथा एकांकी सम्राट के रूप में वे विख्यात है । एकांकी क्षेत्र में उन्होंने विषय की दृष्टि से ऐतिहासिक, सामाजिक, पौराणिक, साहित्यिक एवं वैज्ञानिक एकांकियों की रचना की है । लेकिन उनका विशेष ध्यान ऐतिहासिक, सामाजिक तथा पौराणिक एकांकियों में है । इन सभी एकांकियों में भारतीय प्राचीन आदर्शों का यशोगान है । अभी तक डॉ. रामकुमार वर्मा के एकांकियों पर इस विभाग में शोध कार्य नहीं संपन्न हुआ है । इसलिए मैं ने शोध प्रबन्ध के लिए इस विषय को चुन लिया । इस शोध प्रबन्ध में उनके ऐतिहासिक, सामाजिक, एवं पौराणिक एकांकियों पर चर्चा की है ।

यह शोध प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभक्त है । प्रथम अध्याय है "हिन्दी एकांकी स्वरूप और विकास" । इसमें एकांकी के प्रमुख तत्वों तथा एकांकी की विकास यात्रा का वर्णन है ।

दूसरे अध्याय में डॉ. रामकुमार वर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व की एक रूपरेखा प्रस्तुत की गयी है ।

तीसरा अध्याय है "रामकुमार वर्मा के एकांकियों में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक चेतना" । इसमें उनके ऐतिहासिक पौराणिक एकांकियों का विश्लेषण किया गया है ।

चौथा अध्याय है "रामकुमार वर्मा के एकांकियों में सामाजिक चेतना" । इसमें उनके सभी सामाजिक एकांकियों की पहचान और परख की गयी है ।

पाँचवाँ अध्याय उनके एकांकियों का शिल्पगत अध्ययन है । इसमें पात्र और चरित्रचित्रण, संवाद, संकलनत्रय, भाषा, रंगमंचीय अवधारणा आदि पर विचार किया गया है ।

उपसंहार में उपर्युक्त पाँच अध्यायों के विवेचन से प्राप्त निष्कर्ष है ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध इस विभाग के प्रोफ्सार डॉ. पी. ए. षमीम अलियार के विद्वतापूर्ण निर्देश में संपन्न हुआ है । विषय चुनाव से लेकर इसकी प्रस्तुति तक उनके उपदेश तथा स्नेहमय व्यवहार से मुझे प्रोत्साहन मिला है । इसके लिए मैं बहुत आभारी हूँ ।

मुझे इस विभाग के अध्यक्ष प्रोफ्सार पी. वी. विजयन से समय समय पर निर्देशन एवं प्रोत्साहन मिला है । उनके प्रति मैं आभारी हूँ ।

इस विभाग के पुस्तकालय की अध्यक्षा श्रीमती कुंजिकावुट्टी तम्पुरान और पी. ओ. आन्टेणी के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ।

कोचिन विश्वविद्यालय के प्रति मैं विशेष कृतज्ञ हूँ क्योंकि उन्होंने छात्रवृत्ति देकर मुझे आर्थिक संकट से बचाया।

K. P. Beeley

बेरली. के. पी.

हिन्दी विभाग,
कोचिन विश्वविद्यालय,
कोचिन - 682 022.

विषय - प्रवेश

पृष्ठ संख्या

पहला अध्याय — 1 - 39

हिन्दी एकांकी स्वरूप और विकास

एकांकी का स्वरूप - एकांकी की परिभाषा- एकांकी और लघु नाटक तथा एकांकी और कहानी में साम्य और वैषम्य - एकांकी के प्रमुख तत्व - एकांकी के विभिन्न प्रकार- प्राचीन भारतीय एकांकी - हिन्दी साहित्य में एकांकी का उद्भव और विकास

दूसरा अध्याय — 40 - 57

डॉ. रामकुमार वर्मा : व्यक्तित्व और कृतित्व

पारिवारिक परिवेश - शिक्षा - साहित्य सृजन की प्रेरणा और प्रभाव - साहित्यिक जीवन का आरंभ और विकास - विभिन्न साहित्यिक विधाओं - काव्य - नाटक - आलोचना - निबन्ध - संस्मरण - संपादन - समीक्षा - उनकी देन - रचनाओं पर उनको मिले हुए पुरस्कार - उनसे विराजित पद ओहदे

तीसरा अध्याय 58 - 124

रामकुमार वर्मा के एकांकियों में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक चेतना

इतिहास- ऐतिहासिक साहित्य

ऐतिहासिक एकांकी:- मर्यादा की वेदी पर - तैमूर की हार - औरंगज़ेब की आखिरी रात - भाग्य नक्षत्र - कृपाण की धार - चारुमित्रा - दीपदान - स्वर्णश्री - कलंकरेखा - रात का रहस्य - क्रान्तिदूत शास्त्री - बापू - ध्रुवतारिका - दुर्गावती - समुद्रगुप्त पराक्रमांक - राज्यश्री - कौमुदी महोत्सव - विक्रमादित्य - अभिषेक पर्व - शिवाजी - नाना फड़नवीस - सोन का वरदान - पानीपत की हार - उदयन - वासवदत्ता - कादम्ब या विष - पृथ्वीराज की आँखें

पौराणिक एकांकी :- एक बूँद दूध - मृत्यु पर विजय - शास्त्रार्थ- नैमिषारण्य का नकुल - सुकन्या - संदेह की निवृत्ति - एक कमंडल जल - योगाग्नि - पारस का स्पर्श - राजरानी सीता - शैल शिखर - भारत का भाग्य

चौथा अध्याय 125 - 173

रामकुमार वर्मा के एकांकियों में सामाजिक चेतना

सामाजिक एकांकी :- चंपक - एक तोला अफीम की कीमत - पुरस्कार - कलेंडर का आखिरी पन्ना - छींक - पृथ्वी का स्वर्ग- कहाँ से कहाँ - सही रास्ता - रजनी की रात - जीवन का प्रश्न-

घर का मकान - नमस्कार की बात - मूर्छा - नारियों की सबसे बड़ी कला - फीमेल पार्ट - इलेक्शन - बादल की मृत्यु - महाभारत में रामायण - छोटी सी बात - रंगीन स्वप्न - प्रेम की आँखें - आँखों का आकाश - रूप की बीमारी - ऐक्ट्रेस - हीरे के झुमके - चक्कर का चक्कर - परीक्षा - शक्ति संजीवनी - अठारह जुलाई की शाम - रेशमी टाई

पाँचवाँ अध्याय 174 - 223

शिल्पगत अध्ययन

पात्र - पात्रों का वर्गीकरण - नारी पात्र विभिन्न भूमिकाऐं - चरित्रचित्रण - संवाद - भाषा - संकलनत्रय- रंगगंधीय अवधारणा

उपसंहार 224 - 229

ग्रंथसूची 230 - 237

पहला अध्याय

हिन्दी एकांकी स्वरूप और विकास

विषयप्रवेश

एकांकी हिन्दी साहित्य का सशक्त अंग व प्रकार है । यंत्रयुग की द्रुतगामिता तथा संघर्षमय जीवन की व्यस्तता इसकी उत्पत्ति का कारण बन गया । इनके द्वारा कम से कम समय में पाठक, श्रोता या दर्शक अपना मनोरंजन कर सकते हैं । इसलिए दीर्घकाय साहित्यिक माध्यमों जैसे उपन्यास, नाटक तथा महाकाव्यों के प्रति लोगों में अरुचि उत्पन्न हो गयी । एकांकी को स्पष्ट एवं सुनियोजित मार्ग मिलने का अन्य कारण रेडियो का निरन्तर बढता हुआ प्रचार है । पुनः रंगमंच के उद्धार द्वारा जीवन और साहित्य में सुरुचि का समावेश करने की प्रवृत्ति ने इस विधा को लोकप्रियता प्रदान की है । बाद में स्कूलों, कालिजों, सामाजिक संस्थाओं आदि स्थानों विशेष अवसरों पर नाटकों की अपेक्षा एकांकी अधिक खेलने लगे ।

स्वरूप

एकांकी एक अंक में समाप्त होनेवाला नाटक है । इसमें जीवन की किसी एक ही महत्वपूर्ण घटना, परिस्थिति या समस्या का चित्रण होता है । यह सीमित क्षणों में दर्शकों के हृदय में जिज्ञासा उत्पन्न कर चरमसीमा तक पहुँचता है । वास्तव में एकांकी, छोटी परिधि में सामाजिकों को तृप्त करानेवाला सशक्त माध्यम है । इसमें पात्रों की संख्या कम है । पन्द्रह मिनट से लेकर एक घंटे के अन्दर ही एकांकी समाप्त हो जाते हैं । लेकिन इसमें अनेक दृश्य होते हैं ।

एकांकी की परिभाषा

हिन्दी के कई लेखकों और आलोचकों ने एकांकी की भिन्न भिन्न परिभाषायें दी है । उपेन्द्रनाथ अश्क के अनुसार " बड़े नाटक की तुलना में एकांकी जीवन के एक अंक का पृथक विच्छिन्न चित्र उपस्थित करता है । जीवन की एक झांकी मात्र देता है, विभिन्नता के बदले अपूर्णता, फैलाव के बदले सिमटाव, विस्तार के बदले संक्षिप्तता इसके गुण है । एकांकी लेखक किसी मूलभूत विचार को उसकी समस्त संभावनाओं के साथ व्यक्त नहीं करता उसका संकेत मात्र करता है ।"[1] डॉ. नगेन्द्र के अनुसार "एकांकी एक अंक में समाप्त होनेवाला नाटक है और यद्यपि इस अंग के विस्तार के लिए कोई विशेष नियम नहीं है फिर भी छोटी कहानी की तरह उसकी एक सीमा तो है ही । परिधि का यह संकोच कथा संकोच की ओर इंगित करता है - और एकांकी में हमें जीवन का क्रमबद्ध विवेचन न मिलकर उसके एक पहलू, एक महत्वपूर्ण घटना, अथवा एक उद्दीप्त क्षण का चित्र मिलेगा । इसलिए एकता एवं एकाग्रता अनिवार्य है । किसी प्रकार का वस्तु विभेद उसे सह्य नहीं । एकाग्रता में आकस्मिकता की झकोर अपने आप आ जाती है और उस झकोर से चरमसीमा में स्पंदन पैदा हो जाता है । विदेश के संकलनत्रय का निर्वाह भी इस एकाग्रता में काफी सहायक हो सकता है, पर वह सर्वथा अनिवार्य नहीं है । प्रभाव और वस्तु ऐक्य तो अनिवार्य है ही लेकिन स्थान और काल की एकता का निर्वाह किये बिना भी सफल एकांकी की रचना हो सकती है ।"[2]

---

1. प्रतिनिधि एकांकी - आमुख - पृ. 17 - उपेन्द्रनाथ अश्क
2. आधुनिक हिन्दी नाटक - पृ. 92 - डॉ. नगेन्द्र

डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार "एकांकी नाटक में अन्य प्रकार के नाटकों से विशेषता होती है । उसमें एक ही घटना होती है और वह घटना नाटकीय कौशल से ही कुतूहल का संचय करती हुई चरमसीमा तक पहुँचती है । उसमें कोई अप्रधान प्रसंग नहीं रहता एक एक वाक्य और एक एक शब्द प्राण की तरह आवश्यक रहते हैं । पात्र चार या पाँच ही होते हैं जिनका सम्बन्ध नाटक की घटना से सम्बन्ध रहता है । वहाँ केवल मनोरंजन के लिए आवश्यक पात्र की गुंजाइश नहीं । प्रत्येक व्यक्ति की रूपरेखा पत्थर पर खिंची हुई रेखा की भाँति स्पष्ट और गहरी होती है । विस्तार के अभाव में प्रत्येक घटना कली की भाँति खिलकर पुष्प की भाँति विकसित हो उठती है । उसमें लता के समान फैलने की उच्छृंखलता नहीं । घटना के प्रत्येक भाग का सम्बन्ध मनुष्य शरीर के हाथ पैरों के समान है, जिसमें अनुपात विशेष से रचना होकर सौन्दर्य की सृष्टि होती है । कथावस्तु भी स्पष्ट और कुतूहल से युक्त रहती है और उसमें वर्णनात्मकता की अपेक्षा अभिनयात्मक तत्व की प्रधानता रहती है ।"[1] देवेन्द्रनाथ शर्मा तथा विश्वनाथ तिवारी की राय में "एकांकी नाटक का ही एक प्रकार है किन्तु जैसा नाम से ही स्पष्ट है, यह एक अंक का नाटक है । बड़े नाटक की कथावस्तु विस्तृत होती है । उसमें कई अंक और कई दृश्य होते हैं किन्तु एकांकी नाटक में एक ही अंक होता है । इसमें जीवन की कोई एक ही मार्मिक घटना या प्रसंग या समस्या प्रस्तुत की जाती है । इसमें कार्य-व्यापार की अधिकता नहीं होती । अतः यह मुश्किल से पन्द्रह मिनट से एक घंटे के भीतर ही अभिनीत हो सकता है ।"[2]

---

1. एकांकी कला - पृ. 4 - डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. त्रिलोकी नारायण दीक्षित
2. नव एकांकी - पृ. 1 - देवेन्द्रनाथ शर्मा, विश्वनाथ तिवारी

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर एकांकी की मुख्य विशेषतायें है -

1. एकांकी जीवन के एक पहलू, एक महत्वपूर्ण घटना, अथवा एक उद्दीप्त क्षण का चित्र प्रस्तुत करता है । इसमें केवल एक ही अंक होता है, तथा पात्रों की संख्या सीमित होती हैं । कुतूहल, संघर्ष और द्वन्द्व एकांकी के लिए अनिवार्य है । संकलनत्रय भी एकांकी केलिए आवश्यक है । एकांकी का संवाद संक्षिप्त और चुस्त होना चाहिए । पन्द्रह मिनट से लेकर एक घंटे के अन्दर एकांकी समाप्त हो जाता है । एकांकी का एक निश्चित लक्ष्य होता है, और उसकी कथावस्तु स्पष्ट और कुतूहल से युक्त रहती है ।

एकांकी और लघुनाटक

एकांकी और लघुनाटक में कई भिन्नतायें हैं । एकांकी में केवल एक ही अंक है लेकिन नाटक में अनेक अंक और अनेक दृश्य है । एकांकी में जीवन की किसी एक महत्वपूर्ण घटना या विशेष परिस्थिति या समस्या का चित्रण होता है । लेकिन नाटक में घटना बाहूल्य है । लंबे लंबे वार्तालाप तथा पात्रों की अधिकता लघु नाटकों की विशेषता है बल्कि एकांकी में वार्तालाप संक्षिप्त और चुस्त है तथा पात्रों की संख्या कम है । संकलनत्रय एकांकी के लिए आवश्यक है किन्तु नाटक के लिए इसकी आवश्यकता नहीं । सीमित क्षणों में एकांकी समाप्त हो जाता है बल्कि लघु नाटक में समय का विस्तार है ।

एकांकी और कहानी

एकांकी और कहानी में कई समानतायें और भिन्नतायें हैं । दोनों के तत्व समान है, और दोनों में पात्रों की संख्या कम है । लेकिन शिल्पगत दृष्टि से दोनों में भिन्नतायें हैं । एकांकी मूलत: रंगमंच और दर्शक केलिए लिखे जाते हैं । इसलिए इसमें रंगमंच की सारी सीमायें हैं । मानवेतर पात्रों को रंगमंच पर प्रस्तुत करने में कठिनाई होती है । संकलनत्रय भी एकांकी के लिए आवश्यक तत्व है । संक्षिप्तता और सरलता एकांकी के संवादों के लिए आवश्यक है । कहानी पढने के लिए लिखी जाती है । इसमें मानवेतर पात्रों को प्रस्तुत करने में कोई कठिनाई नहीं । कथोपकथन दीर्घ और आलंकारिक हो सकते हैं । कहानियों के लिए कथानक की आवश्यकता अनिवार्य नहीं ।

एकांकी के तत्व

एकांकी के प्रमुख तत्व हैं -

1. कथावस्तु
2. पात्र और चरित्र चित्रण
3. संवाद या कथोपकथन
4. देशकाल या वातावरण
5. भाषा शैली
6. उद्देश्य या लक्ष्य
7. रंगनिर्देश

1. कथावस्तु

एकांकी की नींव है कथावस्तु या कथानक जिस पर एकांकी का ढाँचा खड़ा होता है । डॉ. सिद्धनाथ कुमार की राय में "कथानक एकांकी की आधारशिला है । इसी पर नाटक का समूचा भवन खड़ा होता है । साथ ही, वह चरित्र को प्रकाशित करने का साधन है, जीवन को देखने की दृष्टि है ।"[1] यह कथानक इतिहास पुराण या कल्पना कहीं से चुना लिया जाता है । कथानक का कुतूहलवर्द्धक होना आवश्यक है । उसमें प्रासंगिक कथाओं के लिए कोई स्थान नहीं ।

कथानक के विकास की चार प्रमुख अवस्थायें है - 1. आरंभ 2. विकास 3. नाटकीय संघर्ष और 4. चरमसीमा ।

एकांकी के आरंभ में घटनाओं एवं पात्रों का परिचय देता है । एक सफल एकांकी का प्रारंभ अत्यन्त स्वाभाविक और रोचक होता है । वह दर्शकों को आकर्षित करता है और उनमें जिज्ञासा उत्पन्न कर देता है । पृष्ठभूमि तैयार हो जाने पर कथा आगे बढ़ती है जिसे विकास की अवस्था कहते हैं । इस अवस्था में संघर्ष या द्वन्द्व का समावेश होता है । संघर्ष दो प्रकार के होते हैं - बाह्य संघर्ष और आन्तरिक संघर्ष । आन्तरिक संघर्ष को कला की दृष्टि से श्रेष्ठ मानते हैं । संघर्ष का अन्तिम बिन्दु एकांकी की चरमसीमा है । यहाँ दर्शकों का कुतूहल समाप्त हो जाता है ।

---

1. हिन्दी एकांकी की शिल्पविधि का विकास - डॉ. सिद्धनाथ कुमार - पृ. 67

संकलनत्रय एकांकी के लिए एक अनिवार्य तत्व है । डॉ. रामकुमार वर्मा की राय में "संकलनत्रय का तात्पर्य है समय, कार्य एवं स्थान की इकाई का संकलन । किसी एकांकी में एकांकीकार को समय, कार्य एवं स्थान की इकाई पर विशेष ध्यान रखना अपेक्षित है ।"[1] संकलनत्रय के सम्बन्ध में उपेन्द्रनाथ अश्क का मत यह है "आधुनिक एकांकी का सबसे बड़ा गुण संकलनत्रय अर्थात् समय, स्थान और कार्य-गति का गुम्फन है । एक ही समय में एक ही स्थान पर एक-सी गति से नाटकीय कार्य चलता है । प्रायः एकांकी रंगमंच पर उतने समय में खेला जाता है, जितने में कि वह वास्तविक जीवन में खेला जा सकता है । एक दृश्य दस वर्ष पहले पूर्व और दूसरा दस वर्ष बाद, एक शिमले और दूसरा नैनिताल आधुनिक नाटक में नहीं रहता । यह संकलनत्रय आधुनिक नाटक को वास्तविकता का अपूर्व पुट दे देता है ।"[2]

पात्र और चरित्रचित्रण

पात्र या चरित्रचित्रण एकांकी के लिए एक अनिवार्य तत्व है । क्योंकि कथावस्तु का प्रस्तुतीकरण पात्रों के माध्यम से ही होता है । श्रेष्ठ एकांकी में पात्र ही कथा का संचालन करता है ।

पात्रों के सम्बन्ध में विशेषता यह है कि एकांकी में पात्रों की संख्या सीमित है । उसमें अनावश्यक पात्रों के लिए कोई स्थान

---

1. एकांकी कला - पृ. 31 - डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. त्रिलोकी नारायण दीक्षित
2. प्रतिनिधि एकांकी आमुख पृ- 19-20 - उपेन्द्रनाथ अश्क

नहीं । नायक, प्रतिनायक और दो तीन गौण पात्रों को ही रखा जाता है । ये सभी पात्र स्वाभाविक, यथार्थ और सजीव होते हैं । कृत्रिम पात्रों के लिए एकांकी में कोई स्थान नहीं । एकांकी के नायक का तो अत्यन्त सजीव और प्राणवान होना बहुत आवश्यक है ।

संवाद या कथोपकथन

संवाद एकांकी का अनिवार्य तत्व है । संवादों के माध्यम से एकांकीकार अपने विचारों को दर्शकों तक पहुँचाता है । संवाद या कथोपकथन के सम्बन्ध में डॉ. रामकुमार वर्मा का मत यह है "संवाद या कथोपकथन एकांकी का सबसे आवश्यक तत्व है । बिना कथोपकथन के एकांकी के अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती । कथोपकथन वह साधन है जिसके द्वारा नाटकीय पात्र स्वविचार, स्वानुभूति तथा स्वभावों को व्यक्त करता हुआ दर्शकों को अपना परिचय देता है । कथोपकथन को, इसी कारण एकांकी का अनिवार्य तत्व कहा गया है । सुन्दर और आकर्षक कथोपकथन एकांकी के समस्त अभावों को दूर कर देता है । पाठक या दर्शक कथोपकथन के चमत्कार से पात्र के भावों के साथ साधारणीकरण स्थापित कर लेता है । यह कहना असंगत न होगा कि कथोपकथन ही एकांकी की आत्मा है, प्राण है ।"[1] कथोपकथन का सबसे बड़ा गुण है सोद्देश्यता, स्वाभाविकता और रोचकता । कथोपकथन पात्रानुसार और प्रसंगानुसार होना बहुत आवश्यक है । रोचकता के लिए

---

1. एकांकी कला -पृ. 20 - डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. त्रिलोकी नारायण दीक्षित

कथोपकथन संक्षिप्त और चुस्त होना भी आवश्यक है ।

देशकाल या वातावरण

एकांकी में सजीवता और स्वाभाविकता लाने के लिए देशकाल एक अनिवार्य तत्व है । इनकी सबसे बड़ी आवश्यकता ऐतिहासिक नाटक में है । इसलिए ऐतिहासिक नाटक में नाटककार को देशकाल के चित्रण में जागरूक रहना आवश्यक है । एकांकी में वर्णित देशकाल के अनुसार पात्रों के रहन सहन, वेश भूषा आदि बातों पर ध्यान रखना आवश्यक है ।

भाषा शैली

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है । एकांकी की उत्कृष्टता भाषा पर निर्भर है । एकांकी का सम्बन्ध दर्शक से है । इसलिए जनसाधारण की बोधगम्यता के लिए भाषा में सरलता, और प्रेषणीयता होना आवश्यक है । भाषा की दूसरी विशेषता यह है कि उसे पात्रानुकूल होना चाहिए ।

उद्देश्य या लक्ष्य

सभी नाटकों को कोई न कोई उद्देश्य होता है । इस उद्देश्य को एकांकीकार अपने पात्रों द्वारा अप्रत्यक्ष ढंग से प्रस्तुत करता है । वह जीवन की छोटी समझी जानेवाली घटनाओं में भी पूर्ण गहराई से प्रविष्ठ होकर उनमें व्यापक अर्थवत्ता भर देता है और इसप्रकार एकांकी

बृहत्तर संकेत झलक उठता है । इसके अतिरिक्त प्रत्येक एकांकी का एक सर्वमान्य उद्देश्य मनोरंजन करना है ।

रंगनिर्देश

एकांकी दृश्य काव्य है । इसलिए इसमें विस्तृत रंगनिर्देश देना आवश्यक है । रूप-सज्जा, रंग-सज्जा, दृश्य-बन्ध, प्रकाश योजना, ध्वनि-संकेत, मंच-सज्जा आदि की समुचित व्यवस्था करना ही रंग-संकेत का मुख्य उद्देश्य है । इसके द्वारा अभिनेता, निर्देशक और पाठक केलिए नाटक के उद्देश्य और उसकी रंगमंचीय आवश्यकताओं को समझना सरल हो जाता है । रंग संकेतों द्वारा कथावस्तु के उन तत्वों का चित्रण स्पष्ट कर दिया जाता है जो किसी अन्य नाटकीय प्रयत्न से संभव नहीं होता ।

एकांकी के प्रकार

एकांकियों का दो आधारों पर वर्गीकरण किया जा सकता है । 1. शिल्प के आधार पर 2. विषय के आधार पर ।

शिल्प के आधार पर हिन्दी एकांकी के प्रमुख छः प्रकार हैं ।

1. रंगमंचीय एकांकी
2. रेडियो एकांकी
3. मोनोलांग या स्वगत नाट्य

4. पद्य एकांकी
5. संगीत रूपक
6. फैंटसी

1. रंगमंचीय एकांकी

रंगमंचीय एकांकी मूलत: रंगमंच और दर्शक के लिए लिखे जाते हैं । इसलिए इसमें रंगमंच की सारी सीमायें होती है । रंगमंचीय एकांकी के लिए रंग सज्जा, पात्रों का वेशविधान आदि का विवरण देना आवश्यक है । अमानवीय पात्रों को रंगमंचीय एकांकी में कोई स्थान नहीं ।

उदा:- डॉ. रामकुमार वर्मा रचित चारूमित्रा, रजनी की रात, परीक्षा आदि ।

2. रेडियो एकांकी

रेडियो एकांकी तथा रंगमंचीय एकांकी में भिन्नता है । रेडियो एकांकी केवल श्रव्य होता है । इसलिए ध्वनि संकेतों का सहारा लेना पड़ता है । रेडियो एकांकी के लिए नीरसता घातक है । अस्वाभाविक दृश्यों को रेडियो द्वारा प्रस्तुत करने में कोई कठिनाई नहीं । पात्रों की वेशभूषा, रंग सज्जा, दृश्य परिवर्तन आदि रेडियो एकांकी के लिए आवश्यक नहीं ।

उदा:- विष्णुप्रभाकर रचित "शतरंज के खिलाडी", "समाज के स्तम्भ", ढोलामारू इत्यादि ।

3. मोनोलांग या स्वगत नाट्य

इसमें केवल एक ही पात्र होता है । इसे एकपात्री एकांकी भी कहते हैं । यह पात्र अपने जीवन के उलझनों एवं द्वन्द्वों को मार्मिकता के साथ व्यक्त करता है ।

उदा:- विष्णुप्रभाकर के "नहीं नहीं नहीं", सेठ गोविन्ददास के "शाप और वर", "षट् दर्शन", "सच्चा जीवन" आदि ।

4. पद्य एकांकी

इसमें पद्य की प्रधानता है । सारा कथोपकथन पद्य में है । जीवन की रागात्मक अभिव्यक्ति के लिए यह बहुत उपयुक्त होते हैं ।

उदा:- सुमित्रानन्दन पंत के "शुभ पुरुष", भगवतीचरण वर्मा कृत "त्रिपथगा" आदि ।

5. संगीत रूपक

इसमें गीतों की प्रधानता है । इसके द्वारा किसी काल्पनिक कथा अथवा किसी कवियों और संगीतज्ञों का जीवन प्रसंग प्रस्तुत करते हैं ।

उदा:- उदयशंकर भट्ट रचित "कालिदास", मेघदूत" तथा विक्रमोर्वशी ।

6. फैंटसी

फैंटसी मूलत: कल्पना पर आधारित है । इसके द्वारा अमानवीय पात्रों या अलौकिक घटनाओं को प्रस्तुत करते हैं । फैंटसी प्राय: रेडियो द्वारा प्रस्तुत करते हैं ।
उदा:- रामकुमार वर्मा के "बादल की मृत्यु ।

विषय के आधार पर एकांकी के प्रमुख सात प्रकार है ।

1. सामाजिक एकांकी
2. राजनीतिक एकांकी
3. ऐतिहासिक एकांकी
4. पौराणिक एकांकी
5. प्रगतिवादी एकांकी
6. मनोवैज्ञानिक एकांकी
7. हास्य एवं व्यंग्य प्रधान एकांकी

1. सामाजिक एकांकी

सामाजिक एकांकी मूलत: समाज और सामाजिक समस्याओं से सम्बन्धित है । इसमें अधिकांश मध्यवर्गीय जीवन से सम्बन्धित समस्यायें हैं । विवाह, प्रेम, गरीबी, बेकारी, अन्धविश्वास, छूआछूत, दहेज आदि कई समस्यायें इसके द्वारा प्रस्तुत करते हैं । इसका मुख्य उद्देश्य आधुनिक समाज की संकीर्ण, रूढिवादी और जर्जर मान्यताओं पर प्रहार करके उदार और स्वस्थ सामाजिक चेतना का विकास करना है ।

उदा:- जगदीशचन्द्र माथुर रचित मेरी बाँसुरी, रामकुमार वर्मा कृत "जीवन का प्रश्न" एक तोला अफीम की कीमत ।

2. राजनीतिक एकांकी

राजनीतिक एकांकियों में राजनीतिक जीवन से सम्बन्धित कई समस्यायें प्रस्तुत करते हैं । इसमें अधिकांश स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पूर्व भारतवासियों पर होनेवाले विदेशी अत्याचारों का चित्रण है । उदा:- विष्णुप्रभाकर का "बीमार, "हत्या के बाद" आदि ।

3. ऐतिहासिक एकांकी

ऐतिहासिक एकांकियों में ऐतिहासिक घटनाओं तथा इतिहास से सम्बन्धित महत् व्यक्तियों के चरित्र प्रस्तुत करते हैं । ऐतिहासिक एकांकीकार का मुख्य उद्देश्य भारत के गौरवमय अतीत का चित्र प्रस्तुत करना है । अधिकांश एकांकीकारों ने भारतीय इतिहास के मध्ययुग और मुगलकाल को एकांकी का विषय बनाया है ।

उदा:- सेठ गोविन्ददास रचित "शिवाजी का सच्चा स्वरूप", प्रायश्चित, भय का भूत, कृष्णकुमारी आदि ।

4. पौराणिक एकांकी

पौराणिक एकांकियों का विषय पुराण से संबन्धित है । पुराण से सम्बन्धित कई घटनाओं को इसमें चित्रित किया जाता है ।

हिन्दी में पौराणिक एकांकियों की संख्या कम है ।

उदा:- विष्णुप्रभाकर रचित "कंस-मर्दन", "जन्माष्टमी और शिवरात्रि" ।

5. प्रगतिवादी एकांकी

नवीन समाज व्यवस्था प्रस्तुत करके जन को जागरूक करना ही प्रगतिवादी एकांकीकार का मुख्य उद्देश्य है । यथार्थवादी दृष्टिकोण, सामाजिक आर्थिक समस्याओं का चित्रण, समाज की हीनताओं तथा शोषण का पर्दाफाश, लोक मंगल भावना आदि इस एकांकी की मुख्य विशेषतायें हैं ।

उदा:- उदयशंकर भट्ट कृत "स्त्री का हृदय" "नकली और असली" तथा विष की पुडिया आदि ।

6. मनोवैज्ञानिक एकांकी

मनोवैज्ञानिक एकांकी का विषय मनोविज्ञान एवं मनोविश्लेषण से सम्बन्धित है । बच्चों से लेकर स्त्री-पुरुषों तक का मनोविज्ञान इस एकांकी का विषय बन गया है ।

उदा:- प्रभाकर माचवे रचित "पागल खाने में" विष्णु प्रभाकर रचित "ममता का विष" ।

7. हास्य एवं व्यंग्य प्रधान एकांकी

इन एकांकियों में लेखक आधुनिक समाज में व्याप्त कई मिथ्याडंबरों एवं अन्धविश्वासों पर व्यंग्य करते हैं । सामाजिक

अन्धविश्वास, रूढि, आडम्बर, आधुनिक सभ्यता की कृत्रिमता, मानसिक असंगति, खोखले आदर्शवाद, अहं और लोभ आदि इस एकांकी का मुख्य विषय है ।

उदा:- विष्णु प्रभाकर रचित "कार्यक्रम", "कला का मूल्य", "दृष्टि की खोज " आदि ।

प्राचीन भारतीय एकांकी

आज हिन्दी साहित्य का जो रूप है उनका विकास संस्कृत साहित्य से ही हुआ । संस्कृत नाट्य साहित्य बहुत विस्तृत था । रूपकों को वस्तु, नेता और रस के आधार पर दस भेदों में विभाजित हैं । वे ये हैं - नाटक, प्रकरण, भाण, प्रहसन, डिम, व्यायोग, समवकार, वीथी, अंक और ईहामृग ।

उपरूपक के अठारह भेद हैं । वे ये हैं - वाटिका, त्रोटक, गोष्ठी, सट्टक, नाट्य रासक, प्रस्थान, उल्लाप्य, काव्य, प्रेंखण, रासक, संलापक, श्रीगदित, शिल्पक, दुर्मल्लिका, प्रकरणी, विलासिका, हल्लीश और भाणिका ।

रूपक के भेदों में भाण, प्रहसन, व्यायोग, वीथी, और अंक तथा उपरूपक के भेदों में गोष्ठी, नाट्य रासक, उल्लाप्य, काव्य, प्रेंखण, रासक, श्रीगदित, विलासिका और हल्लीश एकांकी है ।

1. भाण

भाण में केवल एक ही पात्र है । वह रंगमंच पर आकर आकाश की ओर देखता हुआ किसी कल्पित व्यक्ति से बातचीत करता है । स्वयं प्रश्न करता है, और स्वयं उत्तर देता है । इसप्रकार एक ही व्यक्ति दो व्यक्तियों का अभिनय करता है । इसे आकाशभाषित कहते हैं । भाण में इसलिए कल्पना की अधिक प्रधानता है ।

उदा:- वसन्ततिलक, कर्पूरचरित आदि ।

2. प्रहसन

प्रहसन में हास्य की प्रधानता है । इसमें अनेक पात्र होते हैं । आकाशभाषित के लिए इसमें पर्याप्त अवकाश है । आरभटी वृत्ति, विष्कम्भक तथा प्रवेशक को इसमें प्रधानता नहीं । लेकिन वीथी के तेरहों अंगों की अवस्थिति है । तीन प्रकार के प्रहसन हैं - शुद्ध, विकृत और संकर ।

उदा:- कन्दर्पकेलि, धूर्तचरित्र ।

3. व्यायोग

इसकी कथावस्तु पुराण या इतिहास पर आधारित है । इसमें पात्रों की संख्या अनेक है । लेकिन स्त्री पात्र नहीं ।

उदा:- मध्यम व्यायोग, दूत वाक्य, दूत घटोत्कच ।

4. वीथी

इसका नायक कवि कल्पित होता है । इसमें एक या दो पात्र होते हैं । आकाशभाषित के लिए इसमें पर्याप्त स्थान है । श्रृंगार रस की प्रधानता है । एक ही अंक में पूरे नाटक की कसावट होती है ।

उदा:- मालविका

5. अंक

इसका नायक साधारण मनुष्य है । इसमें करुण रस की प्रधानता है । स्त्रियों का विलाप अधिक रहती हैं । मुख, निर्वहण सन्धियों तथा हास्य के दसों अंगों को इसमें स्थान है । इसे उत्सृष्टिकांक भी कहते हैं ।

6. गोष्ठी

इसमें स्त्री पुरुषों की संख्या बहुत अधिक है । श्रृंगार रस की प्रधानता है । गर्भ और विमर्श सन्धियों को छोड़कर शेष सब सन्धियों को इसमें स्थान है ।

उदा:- रेवतमदनिका

7. उल्लाप्य

इसका विषय पौराणिक है । इसका नायक धीरोदात्त होता है । इसमें चार नायिकायें होती हैं । श्रृंगार, हास्य, क

आदि रस भी इसमें हैं । बीच बीच में गीतों का प्रयोग है ।

उदा:- देवीमहादेव

8. काव्य

इसमें हास्य रस की प्रधानता है । गीतों का प्रयोग है । नायक और नायिका दोनों उदात्त होते हैं । इसमें आरभटी वृत्ति नहीं होती । मुख, प्रतिमुख और निर्वहण सन्धियाँ हैं ।

9. प्रेंखण

इसका नायक हीन पुरुष होता है । इसमें सूत्रधार, विष्कम्भक, और प्रवेशक नहीं है । गर्भ और विमर्श सन्धियाँ हैं ।

उदा:- बालिवध

10. रासक

इसमें पाँच पात्र होते हैं । सूत्रधार नहीं । इसकी नायिका प्रसिद्ध होती है तथा नायक मूर्ख होता है । मुख और निर्वहण सन्धियाँ है । कौशिकी और भारती वृत्तियाँ भी हैं ।

उदा:- मेनकाहित रासक

11. श्रीगदित

इसकी कथा प्रसिद्ध होती है । नायक धीरोदात्त है ।

गर्भ और विमर्श सन्धियाँ नहीं । भारती वृत्ति का आधिक्य है । गेयता और संगीत की प्रधानता है ।

उदा:- क्रीडा रसातल

12. विलासिका

इसका नायक हीन गुणवाला है । कथानक संक्षिप्त रहता है । इसमें शृंगार रस की प्रधानता है । लास्य के दस अंगों का निर्वाह किया जाता है ।

13. हल्लीश

इसमें आठ या दस स्त्रियाँ होती हैं । एक पुरुष होता है । कैशिकी वृत्ति तथा मुख निर्वहण सन्धियाँ होती हैं । गान, ताल, लय आदि का प्रयोग है ।

उदा:- केलिरैवक हल्लीश

14. भाणिका

इसका नायक मन्दमति और नायिका उदात्त एवं प्रगल्भा होती है । मुख और निर्वहण सन्धियाँ होती है । भारती और कैशिकी वृत्तियाँ होती हैं ।

उदा:- कामदत्ता

15. नाट्य रासक

इसका नायक उदात्त होता है । संगीत और नृत्य की इसमें प्रधानता है । मुख तथा निर्वहण सन्धियों तथा हास्य के दस अंगों का प्रयोग भी इसमें है ।

उदा:- विलासिका

हिन्दी एकांकी का उद्भव और विकास

प्राचीन नाट्य साहित्य बहुत विस्तृत था । पहली शताब्दी से लगभग नवीं शताब्दी तक संस्कृत साहित्य में शूद्रक, हर्ष, विशाखदत्त, भास, भट्टनारायण, कालिदास और भवभूति आदि नाटककारों ने अनेक नाट्य रचनायें कीं । लेकिन मुस्लिम काल में नाट्य साहित्य को कोई प्रोत्साहन नहीं मिला । इसलिए इसकी गति मन्द हो गयी । इस अवधि में लोग रासलीला, विदेशिया नाटक, नौटंकी, स्वांग, नकल, तमाशा, यक्षगान, कूचिपुडि आदि जन नाटकों से मनोरंजन करते रहे । बाद में ग्यारहवीं शताब्दी से नाट्य साहित्य का पुनरुत्थान हुआ ।

हिन्दी एकांकी साहित्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में मतभेद है । डॉ. रामचरण महेन्द्र का मत यह है "एकांकी साहित्य रूप बीसवीं शताब्दी की देन है, जिसका प्रारंभ पाश्चात्य देशों से हुआ है ।"[1]

---

1. प्रतिनिधि एकांकीकार पृ. 9 - डॉ. रामचरण महेन्द्र

डॉ. दशरथ ओझा हिन्दी एकांकी की उत्पत्ति जैनकुल रासक और वैष्णव रासकों से मानते हैं । उनकी राय में "हिन्दी एकांकी की प्रथम अवस्था जैन लघु रास में हैं । इसकी दूसरी अवस्था वैष्णव रास में है ।"[1]

डॉ. नगेन्द्र के मत में "एकांकी वस्तुतः पाश्चात्य साहित्य की देन है ।"[2] देवेन्द्रनाथ शर्मा तथा विश्वनाथ तिवारी की राय में "हिन्दी एकांकी संस्कृत की देन है । हिन्दी एकांकी के विकास में संस्कृत के एक अंकवाले नाटकों का योगदान स्वीकार किया जा सकता है ।"[3] डॉ. एस. पी. खन्नी का मत है "कुछ आलोचक एकांकी का उद्गम संस्कृत साहित्य से मानते हैं, परन्तु एकांकी लेखन जब बीसवीं शताब्दी में शुरू हुआ तो स्पष्ट है कि उस पर अंग्रेजी का प्रभाव है न कि संस्कृत का ।"[4]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर इस निष्कर्ष में पहुँचते है कि एकांकी के तत्वात्मक उद्भव में जन नाटक, वेदात्मक संवाद और संस्कृत नाट्य साहित्य के आदर्श तथा प्रेरणा पाकर भारतेन्दु युगीन एकांकीकारों ने एकांकी लेखन प्रारंभ किया । इसके साथ ही पाश्चात्य एकांकीकारों का प्रभाव भी हिन्दी एकांकी साहित्य को मिला । डॉ. सूर्यकान्त, डॉ. रामचरण महेन्द्र आदि कई विद्वान हिन्दी एकांकी

---

1. हिन्दी नाटक उद्भव और विकास - पृ. 376 - डॉ. दशरथ ओझा
2. आधुनिक हिन्दी नाटक - पृ. 126 - डॉ. नगेन्द्र
3. नवएकांकी - पृ. 18 - देवेन्द्रनाथ शर्मा तथा विश्वनाथ तिवारी
4. नाटक की परख - पृ. 262 - डॉ. एस. पी. खन्नी

का आरंभ भारतेन्दु युग से मानते हैं । अध्ययन की सुविधा के लिए हिन्दी एकांकी के विकास को चार उत्थानों में विभाजित किया जा सकता है ।

प्रथम उत्थान - 1870 ई. से 1900 ई. तक
द्वितीय उत्थान - 1901 ई. से 1936 ई. तक
तृतीय उत्थान - 1937 ई. से 1947 ई. तक
चतुर्थ उत्थान - 1948 ई. से 1975 ई. तक

प्रथम उत्थान :- भारतेन्दु और उनका युग

इस उत्थान की अधिकांश रचनाऐं संस्कृत नाट्य साहित्य के रूपकों और उपरूपकों के आधार पर ही है । इसके साथ ही उन्होंने लोक नाट्य अंग्रेज़ी तथा बंगला एवं पारसी नाटकों के प्रभाव को भी स्वीकार किया । अपने नाटकों के माध्यम से देश दुर्दशा का चित्र उपस्थित करना उनका उद्देश्य था । उस समय के विषय मूलत: चार भागों में विभक्त किये जा सकते हैं :-

(1) राष्ट्रीय ऐतिहासिक (2) सामाजिक यथार्थवादी
(3) पौराणिक आदर्शवाद (4) हास्य व्यंग्य प्रहसन के अनुकूल ।

इनमें ऐतिहासिक और पौराणिक नाटकों की संख्या बहुत कम है । इस युग की और एक विशेषता यह है कि इस युग में रचित लघुनाटकों को एकांकी न कहकर रूपक कहा गया है ।

इस युग के प्रमुख रचनाकार हैं - बालकृष्ण भट्ट, भारतेन्दु, राधाकृष्ण दास, राधाचरण गोस्वामी, अम्बिकादत्त व्यास,

पं. प्रतापनारायण मिश्र, पं. बदरीनारायण चौधरी "प्रेमघन", किशोरीलाल गोस्वामी, लाल काशीनाथ खत्री आदि । इनमें प्रमुख स्थान भारतेन्दु को ही है । भारतेन्दु ने अनेक नाटकों की रचना की । इसके साथ ही उन्होंने संस्कृत, बंगला और अंग्रेज़ी के अनेक नाटकों का अनुवाद भी किए । ये रचनाऐं नाटक, नाटिका, रूपक, प्रहसन, व्यायोग, भाण, सट्टक, औपरा, गीतिरूपक आदि कोटियों में आती है । पाखंड विडंबन, जैसा काम वैसा परिणाम, माधुरी, नवमल्लिका आदि उनकी मौलिक रचनाऐं हैं । इन नाटकों का मुख्य उद्देश्य देश दुर्दशा का चित्रण, लोगों में राष्ट्रीय चेतना जगाना, तथा जनता के सामने उच्च आदर्श प्रस्तुत करना था । भारतेन्दु जी ने संस्कृत नाट्य साहित्य के कई नियमों को स्वीकार किया । लेकिन पंच संधियों का उन्होंने बहिष्कार किया । अंक और दृश्य के सम्बन्ध में उन्होंने किसी निश्चित नियम का पालन नहीं किया । उनके सभी नाटकों में पद्यों और गीतों का, प्रचुरता से प्रयोग है ।

पंडित बालकृष्ण भट्ट

भारतेन्दु से प्रेरणा पाकर एकांकी लिखनेवालों में बालकृष्ण भट्ट का नाम महत्वपूर्ण है । उन्होंने कई वर्षों तक "हिन्दी प्रतीप" का संपादन किया । "हिन्दुस्तान और इंगलिस्तान के दो सयाने" उनके द्वारा रचित रूपक है । "जैसा काम वैसा परिणाम" और "शिक्षादान" ~~से~~ उनके दोनों प्रहसन है ।

राधाचरण गोस्वामी

राधाचरण गोस्वामी यथार्थवादी एकांकीकार थे । उन्होंने अपने युग की समस्याओं को सजीव और व्यंग्यपूर्ण रूप में चित्रित किया । उन्होंने पौराणिक, ऐतिहासिक और हास्य व्यंग्य प्रधान एकांकियों की रचना की । "सती चन्द्रावली", "अमरसिंह राठौर", "श्रीदामा", "बूढे मुंह मुहासे", "तन मन धन गोसाई के अर्पन", और भंग तरंग आदि उनके एकांकी है ।

अम्बिकादत्त व्यास

अम्बिकादत्त व्यास प्रथम उत्थान के नाटककारों में प्रमुख स्थान रखते हैं । इन्होंने अधोलिखित एकांकियों की रचना की । जैसे - गो संकट नाटक, वरीयुग और घी, ललिता नाटिका, मन की उमंग, मरहठ नाटक, देवपुरुष दृश्य, भारत सौभाग्य नाटक और अखबारी प्रहसन आदि । इनके एकांकी पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक आदि भागों में विभाजित किये जा सकते हैं ।

प्रतापनारायण मिश्र

प्रतापनारायण मिश्र भारतेन्दु युगीन एकांकीकारों में उत्कृष्ट है । प्रेम पुष्पावली, भारत दुर्दशा रूपक, मन की लहर, श्रृंगार विलास, जुआरी खुआरी, कलि कौतुक इत्यादि उनके एकांकी है ।

राधाकृष्णदास

इनके प्रमुख एकांकी नाटक है "दुःखिनी बाला" और "धर्मालापी" । "दुःखनी बाला" का विषय सामाजिक है । इसमें छोटे छोटे छः दृश्य है । इसके संवाद बहुत लम्बा है । "धर्मालापी" की रचना सं. 1942 में हुई । अभिनेयता की दृष्टि से इसका महत्व कम है । इसके अतिरिक्त उन्होंने दो नाटकों "महारानी पद्मावती" तथा "महाराणा प्रतापसिंह" की रचना की । भारतेन्दु के अपूर्ण नाटक "सतीप्रताप" को उन्होंने पूरा किया ।

बदरी नारायण चौधरी "प्रेमघन"

उसने दो एकांकियों की रचना की । उनमें पहला है "प्रयाग रामगमन" और दूसरा है "संयोगिता स्वयंवर" । "प्रयाग रामगमन" की कथावस्तु राम के प्रयाग आगमन पर आधारित है । इसलिए यह एक धार्मिक आदर्शवादी एकांकी है । इसकी एक विशेषता यह है कि पूरा एकांकी एक ही दृश्य में समाप्त होता है । "संयोगिता स्वयंवर" की कथावस्तु इतिहास प्रसिद्ध पृथ्वीराज पर आधारित है । इसमें गद्य और पद्य दोनों का प्रयोग है ।

द्वितीय उत्थान : द्विवेदी युग (1901 ई. से 1936 ई. तक)

इस युग में नाट्य साहित्य का विकास कुछ मन्द सा हो गया । इसके कई कारण माने जाते हैं । उपन्यासों की ओर

जन रुचि बड़ी शीघ्रता से बढ रही थी । इसलिए नाटकों के विकास में बाधा बनी पड़ी । दूसरा कारण यह है कि हिन्दी नाटकों के लिए रंगमंच नहीं था । इसलिए जो भी नाटक लिखे जाते थे अभिनयशीलता का गुण उनमें तनिक भी न था । इस युग के नाटककार द्विजेन्द्रलाल राय एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रचनाओं से अधिक प्रभावित हुए । द्विजेन्द्रलाल राय की यथार्थवादी मनोवैज्ञानिक पद्धति का इन लेखकों ने अनुकरण किया । आर्य समाजी विचारधारा का प्रभाव, जनता में स्वदेश, स्वधर्म, संस्कृति, समाज सुधार और नैतिकता के प्रति नवीन आकर्षण आदि इस युग की विशेषतायें है । इस युग की और एक विशेषता यह है कि सन् 1928 से रूपकों तथा छोटे नाटकों के लिए एकांकी शब्द का प्रयोग करने लगे । यह युग मुख्यत: भाषा परिष्कार का युग था ।

इस युग के प्रमुख एकांकिकारों में पं. राधेश्याम "कथावाचक", जी.पी.श्रीवास्तव, बेचन शर्मा "उग्र", बदरीनाथ भट्ट, रामनरेश त्रिपाठी, प्रेमचन्द, सुदर्शन और जयशंकर प्रसाद के नाम आते हैं ।

पं. राधेश्याम कथावाचक

पं. राधेश्याम जी ने एकांकी नाटकों के अतिरिक्त बड़े नाटकों की रचना अधिक की । शुद्ध और साहित्यिक भाषा का प्रयोग उनके एकांकियों की विशेषता है । इनके सभी एकांकियों में दोहों और पद्यात्मक संवादों का प्रयोग है । अंक, दृश्यों के विभाजन, पात्रों के प्रवेश आदि बातों में उन्होंने विशेष ध्यान दिया है ।

जी. पी. श्रीवास्तव

मोलियर के नाटकों के अनुवाद से उन्होंने नाट्य लेखन प्रारंभ किया । इसके अतिरिक्त उन्होंने अनेक मौलिक नाटकों तथा एकांकियों की रचना की । नाटकों में उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, रूढ़ियों आदि पर व्यंग्य किया है । इसके अतिरिक्त उन्होंने कुछ नाटक मनोरंजन की दृष्टि में लिखा । उनके लघु प्रहसन है - दुमदार आदमी, पत्र-पत्रिका सम्मेलन, न घर का न घाट का, अच्छा उर्फ अकल की मरम्मत, प्रकाशक पेटूमल गर्भानन्द, संपादक बंटा धारीजी, मिट्टी का शेर, कुर्सी मैन, गड़बड़झाला आदि ।

बेचनशर्मा "उग्र"

बेचनशर्मा एक क्रान्तिकारी लेखक थे । उन्होंने अंग्रेज़ी नौकरशाही और समाज से लड़ने केलिए उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, प्रहसन आदि लिखे । "अफ़जल वध" तथा "क्रांति के पंजे" उनके राजनीतिक एकांकी है । इसके अतिरिक्त उन्होंने चार बेचारे, बेचारा संपादक, बेचारा अध्यापक, बेचारा सुधारक, बेचारा प्रचारक आदि एकांकियों की रचना की ।

बदरीनाथ भट्ट

उन्होंने अनेक हास्य प्रधान लघुनाटकों की रचना की । पुराने हकीम साहब का नया नौकर, आयुर्वेद, कसेरु, वैध बैंगनदासजी कविराज,

ठाकुर दानीसिंह साहब, हिन्दी की खींचातानी, रेगड समाचार के एडीटर की धूल दच्छना, धोधा-वसन्त विधार्थी ये सभी उनके लघुनाटक हैं । उनके एकांकी नाटक अधिकांशतः मनोरंजन पर आधारित है ।

रामनरेश त्रिपाठी

उन्होंने नाटक तथा एकांकी नाटकों की रचना की । उनके एकांकी अधिकांशतः समसामयिक विषय पर आधारित है । जयन्त, प्रेमलोक, वफाती चाचा और पैसा परमेश्वर उनके नाटक है । बा और बापू, समानाधिकार, स्त्रियों की कौंसिल, कुणाल आदि उनके एकांकी नाटक हैं । समानाधिकार तथा स्त्रियों की कौंसिल समस्या एकांकी है ।

प्रेमचन्द

प्रेमचन्द जी को एकांकी के क्षेत्र में उतना महत्वपूर्ण स्थान नहीं है जितना उपन्यास और कहानी के क्षेत्र में है । उनके दो एकांकी उपलब्ध है - "प्रेम की वेदी" और "सृष्टि का आरंभ" । इसमें एक मौलिक और अनूदित है । "प्रेम की वेदी" में समाज का यथार्थ चित्रण देख सकता है ।

जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद ने अपने प्रयोगकाल में तीन एकांकियों की रचना की । "सज्जन", "कल्याणी परिणय" और "प्रायश्चित" ।

"सज्जन" का कथानक पौराणिक है । "कल्याणी परिणय" ऐतिहासिक एकांकी है । अपने विकासकाल में उन्होंने जिस एकांकी की रचना की उसका नाम है "एक घूँट" । यह एक विचार प्रधान एकांकी है । इसकी रचना सन् 1929 में हुई । इसे आधुनिक एकांकियों की नयी शैली का प्रथम एकांकी माना जाय या नहीं इस सम्बन्ध में वादविवाद है । "डॉ. रामचरण महेन्द्र"[1] इसे नयी शैली का प्रथम एकांकी मानता है । लेकिन "डॉ. रामकुमार वर्मा"[2], "श्री उपेन्द्रनाथ अश्क"[3] आदि इसे नहीं मानता । उनकी राय में "एक घूँट" एक एकांकी रूपक है । एकांकी का प्रारंभ गीत से हुआ है, अन्त में भी गीत है, बीच में दो गीत आये है । भाषा शैली अलंकृत और काव्यात्मक है । संलाप भी बडे बडे है । स्वगत कथन का प्रयोग भी है । इन सभी कारणों से एकांकी में शिथिलता आयी है । इसका मुख्य विषय विवाह एवं स्वच्छन्द प्रेम का वर्णन है ।

सुदर्शन

प्रसाद युग के एक प्रमुख एकांकीकार है "सुदर्शन जी" । नवीनता का आग्रह उनके एकांकियों की एक विशेषता है । उनके प्रधान एकांकी है -"जब आखें खुलती है", आनरेरी मजिस्ट्रेट, राजपूत की हार, और छाया । उनकी प्रारंभिक रचना है "जब आखें खुलती हैं । इसमें स्वाधीनता-संग्राम की पृष्ठभूमि पर वेश्या-उद्धार की समस्या चित्रित की

---

1. प्रतिनिधि एकांकीकार - डॉ. रामचरण महेन्द्र - पृ. 10
2. एकांकी कला - डॉ. रामकुमार वर्मा - पृ. 95
3. प्रतिनिधि एकांकी - उपेन्द्रनाथ अश्क - पृ. 9

गयी है । "आनरेरी मजिस्ट्रेट" एक प्रहसन है । उनकी सबसे सफल कृति है "छाया" । इसकी कथावस्तु चन्द्रगुप्त मौर्य के जीवन प्रसंग पर आधारित है ।

तृतीय उत्थान : प्रसादोत्तर युग (1937 ई. से 1947 ई. तक

इस कालखण्ड के अधिकांश लेखकों ने संस्कृत के रूपकों और उपरूपकों को छोडकर पाश्चात्य प्रभाव से प्रेरित होकर एकांकी लिखना आरंभ किया । सामाजिक जीवन जटिल होने के कारण एकांकी के क्षेत्र में प्रतीकवाद, स्वच्छन्दतावाद, बुद्धिवाद, आदर्शवाद, उपयोगितावाद आदि का आविर्भाव हुआ । इस युग की एक विशेषता यह है कि एकांकी लेखकों ने एकांकी के प्रमुख तत्वों पर विशेष ध्यान दिया । संघर्ष को एक अनिवार्य तत्व के रूप में उन्होंने स्वीकार किया । लेकिन संकलनत्रय पर उन्होंने ध्यान न दिया । रंग सज्जा, प्रकाश योजना, रंग परिधान, ध्वनि व्यवस्था आदि को भी उन्होंने महत्व दिया । रंगमंचीय एकांकी और रेडियो एकांकी दोनों तरह की रचनाऐं इस युग में हुई थी ।

इस युग के प्रमुख एकांकीकार है - डॉ. रामकुमार वर्मा, भुवनेश्वर प्रसाद, उदयशंकर भट्ट, भगवतीचरण वर्मा, सेठ गोविन्ददास, उपेन्द्रनाथ अश्क, हरिकृष्ण प्रेमी आदि ।

उपेन्द्रनाथ अश्क

सन् 1936 में उन्होंने एकांकी लेखन प्रारंभ किया । उनके एकांकी संग्रह हैं - देवताओं की छाया में, चरवाहे, पक्कागाना,

पर्दा उठाओ : पर्दा गिराओ, अंधी गली और साहब को जुकाम है । इन एकांकियों का मुख्य विषय सामाजिक एवं पारिवारिक समस्या है । समाज की रूढ़ियों, विकृतियों और दुर्बलताओं को उन्होंने व्यंग्यपूर्ण शैली में अंकित किया है ।

उदयशंकर भट्ट

इनका रचनाकाल सन् 1938 से प्रारंभ होता है । भट्टजी का प्रथम एकांकी संग्रह अभिनव एकांकी नाटक है । इनके एकांकी संग्रहों का नाम है - अभिनव एकांकी, स्त्री का हृदय, तीन नाटक, समस्या का अन्त, धूमशिखा, अन्धकार और प्रकाश, आदिमयुग, पर्दे के पीछे और आज का आदमी ।

लक्ष्मीनारायण मिश्र

उनके नाट्य साहित्य में विवेक, तर्क और मनोवैज्ञानिक गुत्थियों का सुलझा हुआ रूप देख सकता है । इनके एकांकियों का नाम है - अशोक वन, प्रलय के पंख पर, एक दिन कावेरी में कमल आदि । इनमें पौराणिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक और सामाजिक सभी प्रकार की समस्याओं को बुद्धिवादी मनोवैज्ञानिक विवेचन का विषय बनाया गया है ।

सेठ गोविन्ददास

सेठ गोविन्ददास आधुनिक हिन्दी एकांकीकारों में प्रमुख है । इन पर शॉ, गल्सवर्दी तथा ओनील आदि पाश्चात्य नाटककारों का प्रभाव दिखाई देता है । इनके प्रमुख एकांकी संग्रह है सप्तरश्मि, एकादशी, पंचभूत आदि ।

भुवनेश्वर प्रसाद

पाश्चात्य प्रभाव से प्रेरित होकर एकांकी लिखनेवालों में भुवनेश्वर प्रसाद का नाम महत्वपूर्ण है । उनका पहला एकांकी संग्रह है - "कारवाँ" । सन् 1935 में इसका प्रकाशन हुआ । इनके प्रमुख नाटक है - स्ट्राइक, ऊसर और आज़ादी की नींद । इनके सभी नाटक समस्या प्रधान है । ये समस्यायें मुख्यत: प्रेम, विवाह और यौन संबन्धी है । उनके एकांकियों की विशेषता बौद्धिकता, समस्या के प्रति जागरूकता, सांकेतिकता एवं व्यंग्य वक्रोक्ति है । उनके एकांकियों में प्रचुरता से अलंकृत शैली दिखाई पडती है ।

जगदीशचन्द्र माथुर

बाल्यावस्था से ही उन्होंने एकांकी और प्रहसन लिखना प्रारंभ किया । उनके प्रमुख एकांकी संग्रह है -"भोर का तारा", और "ओ मेरे सपने" । "भोर के तारे" में संकलित एकांकी है - भोर का तारा, रीढ की हड्डी, कलिंग विजय, मकडी का जाला और खंडहर । उनके अधिकांश एकांकी सामाजिक समस्याओं से सम्बन्धित है । खण्डहर, मकडी का जाला, कबूतरखाना आदि एकांकियों में आधुनिक जीवन का स्पष्ट चित्रण है ।

धर्मवीर भारती

कवि और उपन्यासकार के रूप में ख्याति प्राप्त

डॉ. धर्मवीर भारती ने कम एकांकी नाटकों की रचना की है । नदी प्यासी थी, नीली झील, आवाज़ का नीलाम और संगमरमर पर एक रात उनके सफल एकांकी है । उनके कुछ एकांकी प्रतीकात्मक है । "संगमरमर पर एक रात" उनकी एक ऐतिहासिक रचना है । उनके अधिकांश एकांकी रेडियो द्वारा प्रसारित हो चुके हैं ।

भगवतीचरण वर्मा

एकांकी के क्षेत्र में भगवतीचरण वर्मा का नाम उतना विख्यात नहीं जितना उपन्यास के क्षेत्र में । लेकिन उसने दो तीन महत्वपूर्ण एकांकियों की रचना भी की है । "दुनिया का सबसे बड़ा आदमी" तथा "दो कलाकार" इस कोटि में आते हैं । चरित्र प्रधान एकांकी है "दो कलाकार" । इसमें व्यंग्य तथा हास्य का प्रयोग प्रचुरता से मिलते हैं ।

हरिकृष्ण प्रेमी

नाटक के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त एक कलाकार है - हरिकृष्ण प्रेमी । उन्होंने कई एकांकियों की रचना की है । उनके प्रमुख एकांकी है - गृह मन्दिर, बादलों के पार, मातृ मन्दिर, घर या होटल, रूपशिखा, मातृ भूमि का मान आदि । इनमें रूपशिखा, मातृ भूमि का मान आदि ऐतिहासिक एकांकी है । मातृ मन्दिर सांप्रदायिक ढंग की पृष्ठभूमि पर लिखा गया एकांकी है ।

चतुर्थ उत्थान (1948 ई. से 1975 ई. तक)

इस उत्थान के अधिकांश एकांकीकारों में पाश्चात्य शिल्पकला का प्रभाव है । नवीन शिल्प के माध्यम से उन्होंने स्ट्रीट प्ले, ओपन एयर प्ले, एकपात्री एकांकी और एकांकीमाला लिखना प्रारंभ किया । मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकतावाद एवं फ्रायड के मनोविश्लेषण वाद के प्रभाव इन एकांकीकारों में हैं । इस उत्थान के प्रमुख एकांकीकार हैं - विष्णुप्रभाकर, प्रभाकर माचवे, लक्ष्मीनारायण लाल, कर्तारसिंह दुग्गल, मोहन राकेश, आदि ।

विष्णु प्रभाकर

रेडियो नाटककारों में विष्णु प्रभाकर का नाम विख्यात है । प्रारंभ से ही वे एक प्रयोगशील रेडियो नाटककार रहे है । बाद में वे रंगमंच और रेडियो के लिए एकांकी लिखने लगे । उनके प्रमुख एकांकी है - मीना कहाँ है ?, क्या वह दोषी था ?, दो किनारे, युगसन्धि, सीमारेखा, प्रकाश और परछाई, समरेखा-विषमरेखा आदि । इसके अतिरिक्त उन्होंने रेडियो - मोनोलांग, रेडियो-रूपक, रेडियो-रूपान्तर आदि सब प्रकार की रचनाऐं की । वे एक मानवतावादी कलाकार है । उन्होंने अपनी रचनाओं में मनुष्य के ऊपर का कृत्रिम आवरण हटाकर उसके वास्तविक रूप दिखाने का प्रयत्न किया ।

कर्तारसिंह दुग्गल

रेडियो एकांकीकारों में कर्तारसिंह दुग्गल का नाम

आता है । उन्होंने हिन्दी और पंजाबी में रेडियो नाटक लिखे । इनके प्रधान नाटक है - कहानी कैसे बनी ? दो मर्द एक माँ, अल्ला मेघ दे, अनार के दो पत्ते, जूठे टुकडे, दिया बुझ गया आदि । इनके एकांकी अधिकांश मनोवैज्ञानिक है । "अल्ला मेघ दे" और "अनार के दो पत्ते" पंजाबी लोकगीतों पर आधारित है । "जूठे पत्ते" में निर्धनता का चित्रण है । "दिया बुझ गया" विदेशियों द्वारा आक्रान्त काश्मीर की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है । इनके सभी नाटकों की शैली काव्यात्मक और अलंकृत है ।

मोहन राकेश

मोहन राकेश का नाम प्रयोगशील एवं रंगमंचीय एकांकी लिखनेवाले एकांकीकारों में प्रमुख है । इन्होंने हिन्दी एकांकी-शिल्प को नया मोड दिया । उनके अधिकांश एकांकी सामाजिक एवं प्रायोगिक है । इनके एकांकी हैं - अंडे के छिलके, सिपाही की माँ, प्यालियाँ टूटती है, बहुत बडा सवाल, शायद, हे छत्तरियाँ आदि । इनमें "अंडे के छिलके" सन् 1973 में प्रकाशित हुआ । इसमें चार एकांकी, दो बीज नाटक, और एक पार्श्व-नाटक संगृहीत है । "सिपाही की माँ" एकांकी की कथावस्तु दो सिपाहियों की प्रतिशोध भावना पर आधारित है । "शायद और हं" राकेश के बीज नाटक है ।

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल

रंगमंचीय एकांकीकारों में लक्ष्मीनारायण का नाम प्रमुख है । इनके प्रमुख चार एकांकी संग्रह है - ताजमहल के आंसु,

पर्वत के पीछे, नाटक बहुरंगी और नाटक बहुरूपी । उन्होंने अधिकांश ऐतिहासिक एकांकी ही लिखे है । इन ऐतिहासिक एकांकियों में भारतीय संस्कृति की ओर विशेष रुचि दिखाई पड़ती है । दूसरी विशेषता उनके एकांकी समसामयिक यथार्थ के अधिक निकट है । उन्होंने कुछ सामाजिक और पौराणिक एकांकी भी लिखे हैं । मम्मी ठकुराइन, औलादा का बेटा, दो मन चन्दनी, शाकाहारी , शरणागत आदि उनकी प्रमुख रचनाऐं हैं ।

कणादऋषि भटनागर

कणादऋषि भटनागर जी ने अनेक रेडियो नाटकों की रचना की । इनके प्रमुख नाटक हैं - "सफर के साथी", "बोनस", "ऊन की लच्छी", "सबूत", "लाटरी" आदि । "सफर के साथी" बड़े नगरों में होनेवाली अतिथि सत्कार की समस्या पर आधारित है । "सपूत" पति-पत्नी के बीच हुई गलतफहमी पर आधारित है । इनके सभी नाटक रोचक और आकर्षक है ।

भारत भूषण अग्रवाल

भारत भूषण अग्रवाल रेडियो नाटककार है । इनके मुख्य नाटक हैं - महाभारत की सांझ, अजन्ता की गूँज और खाई बढ़ती गयी, युग युग या पाँच मिनट, परछाई, दृष्टिदोष, गीत की खोज, इन्ट्रोडक्शन, नाइट, हाँ ना और हाँ मगर ना आदि ।

विनोद रस्तोगी

विषय की दृष्टि से उसने ऐतिहासिक, पौराणिक और सामाजिक एकांकी लिखे हैं । इनके प्रमुख एकांकी है "पुरुष का पाप", "पत्नी परित्याग", "आज मेरा विवाह है", "जावली विजय", "सोना और मिट्टी" आदि । शिल्प के संबन्ध में वे बहुत सजग है । उनके अधिकांश एकांकी एक दृश्यवाले हैं और इसमें संकलनत्रय का प्रयोग भी है ।

सत्येन्द्र शरत्

पाश्चात्य नाट्य साहित्य से प्रेरणा पाकर एकांकी लिखनेवालों में सत्येन्द्र शरत् का प्रमुख स्थान है । उनके महत्वपूर्ण एकांकी है "करेंसी नोट", "एम्फोडेल", "शोहदा", "प्रतिशोध" आदि । उनके एकांकी सम्बन्धी एक विशेषता यह है कि सभी एकांकी एक दृश्यवाले हैं । एकांकी में कहीं भी अनावश्यक विस्तार नहीं । कथानक में कुतूहल अन्त तक बना रहता है । पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग है ।

जयनाथ नलिन

कवि, कहानीकार, निबन्धकार, आलोचक, एकांकीकार आदि सभी रूपों में उन्हें ख्याति मिली है । एकांकी के क्षेत्र में उनके अधिकांश एकांकी हास्य व्यंग्यपरक है । उनके प्रमुख एकांकी है - सच्चे नेता, लस्सी का गलास, नवाब साहब का इन्साफ, देश की मिट्टी आदि । उनके अधिकांश एकांकी दृश्यात्मक है । लगभाग सभी एकांकियों में संकलनत्रय का प्रयोग है ।

प्रथम उत्थान के अधिकांश एकांकीकार संस्कृत नाट्य साहित्य के रूपकों और उपरूपकों के आधार पर नाट्य रचना करते थे । लघुनाटक या एकांकी के लिए ये लेखक नाटिका रूपक या नाटक शब्दों का प्रयोग करते थे । इस काल में अंक और दृश्य के सम्बन्ध में कोई मान्य नियम न था । कभी कभी अंक के स्थान पर दृश्य और दृश्य के स्थान पर अंक का प्रयोग करते थे । संस्कृत के रूपकों की भाँति इसमें मंगलाचरण नटी-सूत्रधार का वार्तालाप, विदूषक गायन, भरत वाक्य आदि का प्रयोग मिलते है । भारत की दुरवस्था, भारतियों की रूढिवादिता, आदि को चित्रित करना इन एकांकीकारों का मुख्य उद्देश्य रहा है । द्वितीय उत्थान में मौलिक नाटकों की रचना बहुत कम हुई । लेकिन अनुवादों की भरमार अधिक रही । यह युग मुख्यत: भाषा परिष्कार का युग था । प्रसादोत्तर युग के अधिकांश एकांकीकारों ने पाश्चात्य प्रभाव से प्रेरित होकर एकांकी लिखना प्रारंभ किया । इबसन और शॉ के प्रभाव के कारण बौद्धिकता के साथ समस्या प्रधान एकांकी नाटकों की रचना भी इस काल में हुई । इन एकांकीकारों का ध्यान मुख्यत: मनुष्य की वैयक्तिकता की ओर गया, उन्होंने मानव मन की गहराइयों में उतरकर मनुष्य की चारित्रिक विशेषताओं को चित्रित करने का प्रयास किया । एकांकी के प्रमुख तत्वों संघर्ष, कौतूहल, नाटकीय चमत्कार, चरमसीमा आदि पर उन्होंने ध्यान दिया । कुछ एकांकीकारों ने संकलनत्रय सिद्धांत को अनिवार्य रूप से स्वीकार किया । रेडियो एकांकी का आविष्कार भी इस युग की एक विशेषता है ।

दूसरा अध्याय

डॉ. रामकुमार वर्मा : व्यक्तित्व और कृतित्व

पारिवारिक परिवेश

श्री रामकुमार वर्मा का जन्म पन्द्रह नवंबर सन् उन्नीस सौ पाँच को सागर जिले (मध्य प्रदेश) में एक संस्कार संपन्न परिवार में हुआ था । इनके पिता श्री लक्ष्मीप्रसाद वर्मा डिप्टी कलेक्टर थे । माता श्रीमती राजरानी देवी एक प्रसिद्ध कवयित्री और संगीतज्ञ थी । वे वियोगिनी उपनाम से कवितायें रचा करती थीं । बड़े भाई साहब श्री रघुवीर प्रसाद वर्मा वृजभाषा के एक प्रौढ़ कवि थे । डॉ. वर्मा के पितामह श्री शोभाराम अनन्य राम भक्त थे । ज्योतिष, आयुर्वेद आदि पर उनका असाधारण अधिकार था । घर के सभी लोग राम पर विश्वास करते थे । घर में सभी दिन पूजा अर्चना चलती रहती थी । इस प्रकार परिवार का साँस्कृतिक और धार्मिक धरातल रामकुमार वर्मा को साहित्य सृजन के लिए अदम्य प्रेरणा प्रदान करता रहा । पारिवारिक परिवेश लेखक के भीतर शैशव में जो साँस्कृतिक चेतना और साँस्कृतिक बोध उत्पन्न करेगा उसकी अमिट छाप उसकी ज़िन्दगी भर रहेगी । यदि लेखक की रचनाओं में आस्था और मर्यादावादिता दृष्टिगत होती है उसका बहुत कुछ श्रेय लेखक के पारिवारिक वातावरण को है । किसी भी लेखक के व्यक्तित्व को सजाने और संवारने में अनुकूल पारिवारिक वातावरण का अपना अलग महत्व है । शैशव में घर से जो संस्कार अपनाया जाता है आगे चलकर लेखक के साहित्यिक जीवन की प्रेरणा बन जाते हैं ।

शिक्षा

वर्माजी की शिक्षा अनेक स्थानों पर हुई । उनकी प्रारंभिक शिक्षा नरसिंहपुर और जबलपुर के एफ.जी.एम. स्कूल में हुई । कक्षा नौ में इन्होंने नरसिंहपुर के स्कूल में प्रवेश किया । कक्षा दस में पढते समय उन्होंने पढाई छोडकर असहयोग आन्दोलन म भाग लिया । फिर माता के बहुत कहने पर उन्होंने स्कूल जाना प्रारंभ कर दिया । वहाँ उन्हें भाषण प्रतियोगिता एवं कविता पाठ के लिए अनेक पुरस्कार मिले । सन् उन्नीस सौ पच्चीस को बी.ए.पढाई के लिए वे इलाहाबाद गये । स उन्नीस सौ सत्ताईस को उन्होंने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की । सन् उन्नीस सौ उनतीस में प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की । सन् उन्नीस सौ चालीस को नागपुर विश्वविद्यालय ने "हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास" पर उन्हें पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान की । सन् उन्नीस सौ अडसठ को उनके कृतित्व से प्रभावित होकर स्विटसरलैंड के मूर विश्वविद्यालय ने उन्हें डि.लिट की उपाधि प्रदान की ।

साहित्य सृजन की प्रेरणा और प्रभाव

डॉ. वर्मा को साहित्य सृजन की प्रेरणा अपने वंशानुक्रम से मिली । उनके परिवार के सभी लोग साहित्यिक अभिरुचि रखनेवाले थे । प्रपितामह छत्रसाल जी ने गीतागोविन्द और श्रीमद् भागवद् आदि का अनुवाद किया । वर्मा जी के पितामह श्री शोभाराम जी साहित्यानुरागी थे । माता राजरानी देवी बहुत बडी संगीतज्ञ और कवयित्री थी ।

वे "वियोगिनी" उपनाम से कविताऐं रचा करती थी । रामकुमार वर्मा के बड़े भाई श्री रघुवीरप्रसाद वर्मा बृजभाषा के एक प्रौढ़ कवि थे । इसलिए रामकुमार वर्मा पर छोटी आयु से ही उनका प्रभाव दिखाई पड़ा । जब वे कक्षा आठ में पढ़ रहे थे तब गुरु गोविन्द प्रसाद गौतम अपनी कविताओं की प्रतिलिपि कुमार से ही करवाते थे । इन सभी कारणों से तेरह वर्ष की आयु से ही उनमें कविता के अंकुर फूटने लगे । बचपन से लेकर वर्मा के मन में नाटक देखने का और अभिनेता बनने का बड़ा शौक था । खुद उन्हीं के शब्दों में "नाटक रचना की प्रेरणा मुझे उस समय मिली जब नाटकों का स्वयं अभिनय किया करता था ।"[1] उन्होंने डी. एल. राय, जयशंकर प्रसाद, माधव शुक्ल, राधेश्याम कथावाचक और भारतेन्दु के नाटकों में अभिनय किया है । जब इन नाटकों में अभिनय कर रहे थे और मंच पर आकर संवाद रटते तो बार बार उन्हें ऐसा एहसास हुआ कि उन कथोपकथनों में एक कमी है इसलिए उसमें सुधार की ज़रूरत है । उन्हें ऐसा लगा कि यह कथोपकथन उनके मन के अनुसार नहीं होते थे । यहीं से उनके मन में नाटक रचने का बीज अंकुरित हुआ ।

साहित्यिक जीवन का आरंभ और विकास

डॉ. रामकुमार वर्मा के साहित्यिक जीवन का आरंभ कवि के रूप में ही होता है । तेरह वर्ष की आयु से ही उन्होंने कविता लिखना शुरू किया । अपनी माँ से प्रेरणा पाकर वे बच्चों के लिए

---

1. डॉ. रामकुमार वर्मा की साहित्य साधना - पृ. 193 - डॉ. चन्द्रिका प्रसाद शर्मा

तुकबंदियाँ लिखा करते थे । अपनी प्रारंभिक कविताओं के संबन्ध में उनका कथन है "मेरे काव्य का अंकुर राष्ट्रीयता की धरती से उत्पन्न हुआ ।"[1] प्रथम कविता जिसने उन्हें कवि बनाया वह यह है -

"जिस भारत की धूल लगी है मेरे तन में,
क्या मैं उसको कभी भूल सकता जीवन में ?
चाहे घर में रहूँ, रहूँ अथवा मैं वन में,
पर मेरा मन लगा हुआ है, इसी वतन में ।
सेवा करना देश की, यही एक सन्देश है,
मैं भारत का हूँ सदा, भारत मेरा देश है ।"[2]

सन् 1922 में देशसेवा सम्बन्धी कविता पर उन्हें "खन्ना पुरस्कार" मिला । फिर उन्होंने पन्द्रह काव्य ग्रंथ, छब्बीस नाटक, पच्चीस एकांकी संग्रह, दो निबन्ध संग्रह, आठ आलोचनात्मक संग्रह आदि की रचना की । नाटकों और एकांकियों के कुशल रचनाकार के रूप में हिन्दी साहित्य में अपनी विशेष पहचान बनानेवाले रामकुमार वर्मा खुद अपने आपको मूलत: कवि ही मानते हैं । एक साक्षात्कार के प्रसंग में उन्होंने इस बात पर बल दिया है "मेरे समस्त साहित्य में कविता की अन्तरधारा अबाध रूप से प्रवाहित हुई है ।"[3]

---

1. डॉ. रामकुमार वर्मा की साहित्य साधना -पृ. 202 - डॉ. चन्द्रिका प्रसाद शर्मा
2. डॉ. रामकुमार वर्मा की साहित्य साधना - पृ. 202 - डॉ. चन्द्रिका प्रसाद शर्मा
3. डॉ. रामकुमार वर्मा की साहित्य साधना -पृ. 203 - डॉ. चन्द्रिका प्रसाद शर्मा

कवि के रूप में

साहित्य जगत में डॉ. वर्मा का प्रवेश कवि के रूप में है । छायावाद के द्वितीय उत्थान के कवियों में डॉ. वर्मा को अग्रगण्य स्थान है । उन्होंने पन्द्रह काव्य ग्रंथ लिखे । उनकी काव्य यात्रा में वैविध्य विद्यमान है । ये काव्य ग्रंथ तीन भागों में विभक्त किये जा सकते हैं । क, मुक्तक रचनायें - गीति काव्य ख, प्रबंधात्मक रचनायें - खण्ड काव्य, ग, प्रबंधात्मक रचनायें - महाकाव्य ।

विषय की दृष्टि से उनके गीत निम्न प्रकार के है - 1. प्रेम एवं सौन्दर्यमूलक गीत, 2. राष्ट्रप्रेम, 3. रहस्यवाद और प्रकृतिप्रेम सम्बन्धी गीत ।

"रूपराशि" नामक काव्य संग्रह का मुख्य विषय प्रेम एवं सौन्दर्य है । गांधीजी के असहयोग आन्दोलन से प्रेरित होकर उन्होंने राष्ट्रप्रेम सम्बन्धी गीत लिखा । "रूपराशि" "चन्द्रकिरण" आदि रचनायें उनके रहस्यवादी गीतों के उदाहरण है ।

उनके मन में प्रकृति के प्रति अगाध प्रेम है । उन्होंने प्रकृति को आलंबन, उद्दीपन आदि रूपों में देखकर प्रकृति संबन्धी गीतों की रचना की । "अंजलि" में उन्होंने प्रकृति का आलंबन रूप में और "चन्द्रकिरण" में उद्दीपन के रूप में चित्रित किया है ।

उनके प्रबन्ध काव्य दो वर्गों में विभाजित है - 1. खण्ड काव्य 2. महाकाव्य ।

"वीरहमीर" वर्माजी का प्रारंभिक खण्ड काव्य है । इसकी रचना सन् 1922 ई. में हुई । प्रस्तुत काव्य ग्रंथ में ग्यारह सर्ग है । इसका कथानक ऐतिहासिक पात्र राजा हमीर और अलाउद्दीन के संघर्ष, क्षत्राणियों का जौहर-व्रत, रणथम्भौर दुर्ग का पतन आदि से संबन्धित है ।

वर्माजी का द्वितीय खण्डकाव्य है "चितौड की चिता" । इनकी रचना सन् 1927 में हुई । इस काव्य ग्रंथ में ग्यारह सर्ग है । राणा संग्रामसिंह और देवी करुणा का पारस्परिक प्रेम, मुगल सम्राट बाबर का चितौड पर आक्रमण, संग्रामसिंह की मृत्यु, चितौड की रक्षा के लिए हुमांयू से रानी करुणा की याचना आदि घटनायें प्रत्येक सर्ग में वर्णित है । प्रत्येक सर्गों का नाम उस सर्ग में वर्णित कथा के आधार पर है ।

तीसरा खण्डकाव्य है "निशीथ" । इसकी रचना सन् 1935 - 36 में हुई । "वीरहमीर" और "चितौड की चिता" से भिन्न शैली का प्रयोग उन्होंने इस काव्य की रचना में किया है । इसका कथानक सामाजिक है । इस खण्डकाव्य के सम्बन्ध में शांतिप्रिय द्विवेदी का मत है "छायावादी शैली में लिखा गया हिन्दी का प्रथम खण्डकाव्य है ।"[1] इसके कथानक का केन्द्रबिन्दु प्रेम है ।

डॉ. वर्मा ने तीन महाकाव्यों की रचना की है - "एकलव्य", "उत्तरायण" और "ओ अहल्या" ।

---

1. डॉ. रामकुमार वर्मा का काव्य - प्रेमनाथ त्रिपाठी एम.ए - पृ. 152

एकलव्य का कथानक महाभारत से लिया गया है । इस महाकाव्य का उद्देश्य जातिवाद का विरोध और मानवतावाद का सन्देश है ।

डॉ. वर्मा का दूसरा महाकाव्य है "उत्तरायण" । रामायण के उत्तरकाण्ड की घटनाओं को लेकर इस काव्य की रचना की है । सीता निर्वासन के कारण राम की चरित्र-महिमा में जो लांछन लग गया है उसे धो डालने की कोशिश इस महाकाव्य के द्वारा डॉ. वर्मा ने की है ।

डॉ. वर्मा का तीसरा महाकाव्य है "ओ अहल्या" । इस महाकाव्य के द्वारा डॉ. वर्मा का उद्देश्य अहल्या पर लगे हुए लांछन को निराधार साबित करना है ।

तीनों महाकाव्यों में रामकुमार वर्मा भारतीय संस्कृति के अनन्य पुजारी के रूप में तथा विश्वबन्धुत्व की भावना के संपोषक के रूप में भी हमारे सामने आते हैं । धर्मयुग से हुए एक साक्षात्कार में उन्होंने स्पष्ट किया था "भारतीय संस्कृति की उपेक्षा मैं सह ही नहीं सकता हूँ ।"[1]

नाटककार के रूप में

डॉ. वर्मा एक प्रतिभा संपन्न कवि के साथ ही एक सफल नाटककार भी है । उन्होंने छब्बीस नाटक ग्रंथों की रचना की है । इन

---

1. धर्मयुग : 19 से 25 जुलाई 1987

नाटकों को तीन रूपों में विभक्त किया जा सकता है । ऐतिहासिक, सामाजिक और साहित्यिक नाटक ।

ऐतिहासिक नाटक

ई. पू. 600 से लेकर आज तक की घटनाओं को इसके अन्तर्गत रखा गया है । सुविधा की दृष्टि से उन्होंने इसे बौद्धकालीन व जैनकालीन, हिन्दुकालीन, मुस्लिमकालीन, अंग्रेज़कालीन, स्वतंत्रता के बाद के नाटक ऐसा विभक्त किये हैं ।

बौद्धकालीन व जैनकालीन नाटक

ई. पू. 600 से ई. पू. 261 तक की ऐतिहासिक घटनाओं को इसके अन्दरगत रखा गया है । इसमें अधिकांश कथायें गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी से सम्बन्धित है । जयवर्धमान, कला और कृपाण, अग्निशिखा, विजयपर्व, अशोक का शोक, गौतम बुद्ध आदि इस कालखण्ड में लिखे गये नाटक हैं ।

1. अग्निशिखा

"अग्निशिखा" आचार्य चाणक्य की राजनीति एवं समाजनीति के आधार पर लिखा गया नाटक है ।

"विजयपर्व" के कथानक सम्राट अशोक के चरित्र पर आधारित है ।

2. जयवर्धमान

"जयवर्धमान" की कथा महावीर से सम्बन्धित है । महावीर के बाल्य, विवाह, सन्यास ग्रहण आदि घटनायें इसमें वर्णित है । महावीर का विवाह हुआ या नहीं यह अब भी सन्देह है । श्वेताम्बर संप्रदाय के अनुसार महावीर स्वामी का विवाह यशोदा के साथ हुआ । इस कथासूत्र की सहायता से उन्होंने इस नाटक की रचना की है ।

हिन्दुकालीन नाटक

सातवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक के हिन्दु राजाओं और उनसे सम्बन्धित घटनाओं को लेकर इन नाटकों की रचना की है । जय आदित्य, सत्य का स्वप्न आदि इस काल में रचित रचनायें है ।

जय आदित्य

"जय आदित्य" का कथानक सम्राट हर्षवर्धन के चरित्र पर आधारित है, जो लेखक के शब्दों में महान विजेता, महान शासक, महान धर्मपरायण, महान् विधानुरागी और महान् सभ्यता और संस्कृति का पोषक था । देश के नवयुवक इस पात्र से प्रेरणा ले, इसलिए नाटककार ने इसके चरित्र को रंगमंच पर प्रदर्शित किया है ।

मुस्लिमकालीन नाटक

सन् 1561 ई. से सन् 1679 ई. तक के मुस्लिम राजाओं और उनसे सम्बन्धित घटनायें इसमें वर्णित है । सारंगस्वर, महाराणा प्रताप

जौहर की ज्योति आदि इस काल में रचित नाटक है ।

"जौहर की ज्योति" में डॉ. वर्मा ने सेनापति दुर्गादास की वीरता, साहस, स्वातन्त्र्य प्रेम और आत्मविश्वास का चित्रण किया है ।

"सारंगस्वर" रानी रूपमती के पातिव्रत धर्म पर आधारित है ।

अंग्रेज़कालीन नाटक

इसका कथानक अंग्रेज़ों के शासन से सम्बन्धित है । इस काल में रचित नाटक है "नाना फड़नवीस" ।

1. नाना फड़नवीस

नाना फड़नवीस के महान व्यक्तित्व को केन्द्र बनाकर इस नाटक की रचना की है ।

2. जयबंगला

सन् 1971 ई. के भारत पाकिस्तान युद्ध के बाद की घटनाओं को लेकर इस नाटक की रचना की है ।

आलोचक के रूप में

डॉ. वर्मा आलोचक के रूप में भी ख्याति प्राप्त लेखक है । उन्होंने आठ आलोचनात्मक संग्रह की रचना की है । उनमें

साहित्य-समालोचना, कबीर का रहस्यवाद, संत कबीर, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास आदि महत्वपूर्ण है ।

साहित्य समालोचना

प्रस्तुत संग्रह में वर्माजी ने कविता, कहानी और रंगमंच की आलोचना की है । कविता के सम्बन्ध में उन्होंने कहा है - "कविता की शक्ति एक परी के समान है । यह पूर्ण स्वच्छन्द है जिन वस्तुओं की ओर जाना चाहती है, वेग से उड़ जाती है, एक मिनट में, एक सेकन्ड में ।"[1] "कविता में जीवन की शक्तियाँ होने के कारण - उसमें हृदय को स्पर्श करने की भी शक्ति है - किसी वस्तु का मूल्य बढाने की ताकत है ।"[2] "संसार का हृदय कविता की शक्ति पाकर दूने वेग से धडकने लगता है ।"[3] "कविता कवि-विशेष की भावनाओं का चित्रण है और वह चित्रण इतना तीव्र है कि उससे वैसी ही भावनायें किसी दूसरे के हृदय में आविर्भूत हो जाती है ।"[4] कवि भावुक है । भावनायें हृदय में उत्पन्न होती है । इसलिए कविता का सम्बन्ध हृदय से है ।

कहानी के सम्बन्ध में उनका मत यह है -"कहानी का जन्म उस समय हुआ जब संसार के स्त्री-पुरुष एक दूसरे के विषय में सोचने लगे अथवा मानव-सृष्टि, अमानव सृष्टि से सम्बन्ध जोडा ।"[5]

---

1. साहित्य समालोचना - पृ. 8 - डॉ. रामकुमार वर्मा
2. साहित्य समालोचना - पृ. 8 - डॉ. रामकुमार वर्मा
3. साहित्य समालोचना - पृ. 9 - डॉ. रामकुमार वर्मा
4. साहित्य समालोचना - पृ. 10 - डॉ. रामकुमार वर्मा
5. साहित्य समालोचना - पृ. 37 - डॉ. रामकुमार वर्मा

"साहित्यशास्त्र" नामक आलोचनात्मक ग्रंथ में उन्होंने साहित्य, साहित्य और जीवन, साहित्य की प्रेरणा और सृजन, साहित्य और विज्ञान आदि बातों पर आलोचना की है । उन्होंने इस ग्रंथ को ग्यारह अध्यायों में बांटा है ।

"कबीर का रहस्यवाद" में वर्मा ने रहस्यवाद पर विस्तृत आलोचना की है । रहस्यवाद के सम्बन्ध में डॉ वर्मा का मत यह है "रहस्यवाद जीवात्मा की उस अन्तर्हित प्रवृत्ति का प्रकाशन है । जिसमें वह दिव्य और अलौकिक शक्ति से अपना शान्त और निश्छल सम्बन्ध जोडना चाहती है, यह संबन्ध यहाँ तक बढ जाता है कि दोनों में कुछ भी अंतर नहीं रह जाता । जीवात्मा की शक्तियाँ इसी शक्ति के अनंत वैभव और प्रभाव से ओत-प्रोत हो जाती है । जीवन में केवल उसी दिव्य शक्ति का अनंत तेज अन्तर्हित हो जाता है और जीवात्मा अपने अस्तित्व को एक प्रकार से भूल सा जाती है । एक भावना, एक वासना हृदय में प्रभुत्व प्राप्त कर लेती है और वह भावना सदैव जीवन के अंग-प्रत्यंगों में प्रकाशित होती है । यही दिव्य संयोग है । आत्मा उस दिव्य शक्ति से इसप्रकार मिल जाती है कि आत्मा में परमात्मा के गुणों का प्रदर्शन होने लगता है और परमात्मा में आत्मा के गुणों का प्रदर्शन ।"[1]

हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास

सन् 1938 में इस ग्रंथ का प्रकाशन हुआ था । इस ग्रंथ के प्रकाशन में उनका मुख्य लक्ष्य बिखरी हुई इतिहास सामग्री के संकलन और

---

1. कबीर का रहस्यवाद - पृ. 7 - डॉ. रामकुमार वर्मा

वैज्ञानिक विवेचन की ओर रहा है । इसमें उन्होंने रामचन्द्र शुक्ल के समान ही काल विभाजन किया है । लेकिन इतना परिवर्तन किया है कि उन्होंने "वीरगाथाकाल" के स्थान पर "संधिकाल" और "चारणकाल" को स्थान दिया । उनके अनुसार कालविभाजन इसप्रकार है -

संधिकाल - वि सं. 750 से वि सं. 1000 तक
चारणकाल - वि सं 1000 से वि सं. 1375 तक
भक्तिकाल - वि सं 1375 से वि सं. 1700 तक
रीतिकाल - वि सं. 1700 से वि सं. 1900 तक
आधुनिक काल - वि सं. 1900 से अब तक

लेकिन इस काल विभाजन संबन्धी कई त्रुटियाँ है । उन्होंने काल विभाजन के लिए कोई निश्चित आधार नहीं ग्रहण किया । उन्होंने अपने काल विभाजन में कहीं भाषिक स्थिति, कहीं कवियों के व्यवसाय, कहीं विषयवस्तु और कहीं शुद्ध कालपरक नाम ग्रहीत किये ।

समीक्षक के रूप में

"साहित्यचिन्तन" में उनका समीक्षक रूप उभर आता है । प्रस्तुत ग्रंथ में वर्मा ने हिन्दी साहित्य, संस्कृति और कला पर समीक्षा की है । इस ग्रंथ में इकतालीस समीक्षात्मक निबन्ध है । समीक्षा के क्षेत्र में उनके ग्रंथ "साहित्य समालोचना", "साहित्य चिन्तन", "कबीर एक अनुशीलन" विशेष उल्लेखनीय हैं ।

"हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास" तथा "रीतिकालीन साहित्य का पुर्नमूल्यांकन" के द्वारा वे एक शोध परक इतिहास लेखक के रूप में हमारे सामने आते हैं ।

निबन्धकार के रूप में

डॉ. वर्मा ने दो निबन्ध संग्रहों की रचना की है - "अनुशीलन" और "संकेत" ।

"अनुशीलन" नामक निबन्ध संग्रह साहित्य से संबन्धित है । इसके प्रथम भाग में साहित्य के मूल तत्व, द्वितीय में मध्ययुगीन साहित्य और तृतीय भाग में आधुनिक साहित्य के सम्बन्ध में विचार किया गया है ।

कबीर एक अनुशीलन

प्रस्तुत संग्रह कबीर के जीवन और चिन्तन से सम्बन्धित है । इस ग्रंथ के अलग अलग अध्याय उनका जीवनवृत्त, समकालीन सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ, उनकी चिन्ता-धारा, सन्त संप्रदाय का भावपक्ष, राष्ट्रीय एकता संबन्धी उनका विचार आदि पहलुओं को उभारते हैं ।

संपादक के रूप में

एक सफल संपादक के रूप में भी उन्होंने काफी ख्याति पाई है । उन्होंने दस पुस्तकों का संपादन किया है । हिन्दी गीत काव्य, कबीर पदावली, गद्य परिचय, आधुनिक हिन्दी काव्य-संग्रह, गद्य गौरव, काव्यांजली, काव्य-कुसुम, सरस एकांकी नाटक आदि उनके द्वारा संपादित ग्रंथ है ।

संस्मरणकार के रूप में

उनके द्वारा लिखे गये दो संस्मरणात्मक ग्रंथ है - "स्मृति के अंकुर" एवं "संस्मरणों के सुमन" ।

1. संस्मरणों के सुमन

इस ग्रंथ में दो प्रकार के संस्मरण है । पहला, महान विभूतियों से सम्बन्धित है और दूसरा आत्मकथात्मक एवं यात्रावृत्तात्मक है । इसके अतिरिक्त साहित्य शिल्प, काव्यानुभूति, रसानुभूति, साक्षात्कार आदि कुछ बातों का संकलन भी इस ग्रंथ में है ।

एकांकीकार के रूप में

कवि, नाटककार, आलोचक इनके अतिरिक्त डॉ. वर्मा विख्यात एकांकीकार भी है । उन्होंने कुल एक सौ पच्चीस एकांकी लिखे है । इन्हें ऐतिहासिक, सामाजिक, पौराणिक, आध्यात्मिक, जीवनीपरक आदि कोटियों में विभाजित किया गया है । उन्हें केवल एक एकांकीकार ही नहीं एकांकी सम्राट के नाम से पुकारा जाता है । उनके द्वारा लिखे गये एकांकियों का गहराई से अध्ययन आगे अध्यायों में किया जाएगा ।

उनकी रचनाओं पर पुरस्कार

डॉ वर्मा को अपनी रचनाओं के लिए अनेक पुरस्कार मिले हैं । छोटी आयु से ही उन्हें पुरस्कार मिला । सन् 1922 में

कानपुर से प्रकाशित होनेवाले समाचार पत्र प्रताप के अनुसार उन्होंने देशसेवा सम्बन्धी एक काव्य की रचना की । उस काव्य के लिए उन्हें खन्ना पुरस्कार मिला । सन् 1926 को साहित्यिक, सांस्कृतिक और अन्य क्रिया कलापों में सर्वप्रथम रहने के कारण उन्हें हालैण्ड स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया । सन् 1935 में उनके "चित्ररेखा" नामक एक काव्य संग्रह का प्रकाशन हुआ । इस काव्य संग्रह के लिए उन्हें सन् 1936 में हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ "देव पुरस्कार" प्राप्त हुआ । सन् 1938 में उन्हें चक्रधर पुरस्कार तथा 1939 में हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की ओर से "नाटक पुरस्कार" प्रदान किया गया । सन् 1940 को "हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास" के लिए उन्हें "रत्नकुमारी पुरस्कार" प्राप्त हुआ । सन् 1960 में "कला और कृपाण" नाटक के लिए उन्हें "कालिदास पुरस्कार" से सम्मानित किया गया । सन् 1963 में भारत सरकार ने उन्हें "पद्मभूषण" अलंकरण प्रदान किया । श्रेष्ठ रचनाकार होने के कारण सन् 1967 को उन्हें "रत्न अलंकरण" से सम्मानित किया गया । सन् 1968 को हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ने उनके कृतित्व का समादर करते हुए "साहित्य वाचस्पति" उपाधि से अलंकृत किया । सन् 1970 को उन्हें "अशोक का शोक" नामक नाटक के लिए "कालिदास पुरस्कार" प्राप्त हुआ । सन् 1983 आगस्त में तृतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के समारोह में वर्मा को उनकी साहित्य सेवा, हिन्दी प्रेम और हिन्दी भाषा के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियों के निमित्त सम्मान पत्र सादर प्रदान किया गया । चौदह दिसंबर 1987 को एक लाख रुपये के पुरस्कार भारत भारती से उत्तरप्रदेश शासन ने उन्हें सम्मानित किया । हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए उन्होंने जो ठोस कार्य किया था उसके उपलक्ष्य में उन्हें यह पुरस्कार

हिन्दी दिवस के दिन प्रदान किया गया । राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति वे हृदय से बडी ममता रखते थे उन्हें इस बात पर बडा अफसोस है कि भारतवासी अंग्रेज़ी के पीछे दीवाने है और हिन्दी का तिरस्कार करते हैं ।

उनसे विराजित पदओहदे

वर्मा जी के स्वभाव की सरलता और बुद्धिमता के कारण स्कूल में पढते समय ही छात्रों ने उन्हें अनेक पदों के लिए चुना । सन् 1929 में एम.ए. की परीक्षा पास होने पर उनके हाथ में दो नियुक्ति पत्र एक साथ आए । एक प्रयाग यूनिवेर्सिटी के हिन्दी विभाग के प्रवक्ता का और दूसरा डिप्टी कलेक्टर का । लेकिन उन्होंने हिन्दी प्रवक्ता का पद स्वीकार किया । अध्यापन कला के प्रति डॉ. वर्मा के मन में पहले ही आकर्षण था । उन्हें अध्यापन के प्रति एक समर्पण भावना थी । उनकी राय में "अध्यापक निस्सन्देह रूप से राष्ट्रनिर्माता है उसी अध्यापक जब राष्ट्र को ऊपर उठाने का प्रयत्न करता है तो राष्ट्र अवश्य उन्नति करता है ।"[1] सन् 1957 में हिन्दी के प्रोफसर होकर वे मोस्को गये । हिन्दी तथा अन्य भाषाओं के पठन-पाठन के लिए विभाग गठित करने तथा पाठ्यक्रम निर्धारित करने के संदर्भ में वहाँ लगभग दो वर्ष कार्य किया । भारत तथा सोवियत युनियन के बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध करने, हिन्दी भाषा तथा साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट सेवाओं के उपलक्ष्य में उन्होंने कार्य किया । सन् 1963 में नेपाल के त्रिभुवन विश्वविधालय में शिक्षा सहायक के रूप में उन्हें निमन्त्रित किया

---

1. डॉ. रामकुमार वर्मा की साहित्य साधना - पृ. 92 - डॉ. चन्द्रिका प्रसाद शर्मा

गया । इलाहबाद यूनिवेर्सिटी के हिन्दी विभाग में सैंतीस वर्षों तक अध्यापन कार्य करते हुए वे विभागाध्यक्ष के रूप में उन्नीस सौ छियासठ में कार्य मुक्त हुए । सन् 1967 में श्रीलंका के पैरेदेनिया विश्वविधालय में वे भारतीय भाषा विभाग में अध्यक्ष के रूप में गये । श्रीलंका में कई विधार्थियों के शोध निर्देशक रहा । सन् 1975 में उन्हें हिन्दुस्तानी एकादमी प्रयाग के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया । सन् 1981 में भारत प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी ने उसे केन्द्रीय हिन्दी परामर्शदात्री समिति का सदस्य नामित किया । सन् 1982 में उन्हें राष्ट्रीय ग्रंथ विकास काउन्सिल के सदस्य नामित किए ।

साहित्य के इतिहास में डॉ. रामकुमार वर्मा का योगदान महत्वपूर्ण है । सन् 1990 अक्तूबर 5 को उनकी मृत्यु हुई । कवि, नाटककार, एकांकीकार, समालोचक आदि विविध रूपों में उन्होंने हिन्दी भाषा और साहित्य की प्रचुर सेवा की है । उनकी सभी रचनाओं में राष्ट्रीयता और भारतीयता का स्वर गूँज उठता है । उनकी वाणी में इस देश की अपूर्व मनीषा और महान जीवन आदर्शों का रूप मिलता है । ऐसे एक महान साहित्यकार के निधन से हिन्दी साहित्य की एक अमूल्य संपत्ति नष्ट हो गई है ।

तीसरा अध्याय

रामकुमार वर्मा के एकांकियों में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक चेतना

इतिहास

इतिहास शब्द का अर्थ क्या है ? इसके सम्बन्ध में भिन्न भिन्न लेखकों ने भिन्न भिन्न मत प्रकट किये हैं । संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर के अनुसार इतिहास शब्द का अर्थ है "बीती हुई प्रसिद्ध घटनाओं और उनसे सम्बन्ध रखनेवाले पुरुषों का कालक्रम से वर्णन । प्राचीन समय या समाज की विशेष बातों या घटनाओं का क्रमिक वर्णन ।"[1] इसे अंग्रेजी में **History** कहते हैं । डॉ. सौ अमरजा अजित रेखी के अनुसार "इतिहास अतीत में घटित घटनाओं का यथातथ्य लेखा है जो विगत मानवता के सत्यापन के लिए संदर्भ-ग्रंथ का कार्य सम्पन्न करता है ।"[2] डॉ. ताराचन्द के अनुसार "इतिहास में व्यक्ति, व्यक्ति से सम्बन्धित स्थान और समय का पूरा ब्यौरा रहता है । उसके माध्यम से जीवन की घटनाओं का सिलसिला स्पष्ट रूप से जाना जा सकता है ।"[3] इतिहास शब्द की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में डॉ. दीनानाथ सिंह ने इसप्रकार कहा है "इति + ह + आस के अनुसार इसका अर्थ है "निश्चित रूप से हुआ था" या "ऐसा ही था" ।"[4] डॉ. सुषमा त्यागी के अनुसार "इतिहास वह संचित ज्ञान राशि है जिसमें मानवीय स्वभाव, चेतना कर्म तथा स्वप्नों का सब कालों (अतीत, वर्तमान तथा भविष्य) के लिए समावेश होता है । अतः इतिहास किसी देश के ज्ञान का वह संगम स्थल है, जिसमें वहाँ की जनता, राजवंश परंपराओं का राजनैतिक विकास, सामाजिक, आर्थिक संस्थायें,

---

1. संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर - नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिन्दी के ऐतिहासिक एकांकी एक अनुशीलन - पृ. 9-10 - डॉ. सौ अमरजा अजित रेखी
3. इतिहास और साहित्य - पृ. 155 - डॉ. ताराचन्द
4. ऐतिहासिक उपन्यासों का रचना कौशल - पृ. 166 - डॉ. दीनानाथ सिंह

उसके धर्म, दर्शन, संस्कृति एवं रुचि का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है । इन सभी को मिलाकर संघर्ष होता है जिनके माध्यम से मानव गुज़रता है । इसलिए इतिहास को केवल राष्ट्र एवं काल में बद्ध करना उचित नहीं है, उसका क्षेत्र सम्पूर्ण जगत है । वह विभिन्न समस्याओं एवं संस्कृतियों का समन्वय है, जिसका प्रधान अंग राजनीति रहा है । अतः यह सत्य है कि इतिहास बीती हुई राजनीति है तथा राजनीति वर्तमान इतिहास है ।"[1]

उपर्युक्त तथ्यों के अनुसार निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि इतिहास का विषय अतीत से सम्बन्धित है । इसमें अतीतकालीन घटनाओं एवं परिस्थितियों का चित्रण होता है साथ ही अतीत के लोगों के जीवन, उनके कार्यों के पीछे निहित विचार आदि प्रस्तुत करते हैं । वास्तव में इतिहास मानवीय सत्यों की खोज है, हमारे पूर्वजों से संबन्धित सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक परिस्थितियाँ इसके द्वारा प्रस्तुत हो जाते हैं ।

ऐतिहासिक साहित्य

ऐतिहासिक साहित्य सिर्फ इतिहास की पूर्ति नहीं है । वह इतिहास एवं कल्पना का समंजन है । इतिहास का विषय नीरस होता है । इसलिए पाठकों पर प्रभाव डालने के लिए ऐतिहासिक साहित्यकार को कल्पना का सहारा लेना पड़ता है । ऐतिहासिक साहित्य के अन्तर्गत ऐतिहासिक उपन्यास, ऐतिहासिक नाटक, ऐतिहासिक एकांकी आदि

---

1. प्राचीन ऐतिहासिक उपन्यास : इतिहास और कला - पृ. 9 - डॉ. सुषमा त्यागी

समाहित है । इसके माध्यम से अतीत का पुनर्निमाण होता है, बीते युग की कहानी होकर भी वह आधुनिक युग का विषय बन जाता है । ऐतिहासिक साहित्यकार का कौशल इसी में है कि वह दोनों मुख्य तत्वों इतिहास और कल्पना को घुलेमिले रूप में ऐतिहासिक साहित्य द्वारा प्रस्तुत करता है । इसलिए उसकी अलग अलग पहचान लेना असंभव बन पड़ता है ।

ऐतिहासिक साहित्य से हमें कई लाभ मिलते हैं इसके माध्यम से हमें अतीत की अज्ञात तथा अल्पज्ञात घटनाओं की पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है । साथ ही अतीत के लोगों से सम्बन्धित रहन-सहन, आचार-विचार, उनकी भाषायें, वेशभूषा आदि कई बातें समझ सकते हैं । अतीत की यह जानकारी वर्तमान का स्पष्टीकरण और भविष्य का आदर्श बन जाता है । वास्तव में इतिहास मानव जीवन का महाकाव्य है, इसमें सामयिक तत्यों की सत्ता रहती है ।

डॉ. धर्मा के ऐतिहासिक एकांकी काल और ऐतिहासिकता के आधार पर विभाजित है । काल के आधार पर बौद्ध युगीन, हिन्दुयुगीन, मुस्लिम युगीन, आंग्लयुगीन, स्वातन्त्र्योत्तर युगीन, ऐसा विभाजित है । ऐतिहासिकता के आधार पर उनके एकांकियों को शुद्ध ऐतिहासिक तथा कल्पनापरक ऐतिहासिक ऐसी दो कोटियों में विभक्त कर सकते हैं ।

बौद्धयुगीन :- इसका समय ई.पू. 600 से लेकर ई. पू. 185 तक है । इस युग में बौद्ध धर्म का प्रभाव अधिक दिखाई पड़ते हैं ।

उदा:- चारूमित्रा, उदयन, वासवदत्ता ।

हिन्दुयुगीन :- ई॰पू॰ 57 से लेकर सन् 1192 तक के समय हिन्दुयुग के अन्दर्गत आते हैं ।

उदा:- समुद्रगुप्त पराक्रमांक, श्रीविक्रमादित्य, राज्यश्री ।

मुस्लिमयुगीन :- हिन्दु शासन काल के बाद मुस्लिम शासन आरंभ होते हैं । इनका समय सन् 1398 ई॰ तक से लकर सन् 1707 तक है ।

दुर्गावती, शिवाजी, औरंगज़ेब के आखिरी रात आदि एकांकी इस युग से सम्बन्धित है ।

आंग्लयुगीन :- इसका समय 1761 ई॰ से लेकर 1850 ई॰ तक है । अंग्रेज़ों के भारत आक्रमण से सम्बन्धित कथा इस युग के एकांकियों में समाहित है ।

उदा:- नानाफडनवीस, पानीपत की हार आदि ।

स्वातन्त्र्योत्तर युगीन :- इसका समय 1945 ई॰ से लेकर 1963 ई॰ तक है । स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत की शासन रीतियों तथा यहाँ के शासकों का चरित्र इस युग के एकांकियों में प्रतिपादित है ।

उदा:- बापू, वीर जवाहर, लालबहादुर शास्त्री आदि ।

1. मर्यादा की वेदी पर

जन्मभूमि से विश्वासाघात करनेवाला पूरे देश के लिए कलंक है । प्रभुता की लालच में अपने देश को विदेशों के हाथों में बेचना सबसे जघन्य पाप है । कई विदेशी शक्तियों ने भारत भूमि पर अपनी प्रभुता और सत्ता इसलिए जमायी कि यहाँ का एक एक नगर, एक एक वीर एक दूसरे के हृदय से न जुड सके । प्रस्तुत एकांकी में वर्माजी भारतीय जनमानस की इस कायरता को रेखांकित करते हैं ।

विश्वविजेता सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण करने के उपरान्त एक सशक्त राज्य अस्सकेनो के सबसे बडे नगर मस्सग पर चढायी की थी । आर के मुक्करजी जैसे इतिहासकार उस चढाई का ब्यौरा देते हुए लिखते हैं -"उस दुर्ग के नागरिक जब दुर्ग से बाहर निकले तो सिकन्दर ने अपनी सेना सहित उन पर आक्रमण कर दिया और बहुत से अबोध बच्चों तथा पुरुष-नारियों की हत्या की ।"[1] एकांकी का काल्पनिक पात्र भैरवी उन निरीह नारियों की प्रतीक बनकर आती है । भारतीय इतिहास में ऐसी नारियों की कमी नहीं जो रणकौशल में पुरुष से भी एकदम आगे थी । इसलिए भैरवी का सैनिक वेश में सेल्यूकस से युद्ध करना, सेल्यूकस द्वारा उसको बन्दी बना देना आदि घटनायें काल्पनिक होते हुए भी ऐतिहासिक संभाव्यता से युक्त है ।

गांधार नरेश आंभीक की कायरता और उसका देशद्रोह भी इतिहास प्रसिद्ध है । तलवार चलाये बिना अपनी सारी सेना सिकन्दर

---

1. History and Culture of Indian People, Volume 2 - Age of Imperial Unity - R.C.Majumdar.

को सौंपनेवाले कायर और निर्लज्ज आंभीक जैसे विश्वासघाती के प्रति वर्माजी के मन में जो घृणा है वह भैरवी के शब्दों में प्रकट होती है । बाद में भैरवी समझती है कि सिकन्दर के साथ हुए युद्ध में पंचनद नरेश पौरव की भी हार हुई है, पौरव की वीरता पर प्रसन्न होकर सिकन्दर उसे मित्र बनाना चाहता है । सिकन्दर की कूटनीति से दूर रहने का उपदेश भैरवी पौरव को देती है क्योंकि वह जानती है विश्वविजेता सिकन्दर पौरव जैसे वीर योद्धा को अपनी गिरोह में लेना चाहते हैं । पौरव भैरवी के इस आशय को समझने की कोशिश नहीं करता है कि सिकन्दर मित्रता के नाम से एक वीर पुरुष को अपनी विजय का साधन बना रहे हैं । पौरव की प्रतिक्रिया-हीनता से हताश होकर भैरवी आत्महत्या कर लेती है ।

इसप्रकार एक नारी देश की मर्यादा की वेदी पर आत्मबलिदान करती है ।

2. तैमूर की हार

भारत का इतिहास इस बात का गवाही बन चुका है कि यहाँ बड़े निर्दयी खूँखार और शक्तिशाली विदेशी आक्रमणकारी आये थे, लोगों का खून बहाते थे, उन्हें लूटते थे, और उनका घर जलाते थे, यहाँ के मन्दिर तोड़े थे और यहाँ की धनराशि लेकर यहाँ से चले गये थे । इन शक्तिशाली आततायियों में इनेगिने व्यक्ति, दूसरों की शक्ति और वीरता को परखने की क्षमता भी रखते थे । रामकुमार वर्मा

ने तैमूर के चरित्र में वीरता को सराहने की ऐसी क्षमता देखी । इस बिन्दु के इर्दगिर्द एकांकी का कथ्य बुना गया है ।

दीपलपुर वनप्रान्त की एक गाँववाली कल्याणी अपने बेटे बलकरण के ग्यारहवीं वर्षगांठ के दिन उसके लिए मिठाइयाँ बनाती है और उसे एक पुराना गीत भी सुनाती है । उस गीत में विदेशी आक्रमणकारी महमूद गज़नी के अत्याचार और लूटमार का वर्णन ही था । बालक बलकरन एक साहसी और निर्भीक छोकरा है, तुर्क का किस्सा सुनते ही उसमें उन आततायियों से जूझने की इच्छा सिर उठती है, दूध लेने के लिए घर से बाहर जाते वक्त घर के चारों ओर शोरगुल मचता है । गाँववालों को लूटते हुए तैमूर के नेतृत्व में सिपाही लोग हमला कर रहे हैं । भयभीत होकर गाँववाले अपना घरबार छोडकर भागते हैं । तैमूर के सिपाही बलकरन के घर में घुसते हैं सोना, चाँदी आदि हाथ न आने पर वे लोग उस बढिया खाना और गरम मिठाइयाँ पेट भर खाते हैं जिसे कल्याणी ने अपने बेटे के लिए तैयार किया था । उस समय के बाद तैमूर वहाँ पहूँचता है और जब उसने देख लिया कि उसके सिपाही दौलत लूटने के बदले नाश्ता का स्वाद ले रहे हैं तो वे क्रोध से तिलमिलाते हैं और वे सिपाहियों को कड़ी सजा भी देते हैं । तैमूर बहुत प्यासा था और उसका गला सूख रहा था । इतने में दूध लेकर बलकरन वहाँ आता है । माँ को लापता देखकर तथा अजनबी आदमी को वहाँ खड़े हुए देखकर उसे अचरज होता है । बहुत जल्दी वह समझ लेता है वह आदमी और कोई नहीं तैमूर ही है । तैमूर बालक से दूध माँगता है लेकिन वह स्पष्ट कहता है कि वह दूध माँ के सिवा और किसी को नहीं देता । लेकिन तैमूर

बलकरन के हाथ से दूध छीन लेता है । जब तैमूर तख्त पर तलवार रखकर दोनों हाथों से दूध का बर्तन मुँह में उलट दे रहा था बलकरन तैमूर की तलवार उठा लेता है । तैमूर को वह लड़का बड़ा निडर मालूम पड़ता है और उसकी बहादुरी से प्रभावित होकर अपनी फौजी में भर्ती होने का तथा इस्लाम धर्म कबूल करने का आमंत्रण देता है । लेकिन बलकरन इनकार करते हुए अपनी चाकू से तैमूर से लड़ने का प्रयास करता है । तैमूर को वह बालक अपने से भी बहादुर मालूम होता है । बलकरन की कुटिया से विदा लेने के पहले उस बालक की छोटी सी मुराद पूरा कर देने का वादा देता है । उस वादा के अनुसार तैमूर बालक के गाँव के बाहर चले जाते हैं । सारे शोरगुल के शांत हो जाने के बाद कल्याणी जो तलघर में छिपी बैठी थी बाहर चली आती है ।

3. औरंगजेब की आखिरी रात

मुगल बादशाहों का इतिहास पिता-पुत्र के बीच, एवं भाई-भाई के बीच गलाकाट व्यवहार का इतिहास है । मुगल बादशाहों में औरंगजेब ही सबसे निष्ठुर और हिन्दु विरोधी सिद्ध हुआ है । इस एकांकी में भी रामकुमार वर्मा का लक्ष्य औरंगजेब के चरित्र का नवनिर्माण है । मृत्यु शय्या पर लेटे हुए औरंगजेब की पश्चाताप भावना को ही एकांकीकार ने इसमें भरा है ।

मृत्यु के समय मनुष्य का हृदय निष्कलुष एवं निश्चल हो जाता है । वह जीवन भर के दुष्कृत्यों का स्मरण कर पश्चाताप

की अग्नि में तपकर शुद्ध होना चाहता है । औरंगजेब ने साम्राज्य लिप्सा के कारण पिता को बन्दी बनाया, पुत्रों को कारावास दिया तथा इस्लाम के नाम पर जजिया कर लगाया और भीषण अत्याचार किए । मृत्यु के समय इन्हीं दुष्कृत्यों की स्मृतियाँ उसकी आत्मा को कचोट रही है । उसके इन अन्तिम क्षणों का अत्यन्त मनोवैज्ञानिक चित्रण ही एकांकी में हुआ है ।

एकांकी लिखने की प्रेरणा लेखक को औरंगजेब के इतिहास से मिली है । इतिहासकार ने लिखा है कि औरंगजेब ने अपने अन्तिम समय अपने बेटों के नाम खत लिखवाये थे । इस एकांकी में औरंगजेब की पश्चात्ताप भावना को रेखांकित करते हुए रामकुमार वर्मा ने इस तथ्य पर प्रकाश डाला है कि ज़िन्दगी भर गुनाहों का बोझ उठानेवाला मरते वक्त अपना सारा चैन खो बैठता है । आदमी अपनी प्रभुता और धनदौलत की ताकत से किसी भी कानून के हाथ से बच सकता है लेकिन ऐसा एक कानून है जिससे कोई भी बच नहीं सकता । यह कानून है मनुष्य की अन्तरात्मा की पुकार । औरंगजेब की आत्मग्लानी के द्वारा रामकुमार वर्मा ने यही बताया है जमीर की जंजीरें आदमी के हाथ - पैर बाँध रखती है । औरंगजेब ने अपनी ज़िन्दगी भर इबादत का ढिंढोरा पीटा । लेकिन खुदा के पास तक इसलिए नहीं पहुँच सके कि उसने ज़िन्दगी भर किसी की भलाई नहीं की । मरते वक्त औरंगजेब का सबसे बड़ा अफसोस यह है कि इस दुनिया से विदा लेते वक्त वह अपने साथ गुनाहों का कारवां लिये जा रहा है । औरंगजेब ने अपनी बादशाही लिबास में अपने अन्दर की सारी कोमलता, ममता और ईमानदारी की भ्रूणहत्या कर दी । अपने पिता से,

अपने भाइयों से, अपने बेटों से, सगे मित्रों से यहाँ तक कि वतन और रेयत से बेइनसाफी की । उसके कमरे में सोने के पिंजड़े में बन्द पंछी को रिहाकर देने की उसकी आज्ञा से स्पष्ट है कि जीवन के अन्तिम क्षण में उसने स्वतन्त्रता के स्वाहा हो जाने का दुःख भली भांति महसूस किया है । उन्हें इस बात का मलाल था अपने पिता-हिन्दुस्तान के बादशाह शाहजहाँ को उस परिन्दे की किस्मत नसीब नहीं थी ।

4. भाग्य नक्षत्र

राजवंश के वंशवृक्ष को ईर्ष्या और द्वेष के कीटाणु ने कई बार नष्ट भ्रष्ट कर दिया है । विदेशी शक्तियों ने उन पर कई बार इसलिए नहीं चढ़ाई की थी कि उनमें शक्ति और साहस का अभाव था, लेकिन अपनी शक्ति और वीरता को प्रतिस्पर्धा की वेदी पर चढा दिया था । यह भी पूरे देश के लिए एक अभिशाप की बात है कि देश के शासक विलासी बनकर अपने कर्तव्यों को भूलते रहे हैं । लेकिन उचित अवसर पर हर एक व्यक्ति अपनी भूल को पहचान करेगा, विवेक न खो बैठेगा और सही निर्णय लेगा तो देश को विपत्ति के कगार से बचा सकता है । भारत के अन्तिम हिन्दु शासक पृथ्वीराज चौहान के ऐसे एक अवसरोचित फैसले पर ही इस एकांकी का कथ्य बुना लिया है ।

पृथ्वीराज चौहान अपनी रानी संयोगिता के सौन्दर्य के नशे में बुरी तरह मस्त हो जाता है । वह अपने विवाह का स्मृतिपर्व धूमधाम से मनाना चाहता है । उसी बीच दरबारी कवि जयानक आकर

शहाबुद्दीन गोरी के युद्ध सन्देश प्राप्त होने की सूचना देता है, संयोगिता के सौन्दर्य के उपासक बनकर पृथ्वीराज चौहान अन्तःपुर से बाहर नहीं आये थे और देश की विपत्ती से बिलकुल अनभिज्ञ थे । जयानक का सन्देश सुनने के बाद भी पृथ्वीराज की मानसिकता बदलती नहीं । युद्ध पर्व के पहले विवाह पर्व की योजना करना ही वे चाहते हैं क्योंकि संयोगिता के साथ विवाह का उषाकाल भी नहीं समाप्त हुआ । उसे ऐसा लगता है कि उसके जीवन के हर एक क्षेत्र में युद्ध ही सर्प की तरह कुंडली मारकर बैठ रहा है और चारों ओर का वातावरण केवल युद्ध की विषाक्त फूत्कार से दूषित हो रहा है । क्षण के मोह में पड़कर देश के प्रति और जनता के प्रति कर्तव्य को वह भूल जाता है । वह निजी जीवन में प्रेम और आनन्द का अमृत पान करता रहना चाहता है । उसका मंत्री चामुण्डराय उन्हें समझा देता है कि यदि शहाबुद्दीन गोरी की एक लाख बीस हज़ार से अधिक सैनिक को रोकने की कोई कोशिश जल्दी न की जायेगी तो प्रजाजन जो राजा से पहले ही असन्तुष्ट है अवश्य सोच बैठेंगे कि राजवंश में मुहम्मद गोरी का सामना करने का साहस नहीं । किसी भी कारण से चौहान अपने राजवंश पर कायरता का कलंक लगाना नहीं चाहते थे । अपनी भूल को पहचानकर चामुण्डराय को युद्ध की तैयारी करने का आदेश देते हैं । अल्वर और वियाणा के राजाओं में परस्पर प्रतिस्पर्धा है । महाराजा वियाणा इस बात पर कटिबद्ध है कि युद्ध में सर्वप्रथम नगाड़े उन्हीं के बजाये जाये । इन्हीं के बाद महाराजा अल्वर का तूर्य घोषित हो । अलवर चाहते हैं कि नगाड़ों पर चोट पड़ने से पूर्व युद्ध की घोषणा उन्हीं के तूर्य से हो । पृथ्वीराज चौहान अपनी बुद्धिमता से ऐसा फैसला लेता है कि महाराजा अलवर का तूर्य तथा

महाराजा विषाणा की नगाड़ा भी एक ही साथ युद्ध की घोषणा करे, ऐसा फैसला दोनों को ही स्वीकार था । युद्ध पर्व की बात सुनकर संयोगिता तनिक भी दुखित न होती और विवाह पर्व की उषा में युद्ध पर्व के रक्तिम रंग से अपना श्रृंगार करना ही चाहती है । यों वह अपने को एक वीर नारी सिद्ध कर लेती है ।

रामकुमार वर्मा ने इस महत्वपूर्ण तथ्य पर प्रकाश डाला है कि किसी भी देश की जनता का पारस्परिक विद्वेष और प्रतिस्पर्धा चिनगारी के समान है जो वीरता के लाक्षागृह को एक क्षण में भस्मीभूत कर सकती है ।

5. कृपाण की धार

अनादिकाल से नारी-शोषण का एक अन्तहीन सिलसिला है । सदियों से पुरुषमेधा समाज में नारी का शोषण हो रहा है । पुरुषों ने नारी को विलासिता का साधन माना था । अपने शयनकक्ष में श्रृंगार मानकर पुरुष निरीह नारी की अन्धश्रद्धा और समर्पण भावना के साथ खिलवाड़ करता था । रूप के पारखी पुरुष की लोलुप दृष्टि हमेशा नारी के देह सौन्दर्य पर टिकी रही । पुरुष ने नारी को घर की चहार दीवारियों पर बन्द रखना चाहा । लेकिन समय और परिस्थितियों के बदलते ही नारी अपने अधिकार को पहचानने लगी । दासता के बन्दनों को तोड़ने की कोशिश की । इस कोशिश में, इस वैज्ञानिक युग में भी वह पूर्ण रूप से सफल न निकली है । फिर

भी यह तो आशाजनक है कि पुरुष के शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाने का धैर्य और साहस नारियों ने अर्जित किया है । "कृपाण की धार" एकांकी शोषण की चक्की में बुरी तरह पिसी जानेवाली एक मासूम नारी की व्यथा की कथा है, साथ ही उस शोषण के हाथों अपने आपको बिना सौंपे उससे मुक्त होने के लिए किए गए संघर्ष की कथा भी है ।

गुप्त सम्राट रामगुप्त की कायरता एवं विलासिता का लाभ-उठाकर शकों ने उनके राज्य पर आक्रमण किया । युद्ध में परास्त होने पर वे सन्धि स्वरूप महादेवी ध्रुवस्वामिनी को मांगते है । महाराज यह सन्धि स्वीकार करते हैं । महादेवी को उपहार स्वरूप शकराज को भेंट करने में रामगुप्त तनिक भी न हिचकता है । शकराजा के साथ होनेवाली सन्धि में पत्नी को बलिदान देने का पति का फैसला जानकर ध्रुवस्वामिनी भौंचक्का रह जाती है और वंश मर्यादा की रक्षा के लिए क्रूर पति से याचना करती है । लेकिन राजा उसकी अवहेलना करती है । तब राजकुमार चन्द्रगुप्त वहाँ पहुँचता है । वह अपने भाई का विरोध करता है, कोई प्रतिक्रिया न देखकर स्वयं ध्रुवस्वामिनी का वेश धारण कर शकराज की उद्दंडता को दंड देने के उद्देश्य से शक शिविर जाता है ।

नारी में असीम शक्ति है जिसकी पहचान और परख खुद उसको करनी है । ध्रुवस्वामिनी के चरित्र के द्वारा वर्माजी ने यह सिद्ध किया है कि यदि नारी में अपने अस्तित्व को बनाये रखने की शक्ति है तो पुरुष उसका शोषण नहीं कर सकता । अपनी बेइज्जती करने वाले पति के शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाने की शक्ति उसमें थी । यही शक्ति उसकी मुक्ति का कारण बन गयी ।

6. चारुमित्रा

मौर्य सम्राटों में अशोक का चरित्र अत्यन्त उज्ज्वल है । साम्राज्य विस्तार उनका बडा स्वप्न था । इस मोह में पडकर उन्होंने अनेक राज्यों से युद्ध किया । लेकिन कलिंग पर किया गया आक्रमण अत्यन्त भयानक और विनाशकारी बन गया । इस युद्ध में लाखों वीर मारे गये । यह घटना अशोक के मनपरिवर्तन का कारण बन गया । कलिंग युद्ध वास्तव में अशोक के जीवन का एक नया मोड बन गया । डॉ. रामकुमार वर्मा ने अशोक को शासनकाल के पूर्वार्ध में अत्यन्त वीर एवं युद्ध प्रेमी राजा के रूप में और उत्तरार्ध में अहिंसावादी बौद्धमतावलंबी एवं सहिष्णु शासक के रूप में चित्रित किया है । अशोक की बदलती मानसिकता का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ही इस एकांकी की खासियत है । इसके साथ एकांकीकार का मुख्य उद्देश्य कलिंग कन्या चारुमित्रा की देश भक्ति और स्वामिभक्ति के संघर्ष को प्रस्तुत करना है ।

युद्ध प्रेम से त्रस्त तिष्यरक्षिता मन बहलाव के लिए चारुमित्रा से नृत्य करने को कहती है । नृत्य के लिए चारुमित्रा पैरों पर नूपुर पहनती है तब अशोक वहाँ पहुँचता है । अशोक इस भ्रम में पड़ जाते हैं कि कलिंग कन्या होने के कारण चारुमित्रा मन ही मन कलिंग का ही साथ देना चाहती होगी । इसके साथ ही चारुमित्रा के पैरों पर युद्ध काल में नूपुर को भी देखकर वह अत्यन्त क्रुद्ध हो जाता है । इस पर अशोक चारुमित्रा से अंगारों पर नाचने का दंड देते हैं । लेकिन यह जानने पर कि उसके ही अनुरोध पर वह नाच रही थी महाराज उसे क्षमा देते हैं ।

इसी बीच एक स्त्री सैनिकों द्वारा मारे गये अपने पुत्र का शव लेकर अशोक को कोसती हुई न्याय के लिए उनके पास आती है । अपने बेटे की लाश पर पड़कर बिलख बिलखकर वह रो रही थी, वह अशोक से यह जानना चाहती थी कि उसके निरीह बच्चे ने क्या बिगाड़ा जिसके कारण अशोक के बर्बर सिपाहियों ने बच्चे के फूल से कलेजे में भाला घुसेड़ दिया । अशोक न्याय के लिए कटिबद्ध है । लेकिन राजा के न्याय पर विश्वास न होकर वह स्त्री आत्महत्या करती है । यह नारी अशोक के सारे साम्राज्य को तुच्छ सिद्ध कर देती है । उसकी खुदखुशी ने अशोक का ध्यान संग्राम में मरे हुए लाखों वीरों की माताओं की ओर आकर्षित कर दिया । इस घटना के साथ ही चारु के अचानक घायल हो जाने का समाचार भी मिलता है और उपगुप्त चारु के मृत शरीर लिए हुए उपस्थित होते हैं । ये दोनों घटनायें अशोक के मनपरिवर्तन का कारण बन गया और अशोक ने उपगुप्त के समक्ष अहिंसाव्रत का संकल्प ले लिया ।

चारुमित्रा को इस बात पर बहुत अधिक दुःख हुआ कि महाराज ने उस पर सन्देह किया । महाराज की सेवा उसने गहरी श्रद्धा और भक्ति से की थी । फिर भी महाराज ने उसे विश्वासघातिनी कहा । अशोक के इस सन्देह को वह अपनी जान की बलि देते हुए ही मिटा देती है । अशोक के शिविर में उन पर आक्रमण करने के लिए छिपकर बैठे कलिंग सैनिकों को वह पहचान लेती है, सैनिकों के साथ हुए संघर्ष में वह बुरी तरह घायल हो जाती है । लेकिन अपने स्वामी की जान बचा सकती है । दरअसल चारुमित्रा ने संसार के सामने यह घोषित कर दिया कि एक नारी में कितनी शक्ति है कितनी क्षमता है ।

7. दीपदान

राजस्थान के इतिहास के पन्नों में राजपूत नारियों की वीरता सुवर्ण लिपियों में अंकित है । राजपूत नारियों के नसों में कायरता का खून कभी नहीं बहा था । वह रण भूमि पर चढना चाहती थी, चिता पर कूदना चाहती थी, व्यक्तिगत प्रेम और ममता को बलि देते हुए समूचे राष्ट्रहित चाहती थी । इस एकांकी में वर्माजी ऐसी एक राजपूतनी के व्रत से हमारा परिचय कराते हैं ।

अधिकार लिप्सा के मोह में बनबीर ने राजा विक्रमादित्य की हत्या कर डाली । फिर उसने महाराणा साँगा के सबसे छोटा पुत्र कुंवर उदयसिंह का वध करने का षड्यन्त्र रचा । इस प्रयत्न के असफल होने पर वह स्वयं तलवार लेकर कुंवर उदयसिंह की हत्या करने आता है । कुंवर की संरक्षण करनेवाली उसकी धाय माँ पन्ना किसी न किसी प्रकार कुंवर की जान बचाने की तरकीबें ढूँढती है । वह अच्छी तरह जानती है कि बनवीर जंगली पशु से भी गयाबीता है उससे अनुनय विनय करने से, युद्ध करने से, कुंवर के प्राण की भीख माँगने से कोई फायदा नहीं होगा । अंत में वह अपने मातृहृदय पर पत्थर रखकर आखिरी फैसले पर पहुँचती है । राजकुल के दीपक कुंवर उदयसिंह के मूल्यवान प्राण की रक्षा के लिए वह अपने पुत्र चन्दन को कुंवर की सेज पर सुलाती है । फिर उसे कोरतवारी की टोकरी में लिटाकर ऊपर से जुठी पत्तल डालकर महल से बाहर चले जाने को कहती है । बनवीर के आने पर चन्दन को कुंवर समझकर उस पर कटार मारकर चला जाता है ।

अपने बच्चे की बलि देते हुए तथा पराये बच्चे की रक्षा करते हुए वह एक राजवंश को सदा के लिए डूबने से बचा रही थी । बच्चे को पालनेवाली, लोरियाँ सुनानेवाली एक साधारण दासी के स्तर से वह ऊपर उठ गयी है, एक राजपूत नारी के यश में चार-चाँद उसने लगा दिया है । राजवंश की रक्षा में उसने अपने दिल के टुकडे की बलि देकर एक राजपूत नारी की मर्यादा का पालन कर रही थी ।

8. स्वर्ण श्री

भारत में जब राजकाज अपने स्वार्थ की छाया में ऊँघते रहे और सैनिक राजसिंहासन के नीचे गढे हुए सिंहों की तरह निर्जीव और शोभा की वस्तु रह गये तब अनेक निरपराध नारियों यवनों द्वारा अपमानित हुई । लेकिन समय बदलते ही प्रजा यह समझने लगी कि निरपराध नारी को लांछित करनेवाले अत्याचारी को उचित दंड देना प्रजा का कर्तव्य है । सम्राट बृहद्रथ के काल में भी ऐसी एक घटना हुई । सम्राट बृहद्रथ प्रजा से अधिक यवन को सम्मान देते थे । बृहद्रथ ने यवन सेल्यूकस के मनोरंजन केलिए भारतीय निरीह नारियों को साधन माना । लेकिन समाज उनके विरुद्ध संघर्ष करने लगे । इस राजद्रोह के लिए सम्राट को उचित दंड भी दिया ।

एक दिन धारिणी नामक एक नारी महाकान्तार से लौट रही थी कि तेलियस नामक एक यवन ने उसे पीछे से पकडना

चाहा । तब सम्राट बृहद्रथ इन्द्रगज पर बैठकर वन विहार केलिए जा रहे थे । अपनी रक्षा केलिए उसने सम्राट को पुकारा । लेकिन सम्राट ने उसकी रक्षा नहीं की । बल्कि तेलियस के सम्मुख आत्मसमर्पण न करने के कारण उसे बन्दी बनाया । यह घटना सुनकर उसकी माँ ने सिंहद्वार से अपना सिर टकरा लिया और उनके सिर से रक्त बहने लगा । इसलिए जनता उनके विरुद्ध विद्रोह मचाने लगी । इस पर बिना ध्यान दिये सम्राट तेलियस की प्रसन्नता के लिए सेनापति पुष्यमित्र से धनुर्विद्या प्रदर्शन करने को तथा धारिणी से नृत्य करने की आज्ञा देते हैं । जिससे पुष्यमित्र क्रुद्ध हो जाते हैं । लेकिन अपना क्रोध बाहर न दिखाकर वह सम्राट की आज्ञा स्वीकार करते हैं । शिविर भूमि में लक्ष्य केन्द्र पर चारों दिशाओं में चार सुलगते हुए काष्ठ-दंड रखते हैं जिनके ऊपरी भागों को अंगारों का रूप है । बाणों की गति से कंपित वायु उन अंगारों से ज्वालायें निकलती है । सबसे पहले पूर्व दिशा के काष्ठ दंड से ज्वाला निकलती है फिर उत्तर दिशा से और पश्चिम से भी ज्वाला उठती है । दक्षिण दिशा से ज्वाला उठाने के संबन्ध में एक राजाज्ञा है । वह यह है कि यह बाण दक्षिण दिशा के काष्ठ-दंड से ज्वाला उत्पन्न करते हुए वृद्धा के मस्तक को बेध करना है जिसने अपने रक्त से राज्य के सिंहद्वार को कलंकित किया है । सेनापति समझते हैं कि सिंहद्वार को कलुषित करने का अपराध सम्राट ने किया है । इसलिए पुष्यमित्र जनता की सहमति से चौथे बाण का प्रयोग बृहद्रथ के मस्तक पर करते हैं । इस मस्तक के रक्त से पाटलीपुत्र में स्वर्ण और श्री की प्रतिष्ठा होती है ।

9. कलंकरेखा

राजस्थान के इतिहास के पन्नों में असंख्य अमर बलिदान की कथायें भरी पड़ी है । राजस्थान के जौहर की ज्वाला वहाँ की वीर नारियों के तेज़ के समक्ष फीकी पड गयी है । ऐसी वीरता का यशोगान करते हुए बहुत नाटक और एकांकियों की रचना हुई है । लेकिन इस वीरता के अन्दर छिपे हुए कलंक को देखने परखने की कोशिश विरले ही नाटककारों ने की हैं । रामकुमार वर्मा की मौलिकता इस बात में है कि उन्होंने सिसोदीया वंश के साहस, धैर्य, और वीरता के तह में जो कायरता थी उसको इस एकांकी में स्पष्ट कर दिया है ।

उदयपुर के महाराणा भीमसिंह अपनी पुत्री कृष्णकुमारी का विवाह-संबन्ध जयपुर के महाराजा जगतसिंह के साथ करने का निश्चय लेता है । लेकिन इसके विपरीत जोधपुर के महाराणा मानसिंह यह विवाह संबन्ध स्वयं से करना चाहते हैं । अमीरखां जो पहले उदयपुर नरेश का सहायक था, जो बाद में जोधपुर नरेश का मित्र बना, एक बडी सेना के साथ उदयपुर की सीमा पर आता है तथा भीमसिंह को यह चुनौती भेजता है कि या तो कृष्णकुमारी का विवाह मानसिंह से किया जाए नहीं तो युद्ध के लिए प्रस्तुत हो जाए ।

राजा नहीं चाहते हैं कि अपने परिवार के एक व्यक्ति की रक्षा के लिए अपनी निरपराध प्रजा के सहस्रों वीरों का बलिदान कर दे । वे अपने माथे पर यह कलंक लगाना नहीं चाहते हैं कि उसने पुत्री के मोह में अपनी मातृभूमि के पवित्र मस्तक पर शत्रुओं के पैरों के चिह्न

लग जाने दिया । चूड़ावत अजितसिंह का सुझाव मानकर उसने अपने भाई जगतसिंह को बेटी कृष्णकुमारी की हत्या केलिए नियुक्त किया । लेकिन वह सफल न हुआ । सारी बातें जानकर कृष्णकुमारी अपने माता पिता की चिन्ता दूर करने के लिए स्वयं हलाहल पीती हैं । यों कृष्णकुमारी का जौहर विष की ज्वाला में हुआ ।

कृष्णकुमारी की इस बलिदान को रामकुमार वर्मा सारे राजस्थान के लिए एक कलंकरेखा मानते हैं, जिसे उन्होंने एकांकी में शक्तावत सरदार संग्रामसिंह के शब्दों से स्पष्ट किया है । उसकी राय में राजकुमारी कृष्णा ने राजपूतों को कायरों और नपुंसकों की तरह समझा है, महाराणा भीमसिंह ने अपनी पुत्री की हत्या में भी शामिल किया है । संग्रामसिंह को सबसे बडा दुःख इस बात में है बेचारी कृष्णा के मरने से उदयपुर हमेशा के लिए सुरक्षित भी नहीं हो गया है । एक महाराणा का अदूरदर्शी निर्णय एक अबोध बालिका की हत्या में परिणत हो गया ।

एकांकीकार ने यह सिद्ध किया है देश की राजनीति की ज्वाला बहुत खतरनाक है । इस ज्वाला में असंख्य निरीह नारियों की कोमल भावनायें बुरी तरह झुलस गई है और झुलसती भी जा रही है ।

व्यक्तिगत लाभ के लोभ में पडकर समूचे देश में आग लगानेवाले अमीरखाँ और जयपुर नरेश मानसिंह जैसे लोग दरअसल देश की भलाई की कुर्बानी करते हैं । महाराणा मानसिंह का उदयपुर नरेश भीमसिंह के सहायक अमीरखाँ को घूस देकर अपनी तरफ मिला लेना उनकी स्वार्थ लिप्सा का स्पष्ट प्रमाण है ।

रामकुमार वर्मा ने एकांकी में मनोवैज्ञानिक आधार पर ही घटनाओं और पात्रों को पिरोया है ।

10. रात का रहस्य

अधिकार के लिए अजातशत्रु के द्वारा किया गया संघर्ष इतिहास में विशेष उल्लेखनीय है । यह घटना ई.पू. ५४८ की है । "रात का रहस्य" एकांकी में इस संघर्ष का चित्र अच्छी तरह से प्रस्तुत है । शासनकाल के पूर्वार्ध में वह सिंहासनकांक्षी, पितृविरोधी एवं क्रूर राजा के रूप में चित्रित है । लेकिन जब उन्हें पुत्रप्राप्ति होती है तब उसका मनपरिवर्तन होता है । अपने सभी क्रूर कृत्यों के लिए पिता से क्षमायाचना करते हैं । इस एकांकी के द्वारा लेखक यह तथ्य प्रस्तुत करना चाहता है कि महत्वाकांक्षा तथा राज्य लालसा के कारण मनुष्य के मन में मनुष्यता का अंश नष्ट हो जाता है । लेकिन परिस्थितिवश उनमें हृदय की कोमल भावना उभरकर आती है । इसके संबन्ध में बिम्बसार का कथन है "अहंकार के अभिशाप का नाम तो सम्राट है । जैसे फूलों के चारों ओर एक काँटों की बेल हो । यह महत्वाकांक्षा की अमरबेल है, जो बड़े से बड़े राज्य पर चढ जाती है और राज्य को दबा देती है ।"[1]

मगध सम्राट बिम्बसार की छोटी रानी है छलना । अपने पति के जीवन काल में ही वह अपने पुत्र अजातशत्रु को सिंहासन पर

---

1. इतिहास के स्वर । - रामकुमार वर्मा - पृ. 26

बिठाना चाहती है । आन्तरिक संघर्ष को मिटाने के लिए बिम्बसार सिंहासन पद छोडकर बडी राणी वासवी के साथ एक कुटी में रहते हैं । लेकिन छलना की कुमन्त्रणाओं के कारण अजातशत्रु अपने पिता और विमाता को सन्देह दृष्टि से देखते हैं, उनकी कुटी पर सैनिक नियंत्रण रखता है, तथा उन्हें भोजन भी न देता है । एक भिखारिनी को भीख देने के कारण वह अपने माता-पिता को मृत्युदंड भी देता है । बिम्बसार और वासवी प्राणदण्ड स्वीकार करते हैं । इतने में एक सैनिक आकर सूचना देता है कि अजातशत्रु को पुत्र प्राप्ति हुई है । यह सुनकर बिम्बसार आनन्दातिरेक से मूर्छित हो जाता है । अजातशत्रु आकर अपने माता-पिता से क्षमा याचना करता है, किन्तु क्षमा याचना करने के लिए जब वह चरणस्पर्श करता है तब उसे ज्ञात होता है कि कुछ देर पहले ही पिता मर गए । वह पश्चाताप और दुःख से रोता है ।

अजातशत्रु के चरित्र में दुर्वृत्तियों का सद्वृत्तियों में परिवर्तन दिखलाया गया है । जीवन के अन्तिम क्षण में भी बिम्बसार के मन में अपराधी अजातशत्रु के प्रति वात्सल्य भाव दिखाई पडता है । यह वात्सल्य भाव अजातशत्रु के मन परिवर्तन का कारण बन गया । जब वह एक पिता बन जाता है तब उसके मन में पिता के प्रति कर्तव्यभावना उठती है तथा उनके द्वारा किये गये सभी दुष्कृत्यों का पश्चाताप भी होता है ।

।।. क्रान्तिदूत शास्त्री

यह एक ध्वनिरूपक है । इसमें लालबहादुर शास्त्री के जीवनचरित से संबन्धित विशेषतायें प्रस्तुत करते हैं ।

बाल्यावस्था में पैसे की कमी के कारण शास्त्रीजी को बहुत अधिक कष्टताऐं भोगनी पडी । स्कूल जाते समय वे तैरकर गंगा पार करते थे, तेल और साबून खरीदने को उनके पास पैसा न था । इसलिए पूरा बाल कटवा डाला । भारत की स्वतन्त्रता के लिए उन्हें कई बार जेल जाना पडा । पूरा जीवन देश सेवा के लिए अर्पित करने को वे तैयार थे । इसलिए विवाह करने की उन्हें कुछ भी चाह नहीं थी । लेकिन माँ के अनुरोध के कारण उन्हें विवाह करना पडा । भारत की स्वातन्त्रता प्राप्ति के बाद उत्तरप्रदेश के परिवहन और गृहमंत्री के पद से वे अखिल भारतीय कांग्रस के महामंत्री बन गये । इसके उपरान्त वे राज्यसभा में निर्वाचित होकर रेलमंत्री नियुक्त हुए । सन् 1956 में अरियालूर रेल दुर्घटना में अपने को दोषी मानकर इस्तीफा दी । दूसरे निर्वाचन में वाणिज्य और उद्योगमंत्री बने । तीन वर्ष के बाद सन् 1962 में वे केन्द्रीय गृहमंत्री बन गये । जवाहरलाल नेहरू जी की मृत्यु के बाद नौ जून उन्नीस सौ चौंसठ को वे प्रधानमंत्री बन गये । कुछ समय बाद पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया । शास्त्रीजी पूरे धैर्य एवं साहस के साथ अपने देशवासियों को आश्वस्त करते रहे । युद्ध चलते रहते थे । अंत में भारत के प्रतिनिधि जनाब आयूब खाँ ने ताशकंद समझौते पर हस्ताक्षर किये । इस समझौते के अगले दिन यानी ग्यारह जनवरी उन्नीस सौ छियासठ को उनकी मृत्यु हुई ।

लालबहादुर शास्त्री के व्यक्तित्व के कई उज्वल पक्षों को रामकुमार वर्मा ने प्रस्तुत एकांकी में उजागर कर दिया है । बचपन से लेकर ज़िन्दगी की किसी भी प्रतिकूल परिस्थिति का सामना करने की शक्ति शास्त्रीजी में थी । रेलमंत्री के रूप में रहते समय हुई रेलदुर्घटना का नैतिक दायित्व अपने ऊपर लेते हुए शास्त्रीजी का इस्तीफा देना इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि उनके मन में पद ओहदे के प्रति लालच नहीं था और जनता के प्रति अपनी कर्तव्यभावना की पूर्ति करने की अदम्य लालसा थी ।

12. बापू

यह एक ध्वनि प्रधान एकांकी है । प्रस्तुत एकांकी का उद्देश्य बापू की नीतियों का दिगदर्शन कराना एवं जनमानस पर बापू का प्रभाव स्पष्ट करना है । बापू युग पुरुष है । उन्होंने अनेक कठिनाइयों को कुचलते हुए भारत को अंग्रेज़ों से स्वाधीनता दिला दी । बापूजी सत्य, अहिंसा आदि तत्वों में अडिग रहे । बापूजी ने हमें चरखे का महत्व समझाया । समाज के प्रत्येक वर्ग में जीवन की प्रत्येक विधा में बापू का प्रभाव है ।

उमेश का मित्र संतोष मरीज होकर बिस्तर पर लेटे हैं । इसलिए उमेश उन्हें किसी डाक्टर को दिखाना चाहता है । लेकिन संतोष कहता है "मन की शक्ति से, राम की शक्ति से मेरी बीमार दूर हो जाएगी ।"[1]

---

1. मयूरपंख - रामकुमार वर्मा - पृ. 199

दयाराम एक आदमी का खून कर भागता है, पुलीस उसे पकड लेता है । लेकिन उस गाँव के एम एल ए संकटा प्रसाद उसे पुलीस के हाथ से छुडाना चाहता है । संकटा प्रसाद की यह माँग पुलीस अस्वीकार करता है । इन्स्पेक्टर कहते है - "दयाराम ने खून किया है, उसकी सजा उसे मिलनी चाहिए ।"[1]

शान्ता चरखा चलाती है । उसका पति नरेश उसे चरखा चलाने पर आक्षेप करता है । तब शान्ता कहती है - भारत की सोलह करोड स्त्रियाँ जो बेकार बैठी रहती है । एक दिन में पचास गज भी सूत कातें तो प्रतिदिन आठ अरब गज सूत तैयार हो जिससे देश की बचत हो और विदेशी माल न मंगाना पडे ।

हिन्दु कहता है - इस देश में हमारी संख्या सबसे अधिक है । इसलिए राज्य का अधिकार हम लोगों को मिलना चाहिए । मुसलमान कहता है -"कदीम जमाने से हमारी सल्तनत इस मुल्क में रही है । यह लालकिला, यह ताजमहल, यह फतेहपुर सीकरी, यह कुतुबमीनार, हमारी इमारतें हैं । आज इस्लाम खतरे में है । हम अपनी सारी कुब्बत लगा देंगे लेकिन अपने हकूक अपने हाथों से नहीं जाने देंगे ।"[2] सिख कहता है - "जो हिन्दुस्तान को जीतने में अगर कोई फौज लडी है वे सिखों दी फौज ए । दिली शहर ते पिशौर नू हमारी फौज ने दुश्मनों के छके छुडाए । अगर मुसलमान लोग पाकिस्तान दे नारे बुलन्द करते हैं तो हमारा सिकिस्तान बनेगा ।"[3] निर्देशक कहते हैं अंग्रेज़ों ने देश में भेद के बीज बो दिए । लेकिन

---

1. मयूर पंख - डॉ रामकुमार वर्मा - पृ. 203
2. मयूर पंख - डॉ रामकुमार वर्मा - पृ. 207
3. मयूर पंख - डॉ. रामकुमार वर्मा - पृ. 207

बापू ने देश की सभी विपत्तियाँ दूर कर दी और स्वतन्त्रता प्रदान की ।

बिखरे हुए कुछ प्रसंगों के माध्यम से एकांकीकार गांधीवाद के सुनहले पहलुओं को प्रस्तुत करना चाहते हैं । भगवान राम के प्रति विश्वास, ईमानदारी, स्वदेशी चीज़ों का उपयोग, स्वावलंबन की महत्ता, अहिंसा, मन की ताकत, जातीय एकता आदि तत्वों पर गाँधीजी ज़ोर देते थे ।

13. ध्रुवतारिका

अनेक राजपूतों ने अपने रक्त की पवित्रता के लिए भयानक युद्ध किये हैं । राजवंश की मर्यादा केलिए अपने को बलिदान किया है । उन्हें राष्ट्रप्रेम तथा राजवंश की मर्यादा व्यक्तिगत रुचि की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण थे। राजस्थान के इतिहास में शरीर का जौहर अनेक हुए हैं लेकिन मन का जौहर यह सबसे पहला है । अकबर की पुत्री सफीयत उन्नीसा अपने मन का जोहर कर राजस्थान के क्षितिज पर एक ध्रुवतारिका बन गयी ।

अकबर की पुत्री सफीयत उन्नीसा मारवाड़ के यशस्वी सेनापति दुर्गादास के संरक्षण में पोषित होती है । मेवाड के राजा जसवंतसिंह के मृत्योपरांत उनके पुत्र अजीत सिंह की सुरक्षा का भार भी उन्हें सौंप देते हैं । बाद में अजीत सिंह और सफीयत उन्नीसा आपस में आकृष्ट होते हैं तथा गान्धर्व विवाह करने का निश्चय लेते हैं । गान्धर्व विवाह के लिए जब अजीतसिंह मोती की माला सफीयत के गले में डालने को हाथ उठाते हैं तब सेनापति आकर तलवार से रोक लेते हैं । इस पर अजीतसिंह क्रुद्ध हो जाते हैं । किन्तु सफीयत उन्नीसा भारतीय गौरव की रक्षा हेतु अपने प्रेम का बलिदान कर देती है । अजीतसिंह को भाई मान लेती है ।

14. दुर्गावती

शक्ति और सौन्दर्य की सम्मिलित सृष्टि का नाम दुर्गावती है । उसकी तेजस्विता के सम्मुख संसार का समस्त सौन्दर्य झूठा है और उसकी अपरिमित शक्ति नारी जगत की मुकुट श्री है । जन्म भूमि के लिए अपनी जान हथेली में रखकर लडनेवाली एक आदर्श नारी के रूप में उसका चित्रण हुआ है ।

गढामंडले के राजकुमार वीरनारायण एवं दीवान आधारसिंह के समक्ष हाथियों का प्रदर्शन होता है । वीरनारायण हाथियों को देखकर उनके सौन्दर्य का वर्णन करते हैं । लेकिन दीवान आधारसिंह इन हाथियों में महाराणी के प्रिय हाथी महेन्द्रगज को न देखकर घबराता है । आधारसिंह को महेन्द्रगज के खो जाने पर किसी षड्यंत्र का आभास प्रतीत होता है । तभी नवाब आसफ खाँ के दूत हैदरअली आकर यह सूचना देता है कि तीन दिन के अन्दर महेन्द्रगज आसफ खाँ को सौंपना चाहिए नहीं तो वे स्वयं सेना सहित आयेंगे । उस समय एक सैनिक गंडासेन को बन्दी बनाकर ले आता है और कहता है कि इसी ने महेन्द्रगज को चुराकर सालवन में छिपा दिया है । रानी दुर्गावती यह भी जानती है कि हैदरअली को भी इस षड्यंत्र में हाथ है । रानी जब हैदरअली से महेन्द्रगज के गायब होने के संबन्ध में पूछताछ करती है तब हैदरअली की टोपी से एक कागज़ का टुकडा नीचे गिरता है । यह पढकर ज्ञात होता है कि नवाब आसफ खाँ ने रानी को प्रणय सन्देश भेजा है । रानी क्रुद्ध होकर आसफ खाँ से युद्ध का आह्वान देती है ।

मध्ययुगीन आक्रमणों में गढ़ामंडले की रानी दुर्गावती पर किया गया आक्रमण विशेष उल्लेखनीय है । रानी दुर्गावती को अकेली और अबला समझकर कड़ा मनिकपुर का पंजहज़ारी नवाब आसफ़खाँ उसके राज्य को हजम करना चाहता है । उसके लिए वह एक षड्यंत्र रचता है । लेकिन दुर्गावती की राजनीति में षड्यंत्र को कोई स्थान नहीं है । वह षड्यंत्रकारियों को प्राणदंड देना चाहती है । दुर्गावती मर्यादा पालन में विश्वास रखती है । वह हैदरअली से कहती है "नारी की शक्ति उसकी तपस्या में है । दुर्गावती तपस्विनी है । उसे बहन समझोगे तो उन्हें मैं आशीर्वाद दूँगी पर यदि कोई उन्हें मैली दृष्टि से देखें तो उन्हें मैं आग में जलाऊँगी और अगर नहीं जला सकी तो स्वयं जलकर भस्म हो जाऊँगी ।"[1]

15. समुद्रगुप्त पराक्रमांक

समुद्रगुप्त की न्यायप्रियता, सूक्ष्म प्रतिभा एवं बुद्धि-कुशाग्रता लोकप्रिय हो रही थी । संगीत के प्रति उनके मन में बहुत बड़ा लगाव था । समुद्रगुप्त न्याय का समर्थक है और उस न्याय की प्रतिष्ठा में वह मरण को भी पर्व मानता है । राजनैतिक अन्तर्दृष्टि के साथ ही साथ कलात्मकता की अभिरुचि रखते थे । उनका यह दृष्टिकोण साधारण जन के दृष्टिकोण से भिन्न था । डॉ. वर्मा ने प्रस्तुत एकांकी में समुद्रगुप्त की न्यायप्रियता का एक उदाहरण दिया है ।

---

1. रजतरश्मि - डॉ. रामकुमार वर्मा - पृ. 107

एक बार बोध गया में एक विशाल मठ बनाने तथा भगवान बुद्ध की रत्नजटित स्वर्ण प्रतिमा-निर्माण करने का कार्य शुरू होता है । सिंहल की राजमहिषी कुमारिला, धवलकीर्ति नामक एक दूत के हाथों दो हीरक खण्ड इस अनुरोध से समुद्रगुप्त पराक्रमांक को भेज देती है कि वे भगवान बुद्ध की प्रतिमा के अंगुष्ठ नखों के स्थान पर विजडित हो । भंडागार का अधिकरण मणिभद्र उन दोनों हीरक खण्डों को भंडागर में सुरक्षित रखना है । किन्तु भण्डागार से उनकी चोरी होती है । यह घटना सुनकर सम्राट बडे उद्विग्न होकर धवलकीर्ति एवं मणिभद्र के सम्मुख प्रतिज्ञा करता है कि यदि वे उन रत्न खंडों की खोज न कर सकें तो राज्याधिकार का ध्यान छोडकर भगवान बुद्ध की प्रतिमा के सम्मुख कठोर प्रायश्चित करेंगे । इसलिए मणिभद्र अत्यन्त व्यथित होकर सम्राट से मृत्यु दंड माँगते हैं । मणिभद्र को निरपराध समझकर सम्राट राजदूत धवलकीर्ति, बुद्ध प्रतिमा के शिल्पी घटोत्कच, वीरबाहू आदि से पूछताछ करते हैं । राजदूत धवलकीर्ति की कला के प्रति विशेष अभिरुचि जानकर सम्राट को शंका उत्पन्न होती है । उनकी परीक्षा करने के लिए सम्राट अपनी राजनर्तकी रत्नप्रभा से नृत्य करने का आदेश देते हैं और सम्राट स्वयं वीणावादन करते हैं । सम्राट की मधुर वीणा की दिव्य अनुभूति से राजनर्तकी नृत्य करती है । उनके इस नृत्य से प्रभावित होकर सम्राट अपने गले से मोती की माला उतारकर देते हैं । तब रत्नप्रभा अपना अपराध स्वीकार कर धवलकीर्ति द्वारा उन्हें भेंट किये दो हीरक - खंड सम्राट के चरणों में समर्पित करती है । धवलकीर्ति अपना अपराध स्वीकार कर दंडस्वरूप स्वयं अपने हृदय में कटार भोंककर जीवन समाप्त कर देता है ।

अपनी प्रखर बुद्धिमता एवं गानविद्या के प्रयोग से समुद्रगुप्त वास्तविक अपराधी को खोज निकालते हैं । महाराज की वीणा में झंकृत राग केदारा का स्वर सबका मन पवित्र कर देता है ।

हृदय में समस्त विकार शान्त हो जाते हैं और राजदूत धवलकीर्ति अपना दोष स्वीकार कर लेता है । फिर पश्चाताप की अग्नि में दग्ध होकर वह आत्महत्या करता है ।

16. राज्य श्री

डॉ. रामकुमार वर्मा को भारतीय संस्कृति के प्रति बड़ी आस्था है । ऐतिहासिक चरित्रों के विविध गौरवशील तत्वों को प्रकाशित कर विश्वप्रेम, भ्रातृ-प्रेम, नैतिकता और चरित्र गरिमा को प्रतिष्ठित करना उनका उद्देश्य रहा है । सम्राट हर्षवर्धन का चरित्र पुराणों की अमूल्य संपत्ति है । प्रस्तुत एकांकी हर्षवर्धन के भगिनी प्रेम की एक झांकी प्रस्तुत करता है । राज्य श्री हर्षवर्धन की बहन एवं कनौज नरेश गृहवर्मन की पत्नी थी । पति की मृत्यु के पश्चात् हर्षवर्धन ने इसे सती होने से रोककर जीवन भर इसकी सुरक्षा एवं सेवा की ।

पिता की मृत्यु, जननी यशोमती का अग्निप्रवेश भगिनी-पति गृहवर्मन का वध, जेष्ठबन्धु राज्यवर्द्धन की हत्या और बहन राज्यश्री का कारागृह आदि कारणों से सम्राट बहुत दुखी बन जाते हैं । अपने परिवार के सभी लोग खो जाने पर हर्षवर्धन का एकमात्र सहारा अपनी बहन राज्यश्री बन जाती है । लेकिन गृहवर्मा के वध के बाद मालव नरेश देवगुप्त महादेवी राज्यश्री को लौह श्रृंखलाओं में कसकर कारागार में डालते हैं । एक दिन वह कारागार से छिपकर भाग

जाती है और विन्ध्याटवी में आ पहूँचती है । यह सूचना मिलकर सम्राट हर्षवर्धन अपनी बहन को खोजने निकलते हैं । अंत में वह विन्ध्याटवी आश्रम में आचार्य दिवाकर के पास पहूँचते हैं । वहाँ सम्राट, आचार्य के सत्कार स्वीकार करते हुए बैठे वक्त शिप्रा नामक एक स्त्री पहूँचती है । वह आचार्य से एक विधवा नारी के अग्निप्रवेश की बात कहती है तथा उसे अग्निप्रवेश से बचाने का अनुरोध करती है । यह सुनकर सम्राट हर्षवर्धन अपने सैनिकों के साथ वन की ओर भागते हैं । वनप्रान्त में वह राज्यश्री से मिलते हैं । तब राज्यश्री अग्निप्रवेश के लिए तैयार होकर खडी रही थी । अपनी बहन को देखकर सम्राट हर्षातिरेक से सब कुछ भूल जाते हैं । उन्हें अग्निप्रवेश से बचाती है । लेकिन राज्यश्री सुख जीवन छोडकर काषाय वस्त्र पहनकर तपस्विनी बनने की चाह प्रकट करती है । किन्तु सम्राट हर्षवर्धन अपनी बहन को सांत्वना देते हुए यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने सभी शत्रुओं को पराजित करके दोनों एक साथ काषाय वस्त्र पहनेंगे ।

17. कौमुदी महोत्सव

कोई भी शासन केवल शक्ति के बल पर स्थिर नहीं रह सकता । उसके लिए बुद्धि या युक्ति का सहयोग आवश्यक है । चन्द्रगुप्त वीर, साहसी, मर्यादप्रिय, धीरोदात्त नायक है । चन्द्रगुप्त की शक्ति और चाणक्य की कूटनीति के समन्वय से चन्द्रगुप्त राजा बना और अपने साम्राज्य का विस्तार भी कर सका ।

नन्द पर विजय प्राप्त करने के बाद चन्द्रगुप्त मगध सम्राट बनता है और विजय की खुशी में शरद पूर्णिमा के अवसर पर कौमुदी महोत्सव मनाने की घोषणा करता है । वसुगुप्त इस आयोजन का सारा भार उठाता है । देश के चारों ओर दीपों से अलंकृत करने को वे निर्देश देते हैं । फिर सम्राट चन्द्रगुप्त को प्रसन्न करने के लिए नृत्य की तैयारी करते हैं । नृत्य करने के लिए अलका वहाँ पहुँचती है । लेकिन यह आयोजन देखकर यशोवर्मान के मन में किसी षड्यंत्र का सन्देह पैदा होता है । इसलिए वह इस महोत्सव के अवसर पर चाणक्य को भी आमंत्रित करता है । अलका नृत्य करती है । उनके सुन्दर नृत्य से प्रभावित होकर सम्राट उन्हें मोती की माला पुरस्कार देते हैं । तब चाणक्य वहाँ पहुँचते हैं और माला देने से उसे इनकार करते हैं । यह भी नहीं वसुगुप्त तथा अलका को बन्दी बनाने की भी आज्ञा देते हैं । चन्द्रगुप्त यह अपना अपमान समझकर चाणक्य को अपने राज्य से चले जाने की आज्ञा देते हैं । लेकिन जाने से पूर्व अलका और वसुगुप्त के संबन्ध में जो दोषारोपण है वह प्रमाणित करने को भी माँगते हैं । बात की सच्चाई देने के लिए चाणक्य वसुगुप्त को आसव पिलाते हैं । आसव पीते समय ही वसुगुप्त की मृत्यु होती है । फिर अलका को बन्दी बना लेती है । अलका और वसुगुप्त राक्षस के गुप्तचर है । अलका विषकन्या है । वे षड्यंत्र से सम्राट का वध करना चाहते थे । सम्राट के सम्मुख यह सच्चाई प्रमाणित करने के बाद चाणक्य राज्य छोडकर चला जाता है ।

अन्त में चन्द्रगुप्त समझता है कि एक शासक चाहे वह जितना ही चतुर, पराक्रमशाली या वीर क्षत्रिय हो, वह मात्र अपनी वीरता

के बल पर देश में सुशासन की स्थापना नहीं कर सकता, बल्कि उसके लिए दूरदर्शिता, बुद्धि एवं शक्ति का सहयोग अनिवार्य है ।

18. विक्रमादित्य

प्रस्तुत एकांकी में उज्जयिनी के शासक विक्रमादित्य की न्यायप्रियता का वर्णन है ।

शकों के गुर्जर आक्रमण के अवसर पर उज्जयिनी की पुष्पिका शकों के हाथ में पड गई । फिर उन्हें अन्य बन्दियों के साथ वध स्थान ले गए, उस समय शक राजकुमार ने पुष्पिका को शकों के हाथ से बचाया । तब विक्रमादित्य अपने पराक्रम के बल पर मालवा, गुर्जर और सौराष्ट्र से शकों को निर्वासित कर रहा था । लेकिन शक राजकुमार पुष्पिका को छोडकर जाने को तैयार नहीं हुआ । उसने गुर्जर में ही रहने का निश्चय किया । किन्तु पुरुष वेश में रहना उसके जीवन के लिए संकट का कारण होता, इसलिए वह स्त्री वेश धारण कर वहाँ रहने लगा । दुर्भाग्य से गुर्जर में लोगों की सन्देह दृष्टि उस पर पड़ी । इस समय पुष्पिका को उज्जयिनी जाना पडा, तब शकराजकुमार भी पुष्पिका के साथ उज्जयिनी में आया । उज्जयिनी में रहते समय राजा विक्रमादित्य को राजकुमार का पता मिला । इस अपराध के लिए राजा ने पुष्पिका एवं शक राजकुमार को दंड देने का निश्चय किया । राजकुमार के दोनों हाथ काटने की और पुष्पिका को दो महीने कारावास में डालने की आज्ञा दी गई । पुष्पिका अपने उपकार कर्ता की यह दुर्दशा सह नहीं सकती । इसलिए उसने राजा से

क्षमा माँगी । राजा अपने निश्चय से नहीं हटे । राजा की आज्ञा के अनुसार वधिक आया और हाथ काटने को तलवार उठाया । तभी शीघ्रता से पुष्पिका आगे बढ गयी और उसके माथे पर चोट लगी । इसके प्रायश्चित केलिए विक्रमादित्य ने शक राजकुमार से आर्य धर्म स्वीकार करने को और सौराष्ट्र के समीपवर्ती प्रदेश में आर्य धर्म का प्रचार करने की आज्ञा दी । शक राजकुमार ने राजा की आज्ञा स्वीकार की ।

19. अभिषेक पर्व

राजस्थान के इतिहास में असंख्य बलिदान की कथायें भरी पडी है । प्रस्तुत एकांकी में एकांकीकार का उद्देश्य महाराणा प्रताप के उज्वल चरित्र को प्रस्तुत करना है साथ ही उत्तराधिकार के लिए किये गये संघर्ष का स्वाभाविक चित्रण भी है । राणा प्रताप का चरित्र ऐसे राजपूत वीर का आदर्श चरित्र है जो अनेक विपत्तियों का देश की रक्षा तथा गौरव केलिए सामना करते हैं ।

महाराणा उदयसिंह मृत्युशय्या पर लेटे वक्त राज्य-सिंहासन का पद ज्येष्ठ पुत्र महाराणा प्रताप को न देकर छोटी रानी के पुत्र कुमार जगमल को देते हैं । यह सूचना मिलकर सामन्त असन्तुष्ट बन जाते हैं । उनकी राय में जगमल की अपेक्षा प्रतापसिंह ही सिंहासन के लिए योग्य शासक है । कुमार जगमल भी स्वयं भावि महाराजा घोषित करते हैं । प्रताप जगमल की नीतियों एवं बुद्धिहीनता की भर्त्सना करता है । इसी बीच जगमल द्वारा अक्बर को भेजा गया

संधिपत्र भी प्रतापसिंह के हाथ में आ जाता है । वह जगमल की शासन-नीति की आलोचना करता है तथा संधिपत्र फाड डालता है । सभी सामन्त उनकी प्रशंसा करते हुए उन्हें राजमुकुट पहनाते हैं ।

भारतीय संस्कृति के लिए प्रतापसिंह का चरित्र एक अच्छा आदर्श है । अपने देश की रक्षा करना हर एक भारतीय का कर्तव्य है । जगमल जैसे देशद्रोही के शासक बन जाने पर अपने देश का सर्वनाश होगा । यह बात सभी सामन्त समझते हैं । इसलिए वे जगमल को शासक पद से निष्कासित करते हैं । लेकिन प्रतापसिंह में अपने देश के भविष्य की चिन्ता है । वे अपने जीवन को भी देश की रक्षा के लिए बलिदान करने को तैयार है । एक योग्य शासक के गुण है आत्माभिमान तथा देश प्रेम । ये दोनों गुण प्रतापसिंह में है । डॉ. वर्मा का उद्देश्य प्रतापसिंह जैसे महत् व्यक्तियों के जीवन आदर्शों को दर्शकों के सम्मुख प्रस्तुत करना है । इस उद्देश्य में वे सफल हुए हैं ।

इसके साथ ही उत्तराधिकार के लिए किये गए संघर्ष को भी प्रस्तुत किया है । भारत में कई राजा साम्राज्य विस्तार तथा अधिकार मोह के कारण आपस में संघर्ष करते रहे । इसका लाभ उठाकर अनेक विदेशियों ने भारत पर चढाई की ।

20. शिवाजी

भारत के इतिहास में शिवाजी का चरित्र अद्वितीय है । मुगल बादशाहों में शिवाजी जैसा आदर्शवान सम्राट बहुत विरले ही मिलता है ।

उनके चरित्र की नैतिक दृढ़ता, वैयक्तिक चरित्र की निर्मलता, प्राचीन उत्कृष्ट गौरव, मातृभक्ति, स्वदेशानुराग, शत्रु पक्ष की स्त्रियों की इज्जत अबारू की रक्षा आदि भारतीय संस्कृति के लिए उच्च आदर्श है। उनके चरित्र में आदर्श के प्रति गौरव और अभिमान दिखाई पड़ते हैं । प्रस्तुत एकांकी में शिवाजी के गौरवशील तत्वों को प्रकाशित कर विश्वप्रेम, नैतिकता, चरित्र गरिमा आदि प्रतिष्ठित किये गये हैं ।

यह घटना सन् 1675 ई. की है । सन् 1675 ई. में शिवाजी ने बीजापुर पर आक्रमण किया । उस आक्रमण में उनकी सेना वहाँ से बहुत अधिक धन-दौलत लूट लायी । शिवाजी के मुख्य सेनापति आवाजी सोनदेव पेशवा पद के लालच में गौहरबानू को कैद कर लाया । यह घटना सुनकर शिवाजी अप्रसन्न बन जाते हैं, तथा आवाजी से क्रुद्ध हो जाते हैं । शिवाजी अपने आदर्श उन्हें याद कराते हैं । युद्ध में शिवाजी का आदर्श यह था कि "शत्रुओं के देश की स्त्रियों का किसी तरह भी अपमान नहीं होना चाहिए । उन्हें माँ-बहिनों के समान आदरणीय और पूज्य समझकर उनकी इज्जत करनी चाहिए । बच्चों को कभी उनके माता पिता से जुदा मत करो - गाय मत पकड़ो और ब्राह्मणों के ऊपर अत्याचार मत करो - आठ महीने बाद लौटकर छावनी में चले आओ - कुरान की उतनी ही इज्जत होनी चाहिए जितनी भवानी की - मसजिद का दरवाज़ा उतना ही पवित्र है जितना तुम्हारे मन्दिर का कलश । शिवा के लिए इस्लाम धर्म उतना ही पूज्य है जितना हिन्दु धर्म । ज़मीन पर गिरे हुए कुरान का एक एक पन्ना शिवा ने अपनी तलवार से उठाकर मौलवियों के सिर पर

रख दिया है । धर्म के ख्याल में हिन्दु और मुसलमान में कोई फर्क नहीं ।"[1]

शिवाजी शत्रु की स्त्री में भी जीजाबाई की तस्वीर देखता है । शिवाजी अपनी माँ जीजाबाई के समान गौहरबानू का आदर सत्कार करते हैं । माँ की भाँति उसे सिंहासन पर बिठाकर समस्त सरदारों से उसे माँ स्वरूपा अभिवादन कराते हैं । इस प्रकार शिवाजी, सोनदेव के कुकर्म के लिए प्रायश्चित करते हैं ।

युवा होते हुए भी शिवाजी सौन्दर्य की साक्षात् प्रतिमा गौहरबानू पर हल्की आँखें नहीं डालते, बल्कि उसके सौन्दर्य में उसे अपनी माँ जीजाबाई का मुख दीख पड़ता है, अपनी माँ की मुस्कान दीख पड़ती है, उसकी वानी में जीजाबाई का आशीर्वाद सुनाई पड़ता है । वह गौहरबानू को जीजाबाई के सदृश अपनी माँ के रूप में मानकर प्रणाम करते हैं ।

21. नाना फड़नवीस

नाना फड़नवीस भारतीय इतिहास में एक स्मरणीय नाम है । अठारहवीं शताब्दी का भारतीय इतिहास नानाफड़नवीस की विलक्षण बुद्धि से अनुशासित हुआ है । उनके साहस, बुद्धि, दूरदर्शिता तथा देशभक्ति के कारण उनका नाम अमर हो गया । राजनीति के क्षेत्र में

---

1. इतिहास के स्वर - पृ. 68

उनकी जिस अन्तर्दृष्टि का परिचय मिला है वह बड़े बड़े प्रभावशाली नरेशों में भी नहीं देख सका । सन् 1773 की एक घटना प्रस्तुत एकांकी में वर्णित है ।

शिवाजी की मृत्यु के बाद मराठों की शक्ति क्षीण हो गयी । भारत के राजाओं की आपसी फूट एवं कलह का लाभ उठाकर अंग्रेज़ी और पुर्तगाली लोग यहाँ आक्रमण करने लगे । नारायणराव पेशवा और सदाशिवराव भाउ की मृत्यु के बाद उनके संरक्षण का भार नाना फड़नवीस के हाथ में आ पडा । नारायण राऊ की पत्नी गर्भवती है । जिसका भावि पुत्र मराठा के पेशवा पद के अधिकारी होगा । इसलिए नारायण राव के काका राघोबा एवं काकी आनन्दी उनका वध करने का षड्यंत्र रचते हैं । इसलिए विष में बुझे हुए वस्त्र गंगाबाई को उपहार स्वरूप भेजते हैं, जिसे पहनते ही उसकी मृत्यु हो जाए । नाना फड़नवीस यह षड्यंत्र समझते हैं । वे राघोबा को बन्दी बनाते हैं । राघोबा अपने कुकृत्यों पर लज्जित है । गंगाबाई इन रहस्यों को जानकर नाना फड़नवीस को अपना रक्षक कहते हैं । नाना फड़नवीस एक कर्तव्य निष्ठ व्यक्ति है । देश की सुरक्षा वे अपना कर्तव्य समझते हैं ।

22. सोन का वरदान

उत्तराधिकार की एक समस्या ई. पू. 274 में पाटलीपुत्र में हुई । जिसका डॉ. रामकुमार वर्मा ने "सोन का वरदान" एकांकी में चित्रण किया है । डॉ. वर्मा ने शासक बनने की प्रबल इच्छा

रखनेवालों के लिए तीन महत्वपूर्ण तथ्यों का प्रतिपादन भी अशोक के चरित्र के माध्यम से व्यक्त किया है ।

सम्राट बिन्दुसार की मृत्यु के बाद पाटलीपुत्र में उनके पुत्रों के बीच सम्राट पद केलिए बहस होते हैं । अमात्य मंडल अशोक को सम्राट बनाना चाहते हैं । लेकिन अशोक के बडे भाई सुसीम सम्राट पद के लिए स्वयं प्रत्याशी है । इसलिए वह अपने सभी छोटे भाइयों को अशोक के विरुद्ध खडा कर देता है तथा उसे वध करने को षड्यंत्र रचता है । अशोक यह समझता है । अमात्य के विरोध करने पर भी अशोक अकेला ही सोन तट पर अपने भाइयों के पास जाता है और उन्हें समझाता है कि पिता की मृत्यु के बाद सम्राट पद के लिए भाइयों में कलह जन्मभूमि के लिए घातक है । इसप्रकार उन्हें सांत्वना देते हुए महल में लौट जाने को कहते हैं ।

प्रस्तुत एकांकी के द्वारा लेखक यह कहना चाहता है कि शासक बनने के लिए योग्यता आवश्यक है । सम्राट को साहस, विवेक, क्षमा आदि गुण आवश्यक है । यह गुण अशोक में हैं । इसलिए अमात्य मंडल उसे योग्य शासक समझते हैं । लेखक के मत में अमात्य मंडल की शक्ति में प्रजा की शक्ति है । प्रजा की शक्ति ईश्वर की शक्ति है । सिंहासन उच्च नहीं है । लेकिन सिंहासन पर बैठने की योग्यता उच्च है । जो सिंहासन को उच्च समझते हैं वे गलत मार्ग पर चलते हैं । सम्राट को अंगरक्षक की आवश्यकता है । लेकिन अंगरक्षकी की नियुक्ति प्रजा के प्रति अविश्वास है ।

23. पानीपत की हार

आपसी फूट एवं अदूरदर्शिता के कारण मराठों को पानीपत युद्ध में जो हार होती है उन विभीषिकाओं का चित्रण है प्रस्तुत एकांकी । शिवाजी के समय मराठा लोग अपनी शक्ति के उच्च स्थल पर पहुँचे थे । लेकिन बाद में उनकी शक्ति क्षीण हो गयी । राज्य विस्तार की महत्वाकांक्षा के कारण बालाजी बाजीराव के छोटे भाई सदाशिवराव ने मराठ सैनिकों के साथ दिल्ली पर आक्रमण किया । इस लडाई में मराठों की विजय हुई । फिर उसने अफगानिस्तान के बादशाह अहमदशाह से भी युद्ध किया । युद्ध के कारण बालाजी बाजीराव अशान्त बन जाते हैं । सेनापति जनकोजी एवं भास्करराव उन्हें समय समय पर युद्ध की जय-पराजय की सूचना देते हैं । दिल्ली विजय की सूचना मिलकर राजा अत्यन्त सन्तुष्ट बन जाते हैं । तब एक स्त्री रोती हुई वहाँ पहुँचती है । उनके पुत्र पाँडुरंग एक मराठ सैनिक थे । युद्ध में उनकी मृत्यु हुई । बेटे के वियोग से माँ दुःखी बन जाती है । बालाजी उन्हें सांत्वना देते हैं । तब पानीपत से एक दूत आकर युद्ध में मराठों की हार तथा राजकुमार विश्वासराव एवं सदाशिवराव भाउ की मृत्यु की सूचना देते हैं । राजा बहुत दुःखी बन जाते हैं । किन्तु नाना फडनवीस की सुरक्षा की सूचना मिलकर उन्हें कुछ शांति मिलती है ।

सदाशिवराव भाउ की अदूरदर्शिता तथा हठवादिता और अस्थिरता के कारण ही पानीपत युद्ध में मराठों की हार हुई । इस युद्ध में अनेक महाराष्ट्र वीरों की रणभूमि में बलि हुई, शेष जो बच गये वे अनजान रास्तों से भागकर अपने अपने स्थान पहुँचे ।

24. उदयन

सम्राट उदयन का धर्मपरिवर्तन इस एकांकी की महत्वपूर्ण घटना है ।

अरुणि पर विजय प्राप्त करने के बाद अपनी राजधानी कौशाम्बी में लौट आये राणा उदयन, प्रासाद के समीप भगवान तथागत के प्रवचन सुनते हैं, और क्रुद्ध हो जाते हैं । वे सोचते हैं कि तथागत अपनी अहिंसावादी प्रवृत्ति से सैनिकों में शिथिलता उत्पन्न कर देंगे । इसी क्रोध से वे तथागत पर शर संधान कर उनका वध करने का निश्चय लेते हैं । फिर धनुष पर प्रत्यंचा चढाकर तथागत को लक्ष्य बनाकर बाण खींचते हैं । किन्तु वह शर तथागत के कंठ में न लगकर मंजुघोषा के कंठ में बिंध जाता है । यह देखकर जनता में हलचल होते हैं । मंजुघोषा का शिथिल शरीर उठाते हुए तथागत सम्राट के समक्ष आते हैं । मंजुघोषा के शरीर पर बाण लगने से अब सम्राट भी दुःखित है । तथागत उदयन को समझाते हैं कि कठोरता से नहीं बल्कि कोमलता से सबके मन पर छाकर राज्य करना चाहिए, तलवार के बल पर नहीं । उदयन तथागत के प्रवचन स्वीकार करते हैं तथा तथागत की दिग्विजय की घोषणा करवाते हैं ।

एकांकी के प्रारंभ में सम्राट उदयन बौद्ध धर्म के प्रति कट्टर विरोधी जैसा दिखाई पडता है । लेकिन मंजुघोषा की मृत्यु तथा भगवान तथागत की सलाह उन्हें बौद्ध धर्म का अनुयायी बनाते हैं । प्रस्तुत एकांकी का उद्देश्य अहिंसा की हिंसा पर विजय है । एकांकीकार

G 5351

चाहते हैं कि प्रस्तुत एकांकी से दर्शक के मन पर अहिंसा का विश्वास स्थायी हो जाय, एक न एक दिन पाशविक प्रवृत्तियों पर करूणा, दया, ममता आदि मानवीय वृत्तियाँ विजय पायें ।

25. वासवदत्ता

शरीर में जो अवस्था होती है, वह स्थायी नहीं है । शरीर में समय समय पर बाल्य, यौवन और वार्धक्य दशाऐं आती हैं । लेकिन उस पर गर्व करना अच्छा नहीं है । यौवन की दशा पर शरीर में कान्ति उत्पन्न हो जाती है । किन्तु यौवन की समाप्ति पर शरीर की कान्ति नष्ट हो जाती है । शरीर का कोई महत्व नहीं है । वह केवल जीवन का एक आसन है । सुख में यदि आसक्ति नहीं है तो शरीर का आसन सर्वोत्तम है । वस्तुओं में वासना है । लेकिन सुख की चिन्ता मन में महाताप और महादाह उत्पन्न करती है । डॉ. वर्मा वासवदत्ता के जीवन चरित से यह तथ्य प्रस्तुत करना चाहते हैं ।

जन-पद कल्याणी नर्तकी वासवदत्ता अप्रतिम सुन्दरी है । वह बेरंजा के नगर-श्रेष्ठी जयसेन के साथ अभिसार हेतु जाने के लिए तैयार कर रही है । वासवदत्ता की सहचरी पूर्णिका उन्हें एक पुष्पमाला गूँथ रही है । तब जयसेन का मित्र सुदर्शी आकर सूचना देता है कि मधुवन में अभिसार का प्रबन्ध हुआ है । वासवदत्ता की परिचारिका मदयन्तिका भी वहाँ पहुँचती है और कहती है कि आचार्य उपगुप्त पास के एक शाल्मली वृक्ष के नीचे बिना भोजन किये शयन कर रहे हैं ।

"कुश-कंटकों पर चलने के कारण उनके चरण क्षत-विक्षत हो रहे हैं । इसलिए आज वह भिक्षा माँगने चल नहीं सकता । यह सुनकर वासवदत्ता उन्हें स्वागत करने चली जाती है और मदयन्तिका से जयसेन के साथ अभिसार करने को कहती है । वासवदत्ता उन्हें मधुकरी देती हैं और अपने कक्ष में शयन करने को माँगती है । उपगुप्त यह माँग अस्वीकार करता है और कहता है कि पृथ्वी पर अनेक वस्तुऐं है उन पर मोहित होने से मन में दुःख और अशान्ति फैल जाएगा । शरीर की कोई अवस्था भी स्थायी नहीं है । शरीर तो जीवन का एक आसन है । सुख में यदि आसक्ति नहीं है तो शरीर का आसन सर्वोत्तम है । भूमि इस शरीर की माता है । यह महापृथ्वी गंभीर है । इसे कोई मिटा नहीं सकता । पृथ्वी से शरीर का निर्माण है उसी पृथ्वी में शरीर का विनाश भी है"[1] । यह कहकर उपगुप्त उन्हें अच्छे मार्ग पर लाने का परिश्रम करते हैं ।

26. कादम्ब या विष

राज्य लिप्सा तथा अधिकार प्राप्ति का मोह मनुष्य के मन को कलंकित करता है । अधिकार लिप्सा से अपने पति की हत्या करनेवाली अनन्तदेवी की कपट-कहानी प्रस्तुत एकांकी में है ।

सम्राट कुमारगुप्त अपनी द्वितीय पत्नी अनन्त देवी के रूप जाल में फँसकर अपनी प्रथम राणी के पुत्र स्कन्दगुप्त के प्रति अन्याय करने में विवश होते हैं । स्कन्दगुप्त अपनी सौतेली माँ और भाई के

---

1. इतिहास के स्वर भाग 1 - पृ. 159 - डॉ. रामकुमार वर्मा

सारे षड्यंत्र समझता है और स्वेच्छा से युवराज पद छोडकर मालव की रक्षा करने चला जाता है । स्कन्दगुप्त के जाने पर अनन्त देवी कुमारगुप्त को कादम्ब के साथ विष पिलाती है और मरने के पहले एक झूठे आज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करवाती है । आज्ञा पत्र के अनुसार स्कन्दगुप्त को युवराज पद से हटाकर पुरुगुप्त को युवराज पद देने की आज्ञा दी जाती है ।

सम्राट कुमारगुप्त के विलासी जीवन का चित्रण भी प्रस्तुत एकांकी में है । जब शासक सौन्दर्य के उपासक बन जाते हैं तब वे अपने कर्तव्य भूल जाते हैं । इसलिए राज्य को क्षति होती हैं । सम्राट कुमारगुप्त अनन्तदेवी के सौन्दर्य का उपासक बन जाता है । उसका लाभ उठाकर अनन्त देवी सिंहासन पद छीन लेती है ।

27. पृथ्वीराज की आँखें

पृथ्वीराज चौहान के कैदी जीवन से संबन्धित एक मार्मिक घटना प्रस्तुत एकांकी का मुख्य विषय है । प्रस्तुत घटना के सहारे एकांकीकार ने गोर का सुलतान शहाबुद्दीन गोरी का निर्दयतापूर्ण व्यवहार दिखलाया है ।

तराईन के युद्ध में पृथ्वीराज की पराजय होने पर शहाबुद्दीन गोरी ने उसे जेल में डाला । उनके हाथों में हथकडी और पैरों में बेडियाँ डाल दी । यह भी नहीं गरम सुओं से उनके पलकों को

छेद किया और पुतलियों को जलाया । इस समय पृथ्वीराज के मित्र महाकवि चंद उसे देखने आता है । पृथ्वीराज महाकवि चंद से अपनी दैन्यावस्था का विवरण देता है साथ ही वह महाकवि चंद से, अपनी इस अवस्था से मुक्ति मिलने के लिए उन्हें वध कर डालने की याचना करता है । लेकिन महाकवि चंद पृथ्वीराज की इस दैन्यावस्था देखने में असमर्थ होकर स्वयं हत्या करने को कटार हाथ में लेता है । इतने में शहाबुद्दीन गोरी वहाँ पहुँचता है और उसके हाथ से कटार छीन लेता है । पृथ्वीराज की इस अवस्था देखकर उन्हें कुछ भी दुःख न होता है बल्कि व्यंग्य भरे शब्दों से वह उसकी हंसी उडाता है । उस रात में पृथ्वीराज की आँखों में नींबू और मिर्च डालने की आज्ञा देकर वह चला जाता है ।

पृथ्वीराज चौहान दिल्ली अजमेर का अन्तिम हिन्दु शासक था । पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन गोरी के बीच कई बार युद्ध हुआ था । उन सभी क्षणों में पृथ्वीराज की विजय हुई थी । लेकिन उस समय पृथ्वीराज ने गोरी को पकडकर उदारता तथा सम्मानपूर्वक छोड दिया । जब गोरी से हुए युद्ध में पृथ्वीराज की पराजय हुई तब गोरी ने उसे बुरी तरह पीडित किया । अपने उपकारकर्ता की याद उन्होंने नहीं की । प्रभुता एवं अहम की भावना मनुष्य को जितना क्रूर बनाता है शहाबुद्दीन गोरी के द्वारा मनुष्य की इस क्रूर भावना दिखलायी है ।

ऐतिहासिक एकांकी पुनरवलोकन

ऐतिहासिक एकांकियों का विशद अध्ययन करने के बाद यह स्पष्ट होता है कि डॉ. वर्मा ऐतिहासिक एकांकियों के कुशल चितेरे हैं

उनमें एक ऐतिहासिक एकांकीकार का सूक्ष्म विवेक है । उनके एकांकियों में भारत के विभिन्न युगों की धड़कन सुनाई पड़ती है । प्राचीन युग, हिन्दु युग, मुस्लिम युग एवं स्वातन्त्र्योत्तर युग के भारतीय समाज, संस्कृति, जीवन दर्शन, राजनीति एवं रणनीति, प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष या दोनों ही रूपों में इन एकांकियों में अभिव्यक्त हुए हैं । वर्मा अपने पाठकों को सुदूर अतीत में ले जाते हैं । विक्रमादित्य, अशोक, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त, चाणक्य, स्कन्दगुप्त, हर्षवर्धन, अकबर, शिवाजी, नानाफड़नवीस, बापू, जवाहर, लालबहादुर शास्त्री जैसे वीर पुरुषों की नैतिक दृढ़ता, चारित्रिक निर्मलता से पाठकों का परिचय कराते हैं । अपने देश की इन महान विभूतियों से पाठकों एवं दर्शकों का परिचय कराते हुए वर्मा उनमें दृढ़ देशभक्ति की भावना को उत्तेजित करते हैं । स्वातंत्र्य के प्रति प्रेम भाव जागृत करता है । इन महान विभूतियों के साथ वर्मा ने पाठकों की भेंट ऐसे नासमझ व्यक्तियों से भी कराई है जिन्होंने स्वार्थ, क्रोध, व्यक्तिलाभ के क्षणिक मोह आदि से प्रेरित हो जन्मभूमि के हित को भूलकर विश्वासघात किया है । ऑभीक, अमीरखाँ, वृहद्रथ आदि इनमें उल्लेखनीय हैं ।

इतिहास के खण्डहरों में विचरण करने के बाद जब हम वर्तमान में लौटते हैं तो महसूस करते हैं कि हमने अवश्य कुछ पाये हैं । अपने देश के स्वर्णिम अतीत के प्रति गौरव की भावना हमारे मन में उठती है । अतीत के यशोगान के माध्यम से वर्मा ने हमें राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से जागृत करने का प्रयास किया है । सांस्कृतिक चेतना से जुड़ी हुई उनकी ऐतिहासिक चेतना बिलकुल सराहनीय है ।

वर्मा ने अपने ऐतिहासिक एकांकियों की रचना निरुद्देश नहीं की । इतिहास आदमी की शक्ति और दुर्बलता का दर्पण है इस दर्पण को जनता के सामने इस उद्देश्य से रखते हैं कि जनता अपने देश के अतीत को देखकर व्यक्तिगत सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन की उन सारी कमजोरियों को दूर करने की कोशिश करें जिन्होंने उन्हें गुलामी की जंजीरों में बाँधा तथा उन गुणों को अपनाये जो राष्ट्रनिर्माण में सहायक सिद्ध हो सके । उनके ऐतिहासिक एकांकियों का सृजन जनमानस में देशप्रेम, राष्ट्रीयता, एकता और स्वाधीनता के प्रति ममता भरने की दृष्टि से हुआ है । इतिहास के ताने बाने में एकांकियों का सृजन करने का और एक उद्देश्य वर्तमान की समस्या केलिए अतीत से उद्बोधन प्राप्त करना । उत्तराधिकार के लिए किए गए षड्यंत्र और उससे उपजे युद्धों की विभीषिकाओं की ओर संकेत देते हुए रामकुमार वर्मा यही सिद्ध करना चाहते हैं कि युद्ध चाहे प्राचीन युग में घटित हुए हो या मध्य युग में, या बीसवीं शताब्दी में, विजयी और विजेता दोनों पक्षों के मानवीय मूल्यों में विघटन अवश्य होता है । युद्ध की विभीषिकाओं से उत्पन्न संत्रास का वातावरण, टूटे हुए सामाजिक नैतिक मूल्य, जन सामान्य की पीड़ित चेतना आदि के गवाह बनने के बाद महान विजेता अशोक के मन में यह प्रश्न उठा कि क्या युद्ध अवश्यंभावि है । सारी पृथ्वी पर शांति की स्थापना की कामना करने वाले रामकुमार वर्मा का आशावादी मन यही चाहता है हर देश के हर शासक के मन में भी वही प्रश्न उठे जो अशोक के मन में उठे । अपने ऐतिहासिक पात्रों में अशोक ही वर्मा को सबसे अधिक प्रिय लगा । एक साक्षात्कार हेतु उन्होंने व्यक्त किया है "अशोक ऐसा पात्र है जिसमें

दृढ़ता के साथ अपने जीवन की दिशा निर्णय करने का पर्याप्त विवेक है । जो अशोक जन्मजात कठोर और क्रूर है वह कोमल सहृदय कैसे बन जाता है वह जीवन के दो विपरीत कोणों में संक्रमण करने की क्षमता रखता है उसमें विवेक बुद्धि है तभी तो वह जीवन पर्यन्त युद्ध न करने की घोषणा मात्र नहीं करता अपितु कभी भी शास्त्रास्त्र न छूने की प्रतिज्ञा भी करता है ।"[1]

इतिहास की आधार शिला पर वर्तमान राजनीतिक विसंगति और विद्रूपता को उकेरने का प्रयास वर्मा ने किया है । वर्तमान राजनीति मूल्यों के खिलाफ है । मनुष्य और मनुष्य को एकसाथ जोडनेवाले मूल्य-प्रेम, करूणा, सहानुभूति को राजनीति तोड रही है । वर्मा जैसे संवेदनशील लेखक जब महसूस करते हैं कि राजनीति के दुष्चक्र में मानवमूल्य टूटते जा रहे हैं तो उन जर्जरित मूल्यों को पुर्नजीवित करना अपना कर्तव्य समझता है । विलासिता और कर्तव्यपराङमुखता में डूबे हुए गुप्त सम्राट रामगुप्त, जनता को यंत्रणायें देनेवाले वृहद्रथ, नारी की छवि में आकृष्ट होकर देश और प्रजा के प्रति अपना कर्तव्य भूलनेवाले सम्राट कुमारगुप्त, पृथ्वीराज चौहान, साम्राज्य लिप्सा से प्रेरित होकर अपने पिता, सगे भाइयों तथा अपने पुत्रों के प्रति पाशवविक व्यवहार करनेवाला औरंगजेब, पिता के वात्सल्य की कीमत को बिना समझे पिता से विद्रोह करनेवाला अजातशत्रु, सिंहासन हासिल करने के लिए भ्रातृप्रेम को पिलांजली देनेवाले अशोक के भाई सुसीम आदि इतिहास के विभिन्न युगों के होते हुए भी समकालीन स्थितियों पर सीधा टिप्पणी करते हैं ।

---

1. डॉ. रामकुमार वर्मा की साहित्य साधना - पृ. 198 - डॉ. चन्द्रिका प्रसाद शर्मा

धर्म और जाति के नाम पर नासमझ लोगों का पारस्परिक संघर्ष और उस संघर्ष में निरीह बेकसूर आत्माओं की हत्या प्रतिदिन बढ रही है । राष्ट्रीयता को तोडनेवाली ऐसी जातिगत संकुचित मनोवृत्तियों को बढावा देनेवाले व्यक्तियों के सामने वर्मा ने शिवाजी और अकबर की धर्म सहिष्णुवृत्ति का अनूठा मिसाल प्रस्तुत किया है । मन्दिर के कलश और मसजिद के दरवाज़े का समान सम्मान करनेवाला शिवाजी, अपने धर्म की गरिमा, महत्ता और प्रतिष्ठा पर आस्था रखते हुए भी सभी धर्मों में प्राप्त कुछ मूल बातों चुनकर एक नये धर्म का प्रचार करनेवाला अक्बर, जाति और धर्म की दुहाई देनेवाले को सही रास्ता दिखाते हैं ।

मौन उत्सर्ग करनेवाली भारतीय नारी का मूर्तिमान रूप उनके एकांकियों में है । रामगुप्त जैसे विलासी एवं उद्दंड पति के शोषण की चक्की में बुरी तरह पिसनेवाली ध्रुवस्वामिनी, सेल्यूकस की लंपटता एवं मनोरंजन की शिकार बनी मालविकन्या धारिणी, मालव नरेश देवगुप्त के षड्यंत्र से लोह श्रृंखलाओं में कसकर कारागार में रहने के लिए अभिशप्त स्वर्णश्री आदि नारी शोषण की करुण कथा कह रही है ।

इसके साथ ही उनके एकांकियों में वासवदत्ता जैसी नारी पात्र भी मिलते हैं जो अपने जिस्म के सौन्दर्यजाल में पुरुषों को फँसाती है । अधिकार लिप्सा के मोह में खूनी रिश्तों को भी भूलकर जघन्य पाप करनेवाली अनन्त देवी जैसी नारियों से भी एकांकीकार ने हमें परिचय कराया है ।

पौराणिक एकांकी विश्लेषण

1. एक बूँद दूध

भगवान दीनबन्धु है । दलित पीडितों की सेवा करनेवाले ईश्वर की सेवा ही कर रहे हैं । जनता के मन में यह धारणा रूढमूल हो चुकी है कि मन्दिर में जाकर भगवान की मूर्ति पर बहुमूल्य भेंट चढाने से ईश्वर भक्त के प्रति प्रसन्न होता है । लेकिन असली बात यह है कि ऐसी बनावटी पूजा अर्चना से भगवान कभी प्रसन्न नहीं होता । ईश्वर को प्रसन्न कराने का एकमात्र उपाय यह है दीनबन्धुओं की रक्षा करना । प्रस्तुत तथ्य की स्थापना के लिए इस एकांकी का सृजन हुआ है ।

विदर्भ राज्य के राजा रिपुदमन के पुत्र भगवान शिव की कृपा से अपने असाध्य रोग से पूर्ण रूप में स्वस्थ हो गया । इसी प्रसन्नता में राजा ने लोगों को वर्ष भर का कर मुक्त कर दिया, और उसने भगवान शंकर का अभिषेक करना चाहा । शंकर अभिषेक के लिए बहुत अधिक दूध की आवश्यकता है । इसलिए राजा ऐसी आज्ञा देता है कि "भगवान शिव मन्दिर के सामने जो नया कुंड बनवाया गया है उसमें राजधानी की सारी गायों का दूध भरा जाय और उसी से देवाधिदेव शंकर का अभिषेक हो । इसलिए आज से एक मास तक सभी नागरिक एक बूँद दूध भी अपने उपयोग में न लाकर सारा दूध उस कुंड में भरे । यदि किसी ने इस आदेश की अवहेलना की तो उसे भारी दण्ड दिया जायेगा ।" [1]

इस आज्ञा के अनुसार एक वृद्धा अपने कटोरे में दूध भरकर राजधानी की ओर जा रही थी कि मार्ग में उसने एक अपाहिज

---

1. चित्र एकांकी - पृ. 5 - डॉ. रामकुमार वर्मा

आदमी, एक भूखे बालक और एक बेचारी युवती से मिले । अपाहिज आदमी और बच्चा भूख और प्यास से बिलकुल थक गये थे । वह औरत, मृत्यु शय्या पर पड़े हुए अपने पति को दवा के साथ देने के लिए थोड़े से दूध की खोज में निकल पड़ी थी । इन तीनों का दुख दर्द देखकर बूढ़ी का दिल पिघल गया और राजाज्ञा की परवाह किये बिना उसने अपनी कटोरी का दूध उन्हें दिया । सिर्फ एक बूँद दूध ही कटोरे में रहा जिसे लेकर बूढ़ी जब राजधानी पहूँची तो सिपाही ने नाराज़ होकर उसे राजा के सम्मुख उपस्थित कराया । वृद्धा ने रास्ते की सारी बातें राजा से कही । अचरज से बात यह निकलती है कि वृद्धा ने कटोरे से दूध का जो एक बूँद डाला था उससे कुंड भर गया ।

यह देखकर राजा, सिपाही और सारी प्रजा आश्चर्यचकित हो जाते है । राजा रिपुदमन वृद्धा को राजमाता घोषित करते हैं और कहता है "प्रभु दीनबन्धु है, दीनों की रक्षा से वे प्रसन्न होते हैं । आज से सबसे पहला ध्यान अपाहिजों, भूखें बच्चों और बीमार व्यक्तियों का रखा जाय । उन्हें भरपूर दूध दिया जाय । शेष दूध भगवान शंकर के कुंड में डाला जाय ।"[1] फिर नगरमाता के हाथों से भगवान शंकर के दुग्धाभिषेक का पुण्य पर्व मनाते है ।

2. मृत्यु पर विजय

भारतीय चिन्तन पद्धति के अनुसार अकाल मृत्यु उन व्यक्तियों पर किसी भी प्रकार का प्रभाव डाल नहीं सकती, जो

---

1. चित्र एकांकी - पृ. 13 - डॉ. रामकुमार वर्मा

सात्त्विक जीवन बिताते हैं । ऐसे सात्त्विक लोग सदैव शुद्ध आचार विचार रखते हैं, वे निष्क्रिय कभी नहीं बनते, सदैव सत्य बोलते है, अपने अतिथियों की भूख मिटाने के बाद ही अपना भोजन लेते हैं, परोपकार में विश्वास रखते है, दूसरों का दुःख देखकर स्वयं दुखी बनते हैं और यथासंभव उसका दुख दूर करने का प्रयास करते हैं, त्याग से ही उपभोग करते हैं, और दूसरों के धन की इच्छा नहीं करते । अपने धर्म की अवहेलना ये लोग कभी नहीं देख सकते । प्रस्तुत एकांकी में रामकुमार वर्मा ने ऐसे एक सात्त्विक ऋषिकुमार की अकालमृत्यु के हाथों से बचनेवाली घटना पर दृष्टि डाली है ।

कश्यपनन्दन महर्षि अरिष्टनेमी का पुत्र कल्पनेमि राजकुमार, परपुरंजय के बाण से बुरी तरह आहत हुए । राजकुमार ने जानबूझकर यह नहीं किया था । कृष्णचर्म ओढे हुए कल्पनेमि को कृष्णमृग समझकर उन्होंने बाण छोडा था । राजकुमार प्रायश्चित करने के लिए अरिष्टनेमि के पास पहूँचा । अरिष्टनेमि ने अपने पुत्र की लाश अपने समीप लाने को राजकुमार से कहा । जिस स्थान पर ऋषिकुमार कल्पनेमि को बाण लगा था उसी जगह ही उसका शरीर रखकर राजकुमार और मंत्री पुत्र, अरिष्टनेमि से मिलने के लिए आए थे, लेकिन शरीर की खोज में वहाँ पहूँचे राजकुमार और मंत्री पुत्र ने उस स्थान पर उनका शरीर नहीं देखा उनका डर था कि किसी हिंसक जन्तु ने उसे उठा लिया होगा । दोनों ऐसी दुविधा में फँसे हुए थे कि कल्पनेमि उनकी आँखों के सामने प्रकट हुआ । उन दोनों के आश्चर्य की कोई सीमा नहीं थी क्योंकि

उन्होंने अपनी आँखों से देखा था कि बाण उसके वक्षस्थल में लगा था और वह अचेत होकर भूमि पर पडा था । कल्पनेमि ने उन्हें समझाया कि इन्द्रजाल या तपस्या की शक्ति से कोई भी मृत्यु के अन्धकार से जीवन के प्रकाश में नहीं लौट आ सकता । सात्त्विक जीवन बितानेवाले ही अकाल मृत्यु को हरा सकता है ।

3. शास्त्रार्थ

अहम से ग्रस्त व्यक्ति सदैव दूसरों को दबाने की कोशिश ही करेगा । अहम की झूठी भावना से मनुष्य अपना विवेक खो बैठता है । जब जीवन में अहम की भावना प्रबल हो जाती है अविवेक की भावना निरंकुश हो जाती है । एक भ्रान्ति की दुनिया में विचरण करनेवाले व्यक्ति यह सत्य भूल जाते हैं कि अहम की भावना जीवन के अधःपतन का मूल है । प्रस्तुत एकांकी में महापण्डित वन्दन मिश्र के झूठे अहम को एक बारह बरस के एक छोटे बालक अष्टावक्र के द्वारा चकनाचूर किये जानेवाली घटना प्रस्तुत है ।

विदेह राज्य के राजा जनक के सभा कक्ष में वन्दन मिश्र नामक एक महापण्डित को अपने पांडित्य पर गर्व होता है । शास्त्रार्थ में वे अनेक पण्डितों को हराते हैं और दंडस्वरूप उन्हें नदी में डुबा देते हैं । यह सुनकर बारह वर्ष के अष्टावक्र नामक एक ब्राह्मण कुमार सभा कक्ष में पहुँचकर वन्दनमिश्र की ललकार स्वीकार करता है ।

अष्टावक्र के पिता महापंडित कहोड शास्त्रार्थ में वन्दन मिश्र से पराजित हुए थे और दंडस्वरूप उन्हें नदी में डुबा दिये गये । महापंडित से वे अपने पिता की हत्या के बदला लेने के लिए ही आये थे । अष्टावक्र से हुए शास्त्रार्थ में वन्दन मिश्र की पराजय होती है । अपनी पराजय से वन्दन मिश्र का अहंकार मिट जाता है । अपनी गलती के लिए वह राजा से क्षमा माँगता है । वन्दन मिश्र इस रहस्य का उद्घाटन भी करता है कि अपने पिता राजा वरुण के यहाँ बारह वर्ष में होनेवाले यज्ञ चल रहा था और उस यज्ञ के अनुष्ठान के लिए सात श्रेष्ठ पंडितों को जल में डुबाने के बहाने उसने उन्हें उस यज्ञ में भेज दिया । राजा जनक की आज्ञा के अनुसार वन्दन मिश्र सातों पंडितों को लेकर आते हैं । अष्टावक्र को अंत में अपने पिता वापस मिलता है । अष्टावक्र के चरित्र का उज्वल पक्ष यह है कि शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त करने के बाद राजा द्वारा दिये गये पुरस्कार वह स्वीकार ही नहीं करता, अवस्था में छोटे होने पर भी उसमें जो वैराग्य भावना थी वह बडे बडे पंडितों को भी प्राप्त नहीं थी । उसने अपने ऐसे पिता की हार का बदला लिया जिसने अपने बेटे को शाप देकर अष्टावक्र बना दिया । जब उसके पिता वेद पाठ करते थे तो उदात्त को अनुदात्त पढ जाते । बेटे ने पिता को इस प्रकार जब आठ स्थानों पर टोका तो पिता ने क्रोध से शाप देते हुए कहा कि उसके अंग आठ स्थानों से टेढे हो जाएँगे । फिर भी अपने पिता से बदला लेने की बात भी वह नहीं सोचता । उसकी राय में पिता तो आकाश से भी महान है । उस छोटे बालक ने अपनी प्रतिभा से यह सिद्ध किया कि आयु के अनुसार छोटे बडे का निर्णय करना मूर्खता की बात है, अग्नि की एक छोटी

चिनगारी जंगल के सूखे पेड़ों को जलाने की क्षमता रखती है । अष्टावक्र के विकृत रूप को देखकर जनक के सभा के जिन पंडितों ने उनकी हँसी उड़ायी उन सभी लोगों ने अंत में उनकी महानता स्वीकार की ।

५. नैमिषारण्य का नकुल

आडम्बरपूर्ण यज्ञ करने से यज्ञ की सार्थकता नहीं मिलेगी । ममता को छोड़कर तथा परमात्मा में विलीन होकर जो व्यक्ति कर्म करेगा उन्हें उसका यज्ञ प्राप्त करेगा । यह आदर्श प्रस्तुत एकांकी में गूँज उठता है ।

यज्ञ के बाद भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, श्रीकृष्ण, वेदव्यास, युधिष्ठिर आदि अपने द्वारा किये गये यज्ञ की प्रशंसा करते हैं । उस समय एक विचित्र प्राणी नकुल जमीन पर पड़ी हुई जूठन से अपना शरीर घिसता रहता है । यह देखकर युधिष्ठिर उसे हविष्यान्न डाल देता है ताकि उसकी सारी खुजली मिट जाए । लेकिन नकुल यह नहीं खाता है । इसका रहस्य जानने के लिए वेदव्यास उसे मनुष्य बना देता है । मनुष्य बन जाने पर वह पांडवों से उस यज्ञ को व्यर्थ कहता है । कारण पूछने पर वह अपनी कहानी सुनाता है । नैमिषारण्य में एक ब्राह्मण परिवार है । परिवार का प्रत्येक सदस्य अपना सारा जीवन भगवद्भक्ति और उपासना में व्यतीत करता है । भिक्षा वृत्ति से उन्हें जो मिलता है उससे अपने अतिथि को खिलाने के बाद ही अपने परिवार को परोसते हैं । एक दिन ब्राह्मणी भूख से रोते हुए एक बालक को घर के सामने से जाते हुए देखकर

उसे बुलाया और अपने सामने बिठलाकर खिला दिया । उस बालक की जो जुठन भूमि पर पडी थी वहीं से नकुल का जन्म हुआ । ये जूठन उनके आगे के शरीर से लगी । इसलिए आधा शरीर सोने का हो गया । अपने पीछे के शरीर को स्वर्णमय बनाने की इच्छा से नकुल युधिष्ठिर की विराट यज्ञ वेदी के सामने आया । उसका विचार था कि यज्ञ में भाग लेनेवाले हज़ारों अतिथियों की जुठन की कणों में लोटकर उसका शेष शरीर स्वर्णमय हो जाएगा । लेकिन बार बार लोटने पर एक रोयाँ भी स्वर्णमय नहीं हुआ । इसलिए नकुल ने यज्ञ को व्यर्थ कहा । यह सुनकर युधिष्ठिर ने भूखे और विकलांग को अन्न दान देने का वचन दिया ।

यज्ञ की व्यर्थता के संबन्ध में नकुल ने जो कुछ कहा वह विचारणीय है । अपना भोजन एक भूखे आदमी को समर्पित कर भूखा ही उठ जानेवाला आदमी सबसे बडा पुण्य ही कर रहा है ।

5. सुकन्या

इच्छा और वासना जीवन के दो अभिन्न अंग है । वासना ही जीवन में मनोवृत्ति को प्रेरित करती है । यह मनोवृत्ति आकांक्षा पर आधारित है । मन में स्वाभाविक रूप से उठनेवाली वासना को दबाना उचित नहीं, उसकी तृप्ति हमें अवश्य करनी है । लेकिन तृप्ति का साधन उचित होना चाहिए । तृप्ति का अनुचित साधन चुननेवालों को बाद में पछताना पडता है । परंपरा से भारतीय

नारी पातिव्रत्य धर्म को सबसे श्रेष्ठ और उच्च स्थान देती है । अनन्तकाल से वह अपने चरित्र की उदात्तता और महनीयता के लिए मशहूर है, पति के प्रति उसके मन में जो एकनिष्ठ प्रेम और सेवाभाव है उससे प्रेरित होकर जीवन के राहों पर उपस्थित होनेवाली कठिनाइयों को वह सहर्ष झेलती है । भारतीय नारी चरित्र के इस गुण को मूर्तिमान रूप में "सुकन्या" में प्रस्तुत किया गया है ।

बूढ़े महर्षि च्यवन के साथ ब्याही सुकन्या के मन की परीक्षा लेने के लिए अश्विनीकुमार दो नवयुवकों के छद्म वेश में महर्षि के आश्रम में एक बार आते हैं । महर्षि उस समय समाधि में बैठ रहा था । यह कहते हुए दोनों युवक सुकन्या के मन को प्रलोभन में फँसाना चाहते हैं कि सुकन्या जैसी अनुपम सुन्दरी के लिए बूढा महर्षि कभी योग्य नहीं, और वृद्ध महर्षि का परित्याग करके उनमें से किसी एक का वरण कर अपनी शेष ज़िन्दगी को सुखमय बनायें । लेकिन सुकन्या उनके प्रलोभन में फँसनेवाली नहीं थी । उसका कहना था कि अपने पूज्य पति की सेवा करना उसका पुनीत व्रत है, अपने पति के माथे पर पड़ी हुई झुर्रियाँ, जीर्णशीर्ण गात्र, ढुलते हुए चँवर की भाँति श्वेत केश, दन्तविहीन मुँह, इन सबको प्रेम का आधार नहीं मानती बल्कि निर्मल प्रेम और सात्विक आचार को ही प्रेम की कसौटी मानती है । सुकन्या की श्रद्धानिष्ठा से प्रसन्न होकर अश्विनीकुमारों ने बूढ़े च्यवन महर्षि को सुकन्या के योग्य बना देने के लिए उन्हें ऐसा एक द्रव पान कराया कि उसका बुढापा यौवन में बदल गया । अपने बूढ़े पति में इतना आश्चर्यजनक परिवर्तन आने के बाद भी सुकन्या उसे पहचानती है,

सुकन्या जैसी सत्यवती स्त्रियाँ अपने पति को प्रत्येक परिस्थिति में पहचान लेंगी । अश्विनी कुमारों द्वारा सुकन्या की जो परीक्षा होती है, उसके माध्यम से एकांकीकार ने ऐसा प्रश्न उठाया है कि क्या स्त्री का जन्म ही पुरुष की परीक्षा लेने के लिए ही हुआ है और पुरुषों को स्त्रियों की सत्यनिष्ठा पर विश्वास क्यों नहीं । अधिकांश पुरुष समझते हैं कि स्त्रियों के मात्र शरीर में ही सौंदर्य है । उनके हृदय का जो सौन्दर्य है उसे परखने के लिए पुरुष के पास आँखें नहीं ।

6. सन्देह की निवृत्ति

पारिवारिक रिश्तों में दरारें पड़ने के कई कारण है पत्नी के प्रति पति के मन में वहम की दृष्टि पैदा होना इसमें एक कारण है, निरीह नारी अक्सर अपने पति के शोषण की शिकार बनती है, पति द्वारा उसके चरित्र पर लांछन लगाया जाता है, यहाँ तक कि कभी कभी अपनी ज़िन्दगी भी बलि देनी पड़ती है । नारी शोषण की परंपरा बहुत पुरानी है । "संदेह की निवृत्ति" एकांकी इसका स्पष्ट प्रमाण है ।

जब इन्द्र की नारकीय दृष्टि महर्षि गौतम की रूपवती पत्नी अहल्या पर पड़ी तब से लेकर गौतम का सारा चैन नष्ट हो जाता है क्रोध से जल उठकर वह अपनी पत्नी की हत्या करने का निश्चय लेता है और हत्या-कार्य पुत्र चिरकारी पर सौंपता है । उसने बेटे से भी यह कहा कि उसे हत्या का कारण जानने का अधिकार नहीं । असमंजस

में पड़े हुए पुत्र से यह कहती हुई माता सांत्वना देती हैं कि माता का वध करके वह किसी भी प्रकार पाप के भागी नहीं होंगे । माता की प्रेरणा से वशीभूत हो वह कृपाण उठाकर प्रहार करने के लिए उद्दत हो रहा था कि गौतम वहाँ पहुँचता है, और अपनी निर्दोष पत्नी से क्षमा माँगता है, इन्द्र के एक सहचर गंधर्व ने ही गौतम को भ्रम में डाल दिया था कि ऋषि पत्नी अहल्या इन्द्र के वैभव की ओर आकृष्ट हुई है ।

इस पौराणिक घटना के माध्यम से एकांकीकार ने उन लोगों को चेतावनी दी है जो क्रोधाग्नि में जलकर बिना सोच विचारे कोई फैसला देता है प्रत्येक कार्य करने के पूर्व आवश्यकता से अधिक सोचने से कुछ अच्छे परिणाम निकलते हैं । चिरकारी बहुत समय तक सोचता रहा कि बिना कारण जाने माता का वध करना और पिता की आज्ञा का पालन करना कहाँ तक उचित है, और उसका सोच विचार ही गौतम के पाप मोचन का बहुत बड़ा वरदान सिद्ध हुआ । यदि बिना विचारे चिरकारी माता का वध कर देता तो गौतम जैसे महाऋषि के जीवन भर की तपस्या नष्ट हो जाती । एकांकीकार की राय में चिरकारी का यह गुण सभी के लिए आदर्श है । अतः कोई भी कार्य करने के पूर्व उसके सभी पक्षों पर विचार करना परमावश्यक है ।

7. एक कमंडल जल

क्षणिक वैभव में मोहित व्यक्ति जीवन का सही रास्ता भूल जाता है । वह यह तथ्य न सोचता है कि ये सारे वैभव नश्वर है ।

वैभव के मोह में लोग बहुत धन कमाते है, सोने, चाँदी आदि गहनें खरीदते है, साम्राज्य विस्तार करते है । लेकिन ये सभी वैभव कुछ क्षणों के बाद नष्ट हो जाते है । ज़िन्दगी के झूठे सुखों में अपने को सम्राट मानकर अपने अहंकार में जीवन का सच्चा मार्ग भूलनेवाले एक नरेश का एक साधु के दर्शन से अपना सही रास्ता दिखाना ही एकांकी का कथ्य है ।

एक दिन कलिंग नरेश अपने साथियों के साथ आखेट करते समय एक सफेद हाथी का पीछा करते हुए एक निर्जन वन में आ पहुँचे । मार्ग भूलकर राजा तीन दिन एक मरुस्थली में भटकते रहे । अन्त में भूख और प्यास से वह विवश बन गया, और एक बूँद पानी के लिए तरसने लगा । तब उस रास्ते से गुज़रे एक महात्मा ने अपने कमंडल से उन्हें पानी पिलाया । इसलिए राजा ने बहुत प्रसन्न होकर प्रतिदान के रूप में अपना राज्य दान देने का वचन दिया । लेकिन उस महात्मा ने राजा के गर्व को चकनाचूर कर दिया । उस महात्मा की दृष्टि में राजा के सारे राज्य से भी बढकर मूल्य एक कमंडल जल में है । उसे ऐसे राज्य की आवश्यकता है जिसे पशुपक्षि प्रतिदिन अपने उदर में भर लिया करते हैं । महात्मा ने राजा को समझाया कि बडे बडे साम्राज्य बनते हैं और बिगडते हैं किन्तु प्रकृति का साम्राज्य दिनों दिन फलता फूलता है, और इसमें निवास करता हुआ प्रत्येक प्राणी सुखी होकर जीवन का आनन्द प्राप्त करता है ।

भटकने के बाद ही मनुष्य सत्य को पहचानता है । भौतिक सुख सुविधायें, धन दौलत, आभूषण, सोना, चाँदी, हीरे,

जवाहर इनमें से कोई भी आदमी के मन की अशांति मिटा नहीं सकता । उसे सत्य का दर्शन करना है । एकांकीकार की राय में आदमी की ज़िन्दगी तभी धन्य हो जाती है जबकि वह ज़िन्दगी कमंडल का जल बन जाए, जिससे संसार का सूखे कंठ तृप्त हो जाए ।

8. योगाग्नि

सबकी रक्षा करने का विधान प्रभु के हाथों में है । इस संसार की अग्नि से मुक्ति मिलने का एकमात्र उपाय यह है कि अपना सर्वस्व परमात्मा के चरणों में समर्पित कर देना है । परमात्मा में विश्वास रखकर सबसे बड़े ध्यान से अपना कर्तव्य करें तो ईश्वर सबकी रक्षा करेगी । यही तथ्य प्रस्तुत एकांकी में है ।

महाराज जनक के साधना कक्ष में अष्टावक्र की कथा सुनने के लिए प्रेमानन्द, स्वरूपानन्द आदि श्रोतायें आ पहूँचे । कथा आरंभ करते समय पर्णकुटि में आग लग जाती है, इसलिए वहाँ एक शोरगुल होता है । राजा जनक के अलावा सभी लोग आग बुझाने को दौड जाता है । पर्णकुटी में आग लगने पर भी राजा कथा सुनने में उत्सुक बन जाता है । राजा को इसलिए डर नहीं हुआ कि प्रभु के हाथों में अपना सर्वस्व समर्पित करने के बाद ही वह कथा सुनने केलिए आया था । उसे अडिग विश्वास है कि जो अपने आपको परमात्मा के शरण में समर्पित कर देते हैं उन्हें संसार की आग से मुक्ति मिलेगी । मिथिला

के जल जाने की तनिक भी आशंका राजा जनक को नहीं क्योंकि उसने मिथिला को प्रभु के चरणों में समर्पित कर दिया है । जनक का कथन सत्य ही सिद्ध हुआ । अग्नि बुझाने के लिए जो श्रोता गण चले गये उन्हें यह देखकर महान आश्चर्य हुआ कि उस आग की लपट ने कुटियों को छुआ भी नहीं सब लोगों ने यह समझा कि आग कुछ नहीं बल्कि राजा की योगाग्नि का रूप है ।

9. पारस का स्पर्श

मोह और अहंकार के कारण मनुष्य दुःखी बन जाते है उनके विवेक खो जाते है । ईश्वर सबके मन में पारसमणि के समान रहते हैं । पारस एक तरह का रासायनिक पत्थर है जो लोहे को सोना बनाते हैं । ईश्वर भी पारसमणि के समान है । ईश्वर के साथ जो व्यक्ति संबन्ध जोडते है उसे वह दिव्य बना देते है । इसके संबन्ध में लेखक का मत यह है - "आनन्दमय ब्रहम पारस हमारे हृदय में तो है किन्तु हमारे मोह और अहंकार के मखमल का टुकडा इसप्रकार बीच में आ गया है हमारे दुःख रूपी लौहे का स्पर्श आनन्दरूपी पारसमणि से नहीं होता । जैसे सूर्य आकाश में चमकते तो है लेकिन बरसात में जब आकाश में घने बादल छा जाते है तो सूर्य आकाश में दिखाई नहीं देता क्योंकि घने बादल सूर्य को अपने छिपा लेते है इसका मतलब यह नहीं कि सूर्य आकाश में नहीं । इसी प्रकार अहंकार के पर्दे ने प्रभु रूपी पारस को छिपा लिया है ।"[1]

---

1. चित्र एकांकी - पृ. 114 - डॉ. रामकुमार वर्मा

स्वामी हरिहरानन्द एक महात्मा है । उनके दो शिष्य है मूरतदास और सूरतदास । एक दिन स्वामीजी उनसे कहते है - ईश्वर सबके मन में पारसमणि के समान रहते है । यह सुनते ही उन्हें पारसमणि के संबन्ध में जानने की इच्छा हुई । स्वामिजी कहता है कि उनके पास भी एक पारसमणि है । जब स्वामिजी बाहर चले गये तब दोनों ने स्वामिजी की कुटी में पारसमणि की खोज शुरू की । लौट आते समय कुटी में अपने सभी सामान तितर-बितर लेटे देखकर स्वामिजी को कारण समझ गया । स्वामिजी ने सोचा कि पारसमणि के लोभ में चोरियाँ, हत्यायें और रक्तपात भी होंगे । इसलिए उसने पारसमणि गंगा में फेंक दिया ।

10. राजरानी सीता

सीता का चरित्र नारी के अखण्ड सतीत्व का दस्तावेज है । अशोकवन बन्धिनी सीता का उदात्त चरित्र ही एकांकी में अंकित है । अशोकवन बन्धिनी के रूप में रहते वक्त ही उनके चरित्र की दृढ़ता और ही स्पष्ट हो जाती है । प्रिय विरह में दग्ध उसका मन अपने प्रिय की स्मृति में लीन है । उसको पूर्ण विश्वास है कि पति के प्रति अपने मन में जो एकनिष्ठ प्रेम है वह उसकी रक्षा करेगी । रावण की शक्ति संपन्नता के प्रलोभन में उसका मन कभी नहीं फँसता । रावण की सजा भी उसे अपने निश्चय से नहीं हटा देगी। अधिकार प्रमत्त शक्तिशाली लंकाधीश रावण भी सीता के एकनिष्ठ प्रेम के सामने पराजित हो जाता है । सीता के मन में राम के प्रति जो आस्था और विश्वास

है वह उसे कठिन से कठिन क्षणों में भी शक्ति और साहस प्रदान करते हैं । इस एकांकी में सीता के अखण्ड पतिव्रत धर्म के साथ साथ उनके शील की दृढता भी उभर आती है । अशोक वाटिका में रहते वक्त उसने जो दृढता, निर्भीकता दिखायी वह बिलकुल सराहनीय है ।

।।. शैलशिखर

भारतीय सभ्यता के अनुसार सच्चा मानव वही है जो विश्वकल्याण केलिए अपने प्राणों की बलि देने के लिए तैयार है । विश्व की भलाई के लिए अपना सब कुछ दान करनेवाले एक महान मानव का उज्वल चरित्र एकांकी में प्रस्तुत किया गया है ।

वृत्तासुर ने गंध मादन पर्वत पर घोर तप करके ब्रह्मा से यह वर पाया कि किसी धातु या लकडी के आयुध से वह मारा नहीं जाएगा तथा जैसे-जैसे वह लडता जाएगा इसकी शक्ति उत्तरोत्तर बढती जाएगी । जब वृत्तासुर द्वारा जनसंहार बढता रहा और पृथ्वी पर प्रलय की सृष्टि की गई तो इन्द्र, देवतागण, उर्वशी, कार्तिकेय, विश्वकर्मा आदि मिलकर दधीची से अस्थिदान देने की प्रार्थना करते है जिसे वे खुशी के साथ स्वीकार करते है । अस्थिदान देते हुए वे जो सन्देश देते है वह काफी महत्वपूर्ण है । "जब देश का भविष्य संकट में पडता है तो हरेक नागरिक का कर्तव्य है कि वह देश के भविष्य को सर्वनाश से बचाये ।"[1] विश्वकल्याण में मानव के बलिदान की कथा सत्य रहेगी ।

---

1. मयूरपंख - पृ. 47 - डॉ. रामकुमार वर्मा

12. भरत का भाग्य

आज हम ऐसे एक युग से गुज़र रहे है जहाँ पारिवारिक रिश्ते प्रतिदिन शिथिल होते जा रहे है । तुच्छ स्वार्थों के लिए भाई भाई के बीच गलाकाट व्यवहार हो रहा है पारिवारिक रिश्तों में जो आत्मीयता होनी चाहिए यह अलगाव में बदलती जा रही है । परिवार के सदस्यों को आपस में बांधनेवाले प्यार के सूत्र मज़बूत नहीं इसलिए बहुत जल्दी टूट जाता है । यों प्यार के अभाव में अपने ही घर में अजनबी लगानेवाले आधुनिक मानवों के सामने रामकुमार वर्मा ने प्रेम की अनूठी मिसाल प्रस्तुत किया है । रघुकुल के भ्राताओं का आदर्शपूर्ण जीवन दुविधाग्रस्त मानव को पदप्रदर्शन करने में लाभदायक सिद्ध होगा यही एकांकीकार का विश्वास है ।

राम के वनवास की अवधि की पूर्ति होते ही राम-लक्ष्मण और सीता से मिलने की जो व्याकुलता भरत में है उसी को लेकर एकांकी का कथ्य बुना गया है । श्रीराम के आगमन की सूचना मिलकर भरत हर्षातिरेक से मूर्च्छित हो जाता है । यह तो सही है कि भरत वनवास के लिए नहीं गया अयोध्या में ही रहे । लेकिन पूरे चौदह वर्ष अयोध्या में अपने भाई के वियोग में पादुकाओं का पूजन करते हुए दिन बिताते वक्त उसका मन बिलकुल बेचैन था, रह रहकर यह चिन्ता उसके मनको नोचती रहती है कि अपने जीवन का अर्थ है अपने पिता का मरण और माताओं का वैधव्य, भाइयों का चौदह वर्षों के लिए तपस्वी वेश में वन में निवास, राजकुमारी सीता को असह्य वेदना । भरत ने

पहले ही ठान लिया था कि यदि वनवास की अवधि के बाद राम-लक्ष्मण और सीता नहीं लौटेंगे तो अपनी जीवनलीला अवश्य समाप्त करेंगे। । इसलिए उनके आगमन की सूचना मिलते ही भरत की खुशी की कोई सीमा नहीं होती है । दोनों के पुनर्मिलन के साथ एकांकी समाप्त होता है ।

पौराणिक एकांकी पुनरीक्षण

पौराणिक एकांकियों के विश्लेषण से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि रामकुमार वर्मा ने प्राचीन विस्मृत चरित्रों का स्मरण दिलाकर देश के आत्मगौरव को स्थापित करने का प्रयास मात्र ही किया है । सांस्कृतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना और आदर्शवादी नैतिकता का अतिरेक आग्रह उनके पौराणिक एकांकियों में मिलता है । आदर्शवाद की जो धनी चेतना उनके मन में छायी हुई है इन एकांकियों के पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्ति पाती है । पुराणों में प्रयुक्त आख्यानों के अन्तर्गत नैतिक जीवन व्यतीत करने का उपदेश निहित है । अधिकतर पौराणिक आख्यानों के पीछे कोई खास जीवन दृष्टि है । भारतीय चिन्तन धारा में पुरुषार्थ के चार जीवन मूल्यों को जीवन का साध्य स्वीकार करते हैं । महर्षि दधीची, कश्यपनन्दन महर्षि अरिष्टनेमी का पुत्र कल्पनेमि आदि ने मनुष्य के नैतिक और आध्यात्मिक विकास पर बल देनेवाली भारतीय चिन्तन धारा को ही आत्मसात किया है । इन पात्रों के जीवन का लक्ष्य है भारतीय चिन्तन धारा के अनुसार अपना अस्तित्व बना रखना और आत्मा की निर्मलता को न नष्ट करना । उनके पौराणिक एकांकियों में इस तथ्य पर ज़ोर दिया गया है कि व्यापक हित की अपेक्षा निज हित का अधिक महत्व दिये जानेवाले जीवनमूल्यों पर जीवन की सार्थकता कभी नहीं टिकती

पौराणिक पात्रों का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उन्होंने अध्ययन नहीं किया है मात्र पौराणिक पात्रों के आदर्श और महानता पर ही उनकी दृष्टि टिकी रहती है । अतः उनके पौराणिक एकांकी पौराणिक घटनाओं की पुनरव्याख्या मात्र रह जाती है ।

नाटककारों की वैयक्तिक रुचि के अनुसार ही पुराण का उपयोग होता है । कभी कभी रामकुमार वर्मा ने प्रगतिशील विचारधारा से प्रेरित होकर पौराणिक प्रसंगों का विश्लेषण नहीं किया । अतः उन्होंने पुराण की प्रतीकगत शक्ति को उभारने की कोशिश नहीं की है । पुराण के प्रतीकों के आन्तरिक भावबोध को सक्रिय युग चेतना से संपृक्त करके प्रस्तुत करना एक नई प्रवृत्ति है । इस प्रवृत्तिगत मोह में पडकर आदर्श पौराणिक चरित्रों पर लांछन लगाना रामकुमार वर्मा को अच्छा नहीं लगता । अतः उन्होंने पौराणिक चरित्रों को नये दृष्टिकोण से आंकने की कोशिश नहीं की है । अपनी रचनाओं के माध्यम से नई पीढी में जीवनमूल्यों के प्रति एक नई स्फूर्ति, उन्मेष और उमंग जागृत करना ही रामकुमार वर्मा का एकमात्र लक्ष्य है ।

चौथा अध्याय

रामकुमार वर्मा के एकांकियों में सामाजिक चेतना

1. चंपक

जब समाज की आर्थिक व्यवस्था का संतुलन बिगड जाता है तो उसका खतरनाक परिणाम निकलता है । बिल्ली, कुत्ते जैसे पालतू जानवरों को मिलनेवाली सुख सुविधाओं से भी आम आदमी वंचित रहता है तो आम आदमी के मन में इन जानवरों के प्रति ईर्ष्या पैदा होती है । प्रस्तुत एकांकी में रामकुमार वर्मा समाज की ऐसी आर्थिक विसंगति पर चोट करते हैं ।

किशोर नामक एक कवि एक दिन जाडे की रात में टहलते समय रास्ते में ठंड से ठिठुरते हुए एक घायल कुत्ते को देखता है । कवि उसे घर ले जाकर उसकी सेवा शुश्रुषा करता है । उसके लाड-प्यार में बहुत अधिक समय बिताने के कारण एक दिन कवि उसे बेचता है । लेकिन कवि किशोर की बहन ललिता कुत्ते के वियोग से दुःखी बन जाती है । बहन का दुःख दूर करने हेतु कुत्ते को वापस खरीदने के लिए निकलता है । इतने में वहाँ एक बूढा लंगडा भिखारी पहुँचता है । भिखारी से किशोर को मालूम होता है कि कुत्ते को मारकर उसी ने सडक पर फेंक दिया था, क्योंकि वह जिस मुहल्ले में रहता था वहाँ एक अमीर घर में चंपक नामक पालतू कुत्ता था । भिखारी के भूखे रहने पर कोई उसे एक सूखी रोटी तक नहीं देता । तब कुत्ते को प्राप्त लाड-प्यार वह न सह सका । इसलिए एक दिन उसने कुत्ते को पकडकर खूब मारा । बाद में भिखारी को बहुत पश्चात्ताप हुआ ।

भिखारी के अवचेतन मन में जो विद्रोह सुप्त पडा था, वही विद्रोह कुत्ते को मारने के लिए उसे प्रेरित करता है । कुत्ते पर दिया गया प्रहार दरअसल समाज की बिगडी हुई आर्थिक व्यवस्था पर दी जानेवाली चोट है ।

इस घटना के संबन्ध में सुनकर भावुक कवि किशोर यों सोचने लगता है कि जहाँ दुःख और वेदना का अथाह सागर है वहाँ प्यार की आवश्यकता है । इस एकांकी में वर्मा का व्यंग्य उन संभ्रान्त घराने के लोगों के प्रति भी है जो अपने पालतू जानवरों केलिए हज़ारों रुपये खर्च करते है, लेकिन गरीब पडोसिन के दुखदर्द को पहचानने की कोशिश भी नहीं करते ।

2. एक तोला अफीम का कीमत

आधुनिक समाज में दहेज की समस्या ने एक विकट रूप धारण कर लिया है । दहेज के कारण आज समाज में हत्यायें होती है । अनेक शताब्दियों से यह प्रथा हमारे समाज में मौजूद है । आज भी भारत के कुछ गाँवों में कन्याओं के जन्म होते ही उसकी हत्या की जाती है । जब गरीब घर की लडकी महसूस करती है कि वह अपने माता पिता के लिए एक बोझ बन गई तब वह खुदखुशी करती है । यहाँ तक कि मनोवांछित दहेज न मिलने पर ससुराल के लोग बहू को जीवित जलाते हैं । प्रस्तुत एकांकी मुख्य रूप से इस दहेज समस्या पर आधारित है ।

दहेज प्रथा ने समाज में कई पेचीदी समस्याओं को जन्म दिया है । पर्याप्त दहेज के अभाव में पति-पत्नी का दाम्पत्य जीवन तनावपूर्ण बना रहता है ।

पुरानी पीढी और नई पीढी के बीच अक्सर संघर्ष होता ही रहता है । नई पीढी अपने साथ नये विचार लेकर आती है जिसको स्वीकार करने के लिए पुरानी पीढी तैयार नहीं । मुरारीमोहन और उसके पिता के बीच में संघर्ष इसलिए होता है कि मुरारी, पिता की इच्छा के विरुद्ध एक पढी लिखी लड़की से शादी करना चाहता है । पिता, बेटे का विवाह ऐसी जगह कराना चाहता है जहाँ दहेज खूब मिले, लड़की चाहे जैसी भी हो । इसी प्रकार दोनों के विचारों में संघर्ष होते हैं । मुरारी पिता की सन्तुष्टि केलिए अपने कलचर को छोडना नहीं चाहता । उनकी राय में - Marriage is an event in life किसी फूहड गंवार देहातिन से विवाह कर नष्ट करने के लिए नहीं । परिस्थितियों की इन्हीं विषमताओं से ऊबकर वह आत्महत्या करना चाहता है ।

गरीब परिवार की लड़की विश्वमोहिनी के जीवन की समस्या दहेज से संबन्धित है । अधिक दहेज लेकर उसकी शादी करा देने की आर्थिक स्थिति उसके पिता में नहीं । पिता अपनी सारी ज़मीन बेचकर पुत्री का विवाह करा देना चाहते हैं । किन्तु विश्वमोहिनी अपने घर की आर्थिक स्थिति एवं माता-पिता की मनोदशा से व्यथित होकर आत्महत्या करना चाहती है । इसलिए अफीम खरीदने के लिए

वह मुरारी की दूकान में पहुँचती है । वहाँ केवल एक तोला अफीम है जिसे मुरारी ने अपने लिए सुरक्षित रखा है । विश्वमोहिनी की अस्त-व्यस्तता तथा उखडी बातों से सन्देह होकर मुरारी उसे अफीम के बदले हर्र की गोली देता है । दोनों आपस में मृत्यु का कारण खोजते हैं । एक दूसरे को समान परिस्थिति में फंसते हुए पाते हैं ।

3. पुरस्कार

बेमेल विवाह नारी के लिए एक अभिशाप है । कुछ माता-पिता बेटी की शादी बूढे पुरुषों से करा देते हैं । परिवार की निर्धनता और दहेज के रूप में बडी रकम न जुटा पाने के कारण अपनी लडकी की इच्छा अनिच्छा पर ध्यान न देने के लिए माता पिता मजबूर होते हैं । विवाह की संस्था नारी के साथ क्रूर व्यंग्य करती है जिससे अपने स्वप्नों के संसार बसाने में वह असफल हो जाती है । ऐसे बेमेल विवाह पति-पत्नी के दाम्पत्य जीवन में कई दरारें पैदा करता है । पति-पत्नी के बीच विश्वास और सहयोग की भावना मिट जाती है । यह भी नहीं बूढे पति के मन में शक की भावना पैदा होती है । डॉ. वर्मा प्रस्तुत एकांकी में अठारह वर्ष की नलिनी एवं अठतालीस बरस के पुलीस इन्स्पेक्टर राजबहादुर के वैवाहिक जीवन की विडंबना को रेखांकित करते हैं । शादी के बाद भी अपने प्रेमी प्रकाश को वह भूल न सकती । अठतालीस बरस का वह आदमी, नलिनी केलिए पति नहीं, पिता ही लगता है । राजबहादुर की अनुपस्थिति में एक दिन नलिनी से मिलने के लिए प्रकाश छद्म वेष में आता है । प्रेमपूर्ण बातचीत के बीच किसी के आने की आहट

सुनते ही प्रकाश अपना पता और एक चिट्टी नलिनी के हाथ में देकर भागता है । यह चिट्टी पढते ही राजबहादुर क्रोध के साथ नलिनी को मारने के लिए पिस्तौल लेता है । लेकिन नलिनी यों कहकर पति को विश्वास दिलाने की कोशिश करती है कि राजनीति के अपराध में फरार कैदी प्रकाश को गिरफ्तार करवाकर एक हज़ार रुपये पुरस्कार पाने केलिए ही उसने प्रकाश से प्रेम का स्वांग रचा । पत्नी की इन बातों में आकर राजबहादुर जब पिस्तौल रख देते है तो नलिनी पिस्तौल उठाकर अपने और प्रकाश के संबन्ध की सत्यता उद्घाटित कर राजबहादुर को मार डालने को उधत् होती है । तब प्रकाश पहूँचकर नलिनी के हाथ से पिस्तौल छीन लेता है और राजबहादुर की रक्षा करता है ।

इस एकांकी में बेमेल विवाह से उपजी समस्याओं की स्थापना की गई है । शादी के पहले लडकी के हृदय की बातों पर ज़रा भी ध्यान न देनेवाले माता पिता दरअसल उनकी ज़िन्दगी को तबाह कर रहे हैं । एकांकी की नलिनी जैसी बहुत नारियाँ शादी के बाद पति से प्यार न करते हुए भी प्यार का अभिनय करती है । यह बनावटी प्रेम दाम्पत्य जीवन की सबसे बडी विडंबना है ।

५. कलंडर का आखिरी पन्ना

प्रस्तुत एकांकी में चीनी युद्ध के भीषण परिणाम तथा उससे उपजी आर्थिक समस्या का चित्रण है । चीन युद्ध में अनेक सैनिक मारे गये । इसके फलस्वरूप उनके आश्रितों का जीवन बहुत शोचनीय बन

गया । युद्ध के पश्चात् बहुत से मज़दूर बेकार हो गये । आर्थिक शक्ति पूँजीपतियों और व्यापारियों के हाथ में केन्द्रित हो गयी । मध्यम वर्ग के लोगों को बहुत अधिक कठिनाईयों का सामना करना पडा । उनके पास खाने के लिए अन्न नहीं, पहनने को कपडा नहीं और रहने को झोंपडा भी नहीं । युद्ध की विभीषिकाओं के ऐसे दुष्परिणामों का चित्रण है प्रस्तुत एकांकी । साथ ही वर्मा ने इस तथ्य की ओर भी संकेत किया है कि आर्थिक कठिनाईयों से जूझते वक्त भी कुछ आदमी उससे राहत मिलने के लिए अनैतिक राहों को कभी न अपनाते । वे ऊँचे आदर्श में अडिग रहते हैं । ऐसे एक आदर्श आदमी के चरित्र का उज्वल पक्ष एकांकी में उभारा गया है ।

अवकाश-प्राप्त बिहारीलाल का ज्येष्ठ पुत्र हवलदार सुदर्शन की मृत्यु हुई । उसके छोटे भाई मनोहर अपने भाई की जीवनी लिखकर छापना चाहता है । लेकिन उसके पास रुपया नहीं । पिता के पास दो सौ रुपये हैं । उसमें से एक सौ रुपया वह मनोहर को देना चाहता है । लेकिन उस समय नसीबन बुआ नामक एक नारी अपनी पुत्र वधु के साथ वहाँ पहुँचती है । उसके पति युद्ध में मर गये । उनके जीवन की दैन्यावस्था सुनकर बिहारीलाल अपने मरहूँ बेटे की जीवनी छपवाने केलिए अलग रखी गई रकम वीरजवान की विधवा को देता है । उसे बहुत तुष्टि है कि अपने बेटे सुदर्शन का युद्ध में वीरगति पाने के उसी दिन - दिसंबर इकतीस में एक गरीब औरत विशेषकर एक नौजवान की विधवा को घरखा खरीदकर जीवनयापन के लिए थोडी सी रकम देने का अवसर उसे मिला । अपने परिवार की आर्थिक विपन्नता को

भूलकर दूसरों के दुःख दर्द को दूर करना उनकी ज़िन्दगी का मकसद है । बेटे की वीरता के उपलक्ष्य में सरकार द्वारा दिया गया एकत्रित पेंशन 1200 रुपये आस्पताल को दान में देता है । यदि वह चाहता है तो सेठ संपत्तलाल केलिए झूठा बहीखाता तैयार करके कुछ रकम कमा सकता था, और अपनी आर्थिक विपन्नता से मुक्त हो सकता था । लेकिन नैतिक मूल्यों को तरजीह देनेवाले बिहारीलाल जैसे आदमी आदर्श का हनन कभी नहीं करेगा ।

5. छींक

वैज्ञानिक उपलब्धियों की चरमसीमा पर भी इस युग में कई प्रकार के अन्धविश्वास फैले हुए हैं । स्त्रियाँ अपने पतियों का नाम नहीं लेतीं । उनका विचार है कि पतियों का नाम लेंगी तो कहीं देवी देवता रूष्ट हो जाऐंगे या परिवार की हानी हो जाएगी । कुछ लोग देवी को रिझाने केलिए मनुष्यों की बलि चढाते हैं । कुछ लोग घर से बाहर जाने के पहले मुहूर्त निकालते हैं । वास्तव में ये सब अन्धविश्वास अज्ञान के कारण है । इन अन्धविश्वासों से समाज को कोई लाभ नहीं बल्कि कई तरह की हानी होती है । प्रस्तुत एकांकी पंचम मिसिर नामक एक आदमी के अन्धविश्वासों को प्रस्तुत करता है । पंचम मिसिर अन्धविश्वासों पर अटूट आस्था रखनेवाला एक आदमी है । वह स्वप्न में विष्णुजी का दर्शन करता है । लेकिन जब विष्णुजी उसे वर दे रहा था तब संपत जी की छींक सुनाई पडती है । उसे वह अपशकुन समझता है । घर से बाहर जाते समय नेवले को या दूध देती हुई गाय को देखना शुभ शकुन समझता है । इसलिए नेवले को देखने के लिए सारी तैयारियाँ

करते हैं । किन्तु नेवला रोटी दिखाए जाने पर भी पिंजडे में नहीं बंद हो सका । फिर देवीदीन की गाय कांजी हाउस में बंद हो गया । इसलिए वह नेवला या गाय न देख सका । यह भी नहीं वह बाहर जाते समय बिल्ली रास्ता काट गयी । इन्हीं कारणों से वह दुःखी बन जाते हैं ।

6. पृथ्वी का स्वर्ग

इसमें आधुनिक जीवन के एक परंपरावादी धन-लोलुप व्यक्ति का चित्र है । धन की लोलुपता में मनुष्य अपनी इन्सानियत खो बैठता है, और उसकी एकमात्र चिन्ता धन बढाने में है । धन कमाने की सनक लगते ही सारे रिश्तों को भूल जाता है । तब उनके हृदय में न दया होती है और न सहानुभूति । ऐसे आदमियों को देखकर लेखक स्वयं पूछता है इस पृथ्वी का स्वर्ग कहाँ हैं ? इस प्रश्न का उत्तर भी वे देते हैं । पृथ्वी का स्वर्ग उस मानव के हृदय में बसता है जहाँ प्रेम है, दया है और सहानुभूति है ।

सेठ दुलीचन्द का भतीजा अचल पृथ्वी का स्वर्ग खींचना चाहता है । लेकिन उसे वातावरण और सामग्री न मिलते हैं । इसी चिन्ता में बैठते समय सेठजी वहाँ पहुँचते हैं । उसके साथ भारी बाक्स उठाए एक आदमी भी है । सेठजी उसे चार आने मज़दूरी देते हैं । मज़दूरी कम होने के कारण वह सेठजी से क्रुद्ध हो जाता है । मज़दूर के रूठ होने पर सेठजी उसे गाली देता है । इतने में एक भिखारिन ठंड से ठिठुरते हुए बच्चे को लेकर वहाँ पहुँचती है । अचल उसे बक्स से एक हरा दुशाला निकालकर देता है । सेठ के आते ही

बक्स खुला देखकर तथा दुशाला दे दिये जाने की बात सुनकर रोते चिल्लाते हैं । दुशाले में उसने पाँच हज़ार के नोट रखे थे । इसलिए अचल को वह बहुत गालियाँ देते हैं । तभी भिखारिन आकर दुशाला और रुपया वापस देती है । अचल बहुत खुश हो जाता है और कहता है कि "पृथ्वी का स्वर्ग" भिखारिन के हृदय में है ।

7. कहाँ से कहाँ

सास बहू का परस्पर संघर्ष प्रस्तुत एकांकी का हास्य बिन्दु है । सास बहू के पीछे दो परंपराओं का संघर्ष छिपा है । सास रूढिवादी विचारधारा में विश्वास रखनेवाली नारी है । सास के हृदय में बहू के प्रति द्वेष भावना है । सास और बहू के बीच में होनेवाले परस्पर द्वेष भाव ही उनके झगडों का कारण बन जाता है । सास और बहू दो परंपराओं के प्रतीक है । इसलिए दोनों की विचारधारा में भिन्नता होती है । भिन्न भिन्न विचारधाराओं में विश्वास रखनेवाले व्यक्ति जब आपस में मिलते हैं तब दोनों के बीच झगडा पैदा होता है ।

केसरीनन्दन की पत्नी है पद्मा तथा उनकी माँ है भवानी । भवानी अपनी बहू को हमेशा ताने मारने में तुली बैठी है । यहाँ तक कि बहू के संबन्ध में बेटे का कान भरती है । माँ की बातों में आकर वह पत्नी को मारने का उद्यत होता है । पद्मा का रुदन सुनकर माँ को दया आती है । वह अपनी बहू को निर्दोषी कहकर पुत्र को मारने से रोकती है । झगडा न होने का वादा भी करती है ।

प्रस्तुत एकांकी में नारी के मनोविज्ञान का चित्रण है । एक नारी को दूसरी नारी पर ईर्ष्या होती है । बहू और सास दोनों एक ही व्यक्ति को प्यार करती है । माँ पुत्र पर अपना अधिकार चाहती है । पत्नी पति पर भी अधिकार चाहती है । बहू के आने पर सास सोचती है पुत्र के प्रति उसका अधिकार कम हो जाएगा । इस कारण सास-बहू के बीच में झगडा होता है । लेकिन जब पुत्र यह मनोविज्ञान समझता है तब झगडा दूर हो जाता है ।

8. सही रास्ता

झूठ और अन्याय की रोटी खानेवाले आदमी अपना विवेक खो बैठते है । दंभी एवं स्वार्थ वृत्ति दलित पीडितों के शोषण का कारण बन जाता है । लेकिन ऐसे आदमियों को सही मार्ग निर्देशन करने के लिए कोई ईमानदार दोस्त है तो वे अपनी भूल कमज़ोरियों एवं बुराइयों को पहचान लेंगे और अपने आपको सुधारने की कोशिश करेंगे । अपने स्वार्थी एवं दंभी मित्रों को सही रास्ते पर लाने के लिए सत्यप्रकाश ने नाटकीय ढंग से जो भूमिका निभायी उस पर एकांकी का ढाँचा खडा किया गया है । उनके मित्र है-जयचन्द्र, महेन्द्रकुमार, केसरी, गिरधारीमल, जानमसीह आदि । दूसरों की कमाई पर फलने फूलनेवाले अपने मित्रों की आँखें खोलने के लिए सत्यप्रकाश अपनी मृत्यु का स्वांग रचता है । अपनी मृत्यु की झूठी खबर उनको दी जाती है । साथ ही उसकी पोषित पुत्री प्रभा एक पत्र वकील को देती है जिसमें सत्यप्रकाश ने सभी मित्रों को अन्तिम भेंट के नमस्कार किया था । पहली भेंट सेठ गिरधारीमल की है ।

शीशी में भरा हुआ खून है जिसकी स्लिप पर व्यंग्य है कि सेठ की मिलों में हज़ारों गरीबों का खून चूसा जा रहा है, इसलिए शायद खून कम पड जाए । इसलिए मैं अपना खून दे रहा हूँ । प्रो॰ महेन्द्रकुमार का उपहार दस चश्मों का बंडल है । इसमें आदेश है कि किताबें पढकर नहीं, विभिन्न चश्में पहनकर दुनिया की लियाकत ग्रहण कीजिए । जयचन्द्र वकील का उपहार शुद्ध कुलंजन का बंडल है । उस पर नोट है कि दिन पर झूठी बहस और झूठी गवाही देते आपका गला साफकर लिया कीजिएगा । सप्लाई आफीसर जानमसीह की भेंट में खाली बोरों के साथ स्लिप पर आलेख है कि भूखें गरीब किसानों को अन्न न देकर इस बोरे में बंदकर गोदाम में रखें । अंत में कवि केसरी की भेंट आती है - कवि जी कवि सम्मेलन में अपनी धाक जमाने के लिए ऊँचे स्वर में तान आलाप के साथ गाते हैं, साथ में खंजडी रहेगी तो कविता धाक जमाएगी ।

सभी मित्र अपने अपने उपहारों से अपनी कमज़ोरी समझते है । इस प्रकार सत्यप्रकाशजी अपने मित्रों को सही रास्ता दिखलाते हैं ।

9. रजनी की रात

प्रस्तुत एकांकी में इस बात पर विचार किया गया है कि समाज की बंदिशें एक हद तक आदमी के लिए अनिवार्य है । डॉ॰ वर्मा ने पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त एक विदुषी रजनी के द्वारा इस समस्या पर विचार किया है । रजनी की राय में परिवार या समाज मनुष्य की प्रगति केलिए बाधक है । वह जानती है कि नारी को समाज में कोई

स्वतंत्रता नहीं । वह सदैव पिता के, पति के या बेटों के गुलाम बनकर रहती है । उसकी राय में बन्धन मनुष्यता का कलंक है । वह इन्हीं सब बन्धनों से मुक्ति चाहती है । जब घर में विवाह की चर्चा होती है तब वह पिता से क्रुद्ध होकर एक निर्जन स्थान में अकेले रहती है । रजनी की सखी कनक के भाई आनन्द भी परंपरा की रूढियों का विरोधी है । लेकिन दोनों के विचारों में अन्तर है रजनी अपने हृदय को सुख दुःख से ऊँचा रखना चाहती है इसलिए वह समाज के सारे बन्धनों से मुक्ति चाहती है । लेकिन आनन्द को समाज से पलायन करने की इच्छा नहीं है वह समाज से लडकर नया सामाजिक संगठन बनाना चाहते हैं । समाज सदैव जर्जर हो गया है लेकिन समाज की समस्याओं का समाज में रहकर ही हल करना आवश्यक है । उस दिन रात में एक घटना होती है । आनन्द तथा रजनी की बातचीत के बीच एक बूढा आदमी रोते हुए वहाँ पहूँचते हैं । उनकी बेटी शशि नामक लडकी का कुछ गुण्डों ने अपहरण किया । बूढा बाप बेचैन हो जाते है । उनकी बेचैनी देखकर रजनी ने अपनी पिता की याद की । शशि के अपहरण की घटना सुनकर रजनी को अकेले रहने में डर लगती है । लेकिन आनन्द उन गुण्डों से लडकर शशि की रक्षा करते हैं । रजनी दूसरे दिन सबेरे घर छोडकर पिता के पास चली जाती है । रजनी स्वयं कहती है - नारी अबला है, दुर्बल है, वह स्वयं रक्षा नहीं कर सकती । उनकी रक्षा के लिए समाज की दीवारें आवश्यक है ।

10. जीवन का प्रश्न

विजातीय विवाह संबन्धी समस्या उठानेवाला एकांकी है "जीवन का प्रश्न" । विजातीय विवाह संबन्धी लोगों की

धारणा है कि जाति-पांति तोडकर विवाह करना संस्कार और कुलधर्म का विपरीत है । लेकिन डॉ. वर्मा समझते है कि पुरानी धारणाओं को दूर करना आम आदमी का कर्त्तव्य है । प्रस्तुत एकांकी में अभय द्वारा इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करते है ।

एक ज़मीन्दार लडका है - अभय । अभय की बहन है सोणिया । सुरसी और सोणिया सहेलियाँ है । सेठ किशनसिंह की लडकी है - "सुरसी" । अभय की माँ चम्पादे, सुरसी के रूप गुण से मुग्ध होकर उसे अपनी बहू बनाना चाहती है । अभयसिंह और सुरसी आपस में आकृष्ट बन जाते हैं । एक दिन अभयसिंह शिकार से लौटते वक्त यह रहस्य समझता है कि सुरसी असल में सेठ किशनसिंह की बेटी नहीं वरन् एक अहीर की लड़की है । अभयसिंह के मुँह से उनकी माँ भी यह रहस्य समझती है । इस तथ्य के समझने पर चम्पादे सुरसी को अपनी बहू बनाने से इनकार करती है । किन्तु अभयसिंह माँ को कई प्रकार से समझाने की चेष्टा करता है । सुरसी से विवाह करने को वह तैयार होता है ।

एकांकी की मुख्य समस्या विजातीय विवाह से संबन्धित है । चम्पादे समझती है कि एक राजपूत लडका और एक अहीर की लडकी दोनों का विवाह कुलधर्म के विपरीत है । पुत्र के सामने वह धमकी भी देता है कि यदि विवाह हो जाए तो वह घर छोडकर चली जाएगी । लेकिन अभय, माँ की इस पुरानी धारणा को दूर करता है । वह माँ को समझाता है "आज का जीवन एक काला भौरा है

जो प्रश्न-चिह्नों के पैरों से ही चलता है । जब तक उसे उदारता और सहानुभूति के पंख नहीं देगी तब तक वह सुख के फूलों के पास तक उडकर जा ही नहीं सकता और आनन्द का रस नहीं पा सकता ।"[1]

वर्गभेद, जाति भेद, समाज भेद और संस्कार भेद इन सबको लेकर जीवन में उठनेवाली समस्याओं का साहस के साथ सामना करने का सुझाव इस एकांकी में रामकुमार वर्मा देते हैं । वे कामना करते हैं कि मनुष्य वटवृक्ष की भाँति खडा हो जाए ताकि अपने पदतल में उभरनेवाले किसी वृक्ष को आगे न बढने दे । मनुष्य को चाहिए कि जीवन के प्रश्नों में ज़िन्दगी की समस्याओं में निश्चल प्रेम को मेरुदण्ड बना दिया जाए ।

।।. घर का मकान

किराये घर में रहनेवाले लोग, सबसे बडी मुसीबत में तब पडेंगे जब मकान मालिक सामने ही रहते हैं । आज भी स्थिति ऐसी है कि मकान मालिक किरायेदार को अपना गुलाम समझते हैं, उनका अनुचित लाभ उठाते हैं । कुछ होशियार मकान मालिक अपना खाली मकान या बंगला अपने मित्रों को मुफ्त में देते हैं । किराये तो न लेते सही, लेकिन अपनी अनुपस्थिति में अपने घर की देखरेख का बोझ मित्र के ऊपर डालता है । ऐसा बोझ उठानेवाले बेचारे श्यामकिशोर की दुविधा पर आधारित है प्रस्तुत हास्य एकांकी ।

।. समाज के स्वर 3 पृ. 29 - डॉ. रामकुमार वर्मा

श्यामकिशोर की तबादली उस शहर में होती है जहाँ उसके मित्र आमलोकचन्द रहता है । सेठ अपना खाली मकान मित्र को देता है पत्नी सहित श्यामकुमार उस बंगले में पहुँचता है । लेकिन बाद में यही मालूम होता है उसे अपने मित्रों के शर्तों का पालन करना है । सेठ के घर के सारे पालतू जानवरों की देखरेख का पूरा दायित्व श्यामकिशोर पर है । चाहे, पालतू जानवरों के झुंड के झुंड आकर उसके घर में चढाई करे, फिर भी मित्र को रिझाने के लिए उसे चुप्पी साधनी पड़ती है । मालिक की लाडली पुसी किशोर के बिस्तर पर तकिया बनी बैठती है । तब भी उस बिल्ली को दूर भगाने से वह डरता है । यदि वह शर्तों को तोडेगा तो बेघरबार बन जाएगा । रसोईघर में इकट्ठी मुर्गियों की सभा जब घरवालों के भोजन का स्वाद लेती है तब भी उन पर पत्थर मारने की हिम्मत घरवाले को नहीं । लेकिन श्यामकिशोर की पत्नी लीला की क्षमा की सीमा टूट जाती है जब बिल्ली उनकी नई टी सेट तोड देते है । अंत में पत्नी सभी सामान बांधकर घर छोडने के लिए मजबूर हो जाते है वहीं एकांकी समाप्त होता है । बडे बडे नगरों में किराये घर में रहनेवाले नौकरी पेशा लोगों की विवशता एकांकी में प्रस्तुत है ।

12. नमस्कार की बात

बुढापे से जवानी की ओर लौट आने की चाह सबके मन में है । बीते हुए यौवन के मधुरिमापूर्ण क्षणों का ज़ायका लेने की इच्छा से एक तरुण अभिनेत्री के पीछे पडे बूढे चैनमुखदास की आसक्ति ही इस एकांकी में हास्य का केन्द्र बिन्दु है ।

फिल्म निर्माण में संलग्न सेठजी अभिनेत्री मधुलता को अपनी कामतृप्ति का साधन मानता है । उनके मन की बात जाँचकर भी मधुलता प्रत्यक्ष रूप में कोई विरोध प्रकट नहीं करती । यह इसलिए कि उसे यश और धन दौलत की ज़रूरत है । सेठ यह भी जानता है कि मधुलता तरुण राजीव के प्रति आकृष्ट है और प्रतिशोध की भावना से वह राजीव की बुराई करता है । मधुलता का दिल जीतने के लिए सेठजी द्वारा किये गए क्रिया कलाप - मधुलता के सामने अपने आपको कला का उपासक मानना, कलाकार को सुख सुविधा देने का ढोंग करना, स्वयं को बहुत कम उम्र का होने का स्वांग भरना आदि सेठ के हास्योत्पादक व्यक्तित्व को उभारते हैं ।

13. मूर्छा - नारियों की सबसे बड़ी कला

आधुनिक नारी स्वतन्त्रता चाहती है । सभी क्षेत्रों में समान अधिकार माँगती है, नारे लगाती है । अपने को कभी अबला नहीं मानती । नारी स्वतंत्रता पर जोशीला भाषण देती है । पुरुष से एक कदम आगे निकलना चाहती है कभी कभी पुरुषों की चुनौती देती है । लेकिन एक चूहे को देखकर बेहोश हो जाती है । इस पर एकांकीकार व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि मूर्छा नारियों की सबसे बड़ी कला है । लेकिन असली बात यह है कि वह हमेशा पुरुष का सहारा खोजती है ।

महिलाओं की सभा में अध्यक्ष श्रीमती बीना रानी नारियों की वीरता, उनके साहस के बारे में भाषण देती है । सभा में बैठी हुई अन्य महिलाओं को वह प्रेरणा देती है कि उन्हें राणी लक्ष्मी भाई

या दुर्गावती के समान अपनी वीरता प्रकट करनी चाहिए और मर्दों को दिखा देना चाहिए कि वीरता में मर्दों से वह एक कदम आगे है । तब एक चूहा उनके पैरों के पास आता है । उसे देखकर वह बेहोश हो जाती है । आनन्द उसे स्मैलिंग साल्ट सुंघाते हुए होश में लाते हैं ।

यहाँ लेखक ने नारी स्वतंत्रता का शोरगुल मचनेवालों पर व्यंग्य करते हुए उसके खोखलेपन को व्यक्त किया है ।

14. फीमेल पार्ट

चार पाँच दशकों के पहले रंगमंच के क्षेत्र में नारी पात्रों की भूमिका पुरुष पात्र ही निभाते थे । नाटक के संचालकों के लिए नारी पात्र की भूमिका निभानेवाले पुरुष पात्र की खोज करना काफी मुश्किल काम था । इस कठिनाई का एहसास करानेवाला एकांकी है "फीमेल पार्ट" । लेखक अपने अनुभव द्वारा यह समस्या यहाँ प्रस्तुत करते हैं ।

छात्रावास के विद्यार्थियों को एक नाटक प्रस्तुत करना है । ड्रामा चुना गया । लेकिन उसमें उल्लू और फीमेल की भूमिका निभाने के लिए कोई भी तैयार नहीं । अंत में हफ्ते भर के सिनेमा और रेस्टोरेंट के खर्च के वचन से खन्ना नामक एक विद्यार्थी मंच पर फीमेल पार्ट अभिनय करता है ।

15. इलेक्शन

आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इलेक्शन का गहरा प्रभाव पड़ रहा है । यही इलेक्शन व्यक्ति और राष्ट्र के भविष्य को बनाता है और बिगाड भी देता है । वर्मा की राय में "इलेक्शन एक इन्द्रजाल है । इसमें जो सफल होता है वह अपने उत्तरदायित्व से चिंतित रहता है यदि असफल होता है तो वह अपने प्रयत्न की अपूर्णता पर चिंतित होता है । आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इलेक्शन का जादू है जो सिर पर चढकर बोलता है । भूमि के निम्नतम गर्त में हुआ व्यक्ति इलेक्शन के बल पर, नागाधिराज हिमालय के गौरी शंकर शृंग पर प्रतिष्ठित हो जाता है और असफल होने पर उसकी यात्रा विपरीत दिशा में शिखर से गर्त तक हो जाती है । यदि वह इलेक्शन प्रेम के क्षेत्र में हो तो इसका संबन्ध आशा और निराशा के चरमबिन्दु तक हो जाता है । आज के युग में इलेक्शन एक ब्रह्मास्त्र है ।"[1]

प्रस्तुत एकांकी में दो तरह के इलेक्शन है । एक छात्रावास संघ के इलेक्शन है तो दूसरा कैलाश के जीवन का इलेक्शन है । छात्रावास संघ के चक्कर में पड़कर कैलाश का भविष्य चौपट हो जाता है । वह समय पर लडकी के घर न जा सकता है । इसलिए उन्हें बडा दुःख होता है । इस प्रकार निराशा की चरमबिन्दु पर कैलाश के जीवन संबन्धी इलेक्शन समाप्त हो जाता है ।

---

1. समाज के स्वर 3 - संकेत - रामकुमार वर्मा - पृ. 125

16. बादल की मृत्यु

डॉ. रामकुमार वर्मा के सबसे पहला एकांकी है "बादल की मृत्यु" । नाटकीयता की दृष्टि से इसकी कोई प्रधानता नहीं है । उच्च काव्य कल्पना तथा अलंकृत शैली इसमें भरी हुई है ।

प्रस्तुत एकांकी के द्वारा वर्माजी हमें यह सन्देश देते हैं कि इस विश्व के सभी जीव नश्वर है । बादल, संध्या से आकाश में थोडी देर रूकने की प्रार्थना करता है । लेकिन संध्या कहती है अस्थिरता ही जीवन का सौंदर्य है । एक क्षण में मेरे सौंदर्य की हिलोर और दूसरे क्षण में उसका विनाश । यही संसार का स्वरूप है । संध्या के इस संवाद से स्पष्ट है कि संसार के सभी चीज़ों का एक निश्चित अवधि के बाद विनाश होता है । यह संसार का एक नियम है । संध्या के मिट जाने पर रात आती है । रात को आकाश में तारे चमकते हैं । लेकिन रात भी अधिक देर तक न टिकती । रात के बीत जाने पर दिन आता है । इस प्रकार एक के विनाश होने पर दूसरे का जन्म होता है । दुनिया इस क्रम से आगे बढती रहती है ।

एकांकी के सभी पात्र अमानवीय हैं । इसके पात्र है, बादल, संध्या और हवा और रंगमंच है आकाश । फैंटसी के आधार पर लिखे हुए इस एकांकी को रंगमंच पर अभिनीत करने में कठिनाई है ।

17. महाभारत में रामायण

प्रेम के क्षेत्र में ईर्ष्या होना स्वाभाविक बात है । अधिकांश नारी अपने पति पर पूरा अधिकार चाहती है । लेकिन उस क्षेत्र में और कोई नारी आती है तो पत्नी के मन में पति के प्रति शंका पैदा होती है । वास्तव में पति पर पत्नी का गहरा प्यार ही इसका मुख्य कारण है । वह सोचती है कि उनका सारा अधिकार दूसरी स्त्री हडप लेगी । यह चिन्ता उनके मन में भय और शंका पैदा करती है । लेकिन इस खोखले सन्देह की हंसी उडाते हुए डॉ. वर्मा इसप्रकार कहते हैं - "आकाश में एक साथ दो इन्द्र धनुष भले ही निकल आए किन्तु प्रेम के क्षेत्र में एक पुरुष और दो स्त्रियों की समरसता संभव नहीं होती । यदि एक रुक्मिणी है तो दूसरी सत्यभामा जो दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखती है ।"[1] यह संदेह भरी दृष्टि पति-पत्नी का संबन्ध टूट जाने का कारण बन जाती है ।

कवि जयदेव की पत्नी है रंजना । जयदेव की कविता पर राजकुमारी सुलोचना बहुत आकृष्ट हो जाती है । जयदेव के साथ राजकुमारी का निकट व्यवहार रंजना के मन में शंका पैदा करती है । इसके कारण पति पत्नी के बीच झगडा होते है । लेकिन उस रात बारह बजे को घोष बाबू आकर जयदेव को सूचना देता है कि वह काव्य संग्रह लेकर राजकुमारी के पास जाए । उस रात अपने मित्र घोष बाबू के कहे अनुसार वह राजकुमारी से मिलने केलिए जाने को मज़बूर होता है,

---

1. समाज के स्वर । संकेत - पृ. 16

सुलोचना देवी पर जयदेव की कविता ने जादू मार दिया था वह अपने देश चले जाने के पहले जयदेव की कविता सुनना चाहती थी । कुछ समय बाद सच्चे दिल से अपने पति से माँफी माँगने के लिए आई रंजना यह देखकर चौंक जाती है कि पति के कमरे में एक अजनबी पुरुष ही सो रहा था जब उसे मालूम हुआ कि अपने पति राजकुमारी से मिलने के लिए गया है पति के प्रति उसका वहम और भी बढ जाता है । इतने में राजकुमारी जयदेव की खोज में वहाँ आती है वह जयदेव की कविताओं का संग्रह अपने साथ अमेरिका ले जाना चाहती थी । राजकुमारी से मिलने और उससे बातें करने के बाद ही रंजना को मालूम होता है कि उस युवती ने अपने पति के प्रति आदर और आस्था का दृष्टिकोण ही रखा था, वह राजकुमारी अपने सौभाग्य को छीनने के लिए नहीं आयी थी । उनसे विदा लेने के पहले राजकुमारी महाकवि जयदेव की सेवा में एक बहुमूल्य हीरे की अंगूठी उनको भेंट करना चाहती थी लेकिन जयदेव इसे लेने से इनकार करता है वह लक्ष्मी की उपासना करना कभी नहीं चाहता, अपनी कविता का उपहार सोने, चाँदी और रत्नों में भी नहीं वह चाहता । लेकिन राजकुमारी से कहता है कि यदि वह तोफा देना चाहती है तो वह तोफा उनकी पत्नी को दे दें क्योंकि पत्नी से ही अपने काव्य की प्रेरणा ग्रहण करता है । रंजना अपनी भूल पर पश्चाताप करती है और अपने पति से क्षमा माँगती है ।

18. छोटी सी बात

संसार में अनेक घटनाऐं होती है । लेकिन प्रायः इन सभी घटनाओं का आरंभ छोटी सी बात से है । इसके संबन्ध में लेखक

की राय यह है -"संसार की महान घटनाऐं छोटी सी बात से आरंभ होती है । यह सारी सृष्टि पहले एक उल्का के रूप में उत्पन्न हुई । अपनी गतिशीलता में इसे प्रकाश और अन्धकार मिला । समय ने उसे शीतलता प्रदान की । आज वही भाप से परिपूर्ण उल्का ठोस सृष्टि है, जिसमें प्रेम और घृणा के बीच मानव जीवन के अनगिनत संसार बसते और उजड़ते हैं । कौन जानता है कि भाप के जीवन में इतने संघर्ष छिपे हुए है । छोटी सी बात किन्तु उसका परिणाम भयानक ।"[1]

पति और पत्नी के बीच में यदि आपसी समझौता और आपसी विश्वास नहीं है तो दोनों के रिश्ते में दरारें पड़ेगी । एक दूसरे के प्रति वहमपूर्ण दृष्टि रखना कभी ठीक नहीं । यह उनके पारिवारिक जीवन को बरबाद कर देती है । छोटी छोटी बातों को लेकर आपस में दुश्मनी निगाह रखने से परिवार उजड़ता है प्रस्तुत एकांकी में राकेश-उमा के पारिवारिक जीवन उजड़ने का कारण भी यही है । उमा इस बात पर तनिक भी ध्यान नहीं देती कि छोटी छोटी बातों के लिए उसका हठ कितना भयानक परिणाम उत्पन्न करता है । अपने पति का, मित्र मदन के घर में जाना, मित्र और उसकी स्त्री के साथ चाय पी लेना उमा को पसन्द नहीं । चाय पीने का अर्थ उसकी राय में उस स्त्री के साथ अधिक मेलजोल रखना है । उसने अभी तक किसी गैर पुरुष के साथ चाय नहीं पी है, इसलिए वह चाहती है कि अन्य स्त्रियों के साथ अपने पति का मेलजोल न हो जाए । इस छोटी

---

1. समाज के स्वर । संकेत - पृ. 59

सी बात को लेकर दोनों में झगडा होता है । यहाँ तक कि वह घर छोडकर चले जाने को भी प्रस्तुत हो जाती है । लेकिन पति के मुँह से कुछ मीठी बातें सुनकर उसकी मानसिकता बदलती है, उसका गुस्सा कुछ दबनेवाला था कि राकेश उससे मदन की स्त्री के पत्र के संबन्ध में कहता है वह कभी नहीं सह सकती कि एक परायी औरत अपने पति के नाम पत्र भेजे, जिसे लेकर भी वह पति को खरीखोटी सुनाती है लेकिन बाद में अपनी भूल पर पश्चाताप करती है क्योंकि मदन की पत्नी ने उमा के नाम लिखे पत्र पर आनेवाले दिन अपने भाई राकेश के हाथों में रक्षाबंधन बांधने की बात लिखी थी । उमा जैसी पत्नियाँ अपने पति पर बिना किसी कारण के दोष लगाती है और घर का सारा चैन तबाह कर देती है ।

19. रंगीन स्वप्न

युवकों के मनोविज्ञान पर आधारित एकांकी है "रंगीन स्वप्न" । आज के कई नवयुवकों का जीवन प्रेम और रोमांस में उलझे हुए है । ये लोग कल्पना के क्षेत्र में विचरण कर कई तरह के रंगीन स्वप्न बुनते हैं । लेकिन अधिकांशत: ये कल्पनायें सच्चाई से कोसों मील दूर पर है । जब वह यह तथ्य समझता है तब उनका जीवन बिगड जाता है ।

प्रेम और रोमांस के संबन्ध में लेखक की राय यह है कि "प्रेम और उसका रोमांस, वैसा ही है, जैसे वसंतागम से पूर्व कोकिल का कूजन, किन्तु प्रकृति के क्षेत्र में कूजन के साथ ही वसंतागम हो जाता है । मानव व्यापारों के क्षेत्र में अनेक बार रोमांस प्रेम में प्रतिफलित नहीं होता । रोमांस भावनाओं का कोलाहल है, जो प्रेम का राग बनते बनते संभवत: बिगड जाता है । रोमांस एक स्वप्निल संसार की गुदगुदी है, जो यदि

हंसी में परिणत नहीं हुई तो खीझ में बदल जाती है । यह रोमांस प्रेम के दरवाज़े के चारों ओर चित्रित की गई एक सुनहली बेल है जो ज़रा से हाथ कांपने पर बिगड जाती है ।"[1]

कमल और प्रभा कालिज के छात्र-छात्रा है । कमल के मन में प्रभा के प्रति हल्का खिंचाव है । उसका विश्वास है कि प्रभा के दिल में उसके अतिरिक्त और कोई नहीं होगा । प्रभा की इन्तज़ार में पार्क में बैठे कमल को देखकर मित्र नन्दन उसके पास आता है और उससे पूछता है कि वह क्यों चोरी से यहाँ चले आये । एक पुलीसमैन ने दूर से सुना कि उन दोनों की बातचीत में दो तीन बार चोरी का जिक्र आया और उसे यह शंका होती है कि ये दोनों किसी का जेब काटने के फिक्र में होंगे । दोनों पुलीसमैन को समझाते है कि वे शरीफ आदमी हैं, वे पालिटिक्स पर बहस करते करते कोरिया के मैदान में चीन द्वारा चोरी-चोरी अमेरिका पर हमला किये जाने की बातें बता रहे थे । पुलीस चला जाता है । इतने में एक बढिया रेशमी रूमाल गिर गया दिखाई पडता है जिसे वे लेते हैं । नन्दन कमल को विश्वास दिलाता है कि यह हरे रंग का रूमाल और किसी का नहीं बल्कि प्रभा का है । उसमें वही "दि इवनिंग इन पेरिस" सेंट है जो प्रभा रोज़ लगाती है । प्रभा के रंगीन स्वप्न में डूबा हुआ कमल मित्र की बातें सच मान बैठता है । उसे लगता है कि उस छोटे से रूमाल में अपने जीवन के बडा स्वप्न बाँधा जा सकता है, उस रूमाल के

---

1. समाज के स्वर । - संकेत - पृ. 75

नन्हे नन्हे चार कोने अपने जीवन की चार दिशाओं को समेटे हुए हैं । कमल ने सुनाया है कि प्रभा अपने भाई के साथ पार्क आनेवाली है किसी बहाने उससे कुछ बातें करने का करिश्मा रखकर कमल पार्क में आया था । वह रूमाल प्रभा के पार्क में आने का सबूत मानता है । भावविभोर होकर कमल वह रूमाल अपने हृदय से लगाता है और पोकेट में रखता है । पुलीसमैन इस हरी रूमाल की खोज में दुबारा वहाँ आता है एक औरत ने उससे शिकायत की थी कि उसके हरे रंग का रूमाल पार्क में कहीं खो गया है जिसमें पाँच रूपये के नोट थे । कमल के कोट की भीतरी जेब से हरे रंग का कोना पुलीसमैन को नज़र आता है । पुलीस के पूछने पर कमल कहता है कि वह अपने दोस्त का रूमाल है । कमल को चोरी के जुल्म में थाना ले जानेवाला था कि प्रभा वहाँ पहुँचती है और अपना रूमाल वापस लेती है । जाते जाते प्रभा यों कहती है कि आप लोग हवा में उठने की कोशिश न करे । यथार्थ से कोसों दूर भटककर मात्र रूमानी दुनिया में विचरण करनेवाली नयी पीढी के प्रति एकांकीकार का सुझाव ही प्रभा की वाणी में गूँज उठता है ।

20. प्रेम की आँखें

महानगरीय सभ्यता में पलनेवाले लोग सुख सुविधाओं से भरी पूरी ज़िन्दगी को तरजीह देते हैं । आत्मसुख की अन्धी दौड में लगे हुए ये लोग हमेशा एशोआराम की ज़िन्दगी ही चाहते हैं । वकील मदनमोहन की पत्नी रेखा ऐसी आधुनिक सभ्यता पर दिलचस्पी रखनेवाली महिला है पति पत्नी दोनों के बीच अक्सर टकराहट इसलिए होती है कि मदनमोहन पुराने विचारों का समर्थक है । पति के कम वेतन से खर्च चलाने में रेखा कठिनाई महसूस करती है बार बार वह पति से

शिकायत करती है कि उसे पिता के घर में सारी सुख सुविधायें मिल रही थी । लेकिन शादी के बाद उस पर ध्यान रखने केलिए कोई नहीं । शादी के पहले मामूली सिरदर्द केलिए भी उसके पिता सिविल सर्जन को बुलाते थे, इंजक्शन लगाते थे, पिता के साथ कहीं जाते वक्त सेकन्ट क्लास से कहीं कम में नहीं गई भी नहीं । लेकिन शादी के बाद थर्ड क्लास में बैठकर ट्रेन यात्रा करना रेखा अपनी हैसियत के लिए अनुचित मानती है । पति के प्रति उसकी दूसरी शिकायत यही है कि उसे अपने कोर्ट के काम से कभी फुर्सत नहीं और अपने पिताजी के जैसे पैसा बहाने के आदी नहीं । रेखा ऐसी एक फैशन परस्त महिला है जो शीशे के सामने बैठकर अपनी आँखें देखने में, सुरमा लगाने में, भौंहों के बाल चुनने में, बाल संवारने में और पौमेड-स्नो लगाने में ज़िन्दगी की सार्थकता समझती है । यहाँ तक कि कोर्ट से दिन भर की नौकरी के बाद थके-मादे घर लौटे अपने पति को जलपान कराने के स्थान पर "दि एपिक आफ माउंड एवरेस्ट" नामक पुस्तक पढकर सुनाती है । वह पुस्तक पढते पढते विज्ञान के वरदान पक्ष और अभिशाप पक्ष को लेकर दोनों में तर्क वितर्क होता है जो अंत में झगडे में परिणत होता है । जब कभी झगडा होता है रेखा पति के कम वेतन की बात उठाती है और अपनी बुरी नसीब को कोसती है । पति की हर एक बात वह उल्टी समझती है । मदन तो कितने भी पैसे हाथ में मिलते उसे रेखा के हाथ में देते थे फिर भी वह तुष्ट नहीं थी । मदनमोहन का सिद्धांत तो यही था कि एक घरवाली को सब तरह से संभालना चाहिए अच्छे दिनों में खुश रहे और बुरे दिनों में भी घर की

खुशी कम न रहने दे । उसकी राय में पत्नी तो ज़िन्दगी की वह नियामत हैं जो ज़िन्दगी की राह के कांटों को छूकर फूल बना देती है । लेकिन पति के वह सिद्धांत वह कभी हजम नहीं कर सकी । दोनों के बीच का झगडा बढकर इस हद तक पहुँच जाता है कि रेखा घर छोडकर अपने पिताजी के घर चले जाने को तैयार हो जाती है । उसी समय एक गरीब आदमी वैजनाद एक मुकदमे के लिए मदनमोहन के पास आता है । उसकी बातों से मदनमोहन को पता मिला कि उसके बडे भाई ने पिता की सब जायदाद ली एक पैसा भी वैजनाद और उसकी बीबी को नहीं दिया, उसकी घरवाली ने दो दिन से कुछ नहीं खाया । वैजनाद ने अपनी पत्नी से कहा कि वह अपने पिता के घर चली जाये । लेकिन उसकी पत्नी यह बात सोच भी नहीं सकती थी कि पति के भूखे रहते वक्त वह मौज से अपने बाप के घर रहे । मुकदमे की फीस देने को वैजनाद के पास रूपया नहीं था तो उसकी पत्नी ने अपने गहने दे दिये । ये सारी बातें सुनकर मदनमोहन इतना खुश हो जाता है कि वह बिना फीस लिये मुकदमा चलाने का वचन देता है । वैजनाद की गरीब औरत की आँखों में दर्द के आँसू के साथ साथ प्रेम की चमक भी मदनमोहन ने महसूस की । कोर्ट के कामों से थका हुआ घर आकर अपनी पत्नी की आँखों की शीतल छाया में सो जाने के लिए उसका मन तरसता था । लेकिन उनका स्वप्न अधूरा ही रहा । रेखा भी वैजनाद की सारी बातें सुन रही थी उसे अपने ऊपर पश्चाताप होती है । अपने पति के प्रति उसके मन में आदर और सम्मान भर जाते है जिसने गरीब स्त्री के गहने बिकवाकर अपने फीस नहीं दी । अतः इस एकांकी के द्वारा रामकुमार वर्मा ने यह सिद्ध किया है कि सुरमे से भरी आँखों की अपेक्षा प्रेम भरी आँखें अच्छी है । उन्हीं के ही शब्दों में

ऊपरी आडम्बर भले ही आकर्षक हो किन्तु उसकी वास्तविकता में सन्देह उत्पन्न हो जाता है । ग्राम की नैसर्गिक शोभा के समक्ष नगर की कृत्रिम प्रसाधन-प्रियता महत्व नहीं रखती । आँखें भले ही सुन्दर और आकर्षक हों किन्तु यदि उनमें अनुराग की लालिमा नहीं है तो उनकी दृष्टि वैसी ही क्षणिक है जैसी विद्युत के प्रकाश की रेखा ।"[1]।

21. आँखों का आकाश

विवाह के तुरन्त बाद के प्रेम और आत्मीयता की ऊष्मता में नव-विवाहित पति-पत्नी यों सोच बैठते है कि जीवन की फुलवारी में फूल ही फूल है कांटा एक भी नहीं । ऐसी धारणा में फंसे दम्पति का चित्रण प्रस्तुत एकांकी में हुआ है । एकांकीकार की राय में "नव-विवाह के सौध-सदन में प्रवेश करनेवाले दो व्यक्तियों का पारस्परिक भाव विनियोग जैसे चमकीले सूत्रों से बुना हुआ ताफ्ता वस्त्र है, जो अनुराग की किरणों से स्वर्णिम बन जाता है और किरणों की दिशा बदल जाने पर मटमैला हो जाता है । इस इन्द्र धनुषी जीवन में एक क्षण में पूरा निखार है और दूसरे क्षण में फीकापन है ।"[2]

अविनाश और सुलेखा नव-विवाहित पति-पत्नी है । विवाह के तीन महीने हुए फिर भी दोनों में कोई अनबन नहीं हुआ, मन बिगाडनेवाला विवाद नहीं हुआ वे यहाँ तक सोच बैठते हैं कि जबसे विवाह

---

1. समाज के स्वर भाग । - संकेत - पृ. 41 - डॉ. रामकुमार वर्मा
2. समाज के स्वर भाग । - पृ. 103 - डॉ. रामकुमार वर्मा

जैसा संबन्ध संसार में स्थापित हुआ तब से उन लोगों से अधिक सुखी शायद कोई भी नहीं होगा । बहुत जल्दी वे दोनों अपनी गलतफहमी से अवगत हो जाते है, ज़रा सी बात को लेकर वे दोनों झगडा करने लगते है । सुमित्रानंदन पंत की कविता की चर्चा के सिलसिले में हुई एक छोटी सी बात को लेकर दोनों में झगडा होता है । दोनों ने व्यर्थ बातें उडाई । अविनाश ने आरोप लगाया कि सुलेखा में पंत की कविताओं को समझने की क्षमता नहीं दो क्षण के पहले दोनों ने सोचा कि वे फूलों की सेज पर सो रहे हैं, लेकिन अब उनको लगता है वे कांटों की सेज पर ही सो रहे हैं । बात बात पर एक दूसरे को मूर्ख, निर्दयी, धोखेबाज आदि कहते हैं । झगडा इतना बढ गया है कि दोनों अलग अलग रहने की बात सोचते है तो सुलेखा पति को धमकी देती है कि वह आत्महत्या कर लेगी बातों ही बातों में दोनों के मुँह से कई व्यर्थ बातें निकल गई । जल्दी ही दोनों अपनी गलती समझते हैं ।

इस एकांकी के द्वारा रामकुमार वर्मा ने दम्पतियों को यह सुझाव दिया है एक दूसरे को अच्छी तरह समझने में ही वैवाहिक जीवन की खुशी है । आदमी विवाह करता है अपनी सुख शान्ति के लिए, लेकिन छोटी छोटी बातों को लेकर आपस में झगडनेवाले पति पत्नी अपनी ज़िन्दगी की सुख शान्ति को नष्ट करते है ।

22. रूप की बीमारी

नवयुवक वर्ग में प्रेम और अनुराग की भावना एकांकी का मुख्य हास्य बिन्दु है । यौवन के आगमन से मन और शरीर में प्रतिद्वन्द्विता होती है । मन में कई प्रकार की भावनायें होती है ।

इस अवस्था पर युवक-युवतियों के मन में एक दूसरे के प्रति आकर्षण होना स्वाभाविक बात है । यौवन के जोश में वे अपने विवेक खो बैठते है । अपने आशिक का दिल जीतने के लिए वे कई बहाने ढूँढते हैं । यों बीमारी का स्वांग रच बैठे रूपचन्द नामक युवक के कार्य व्यापार पर एकांकी आधारित है ।

नगर के धनी सेठ सोमेश्वर चन्द का इकलौता बेटा रूपचन्द बुखार के कारण बीमार पडा हुआ है । उनके पिता उसके इलाज केलिए दो डाक्टरों को नियुक्त करते हैं । लेकिन दिन व दिन बीमारी बढती ही रहती है अन्त में डाक्टर आपरेशन करने का निर्णय लेते है । वास्तव में रूपचन्द को बुखार नहीं है । वह कुसुम नामक एक लडकी के रूप से घायल है उसके रूप की बीमारी में आकुल होकर वह बीमार बनने का स्वांग रचा पडा है । आपरेशन में अपने पेट काटने की बात सोचने लगा तो रूपचन्द को असली बात जाहिर करनी पडी । गायिका कुसुम की सुरीली आवाज़ सुनने के लिए उसका मन तरसता है । वह मन ही मन चाहता है कि कुसुम एक बार उसे वयलिन सुनावे । जब कभी कुसुम वयलिन बजाती थी रूपचन्द महसूस कर रहा था कि दुनिया फूल की तरह नरम होकर ही रही है । उस लडकी के कोई माता पिता नहीं है, मात्र मामा है, गरीब परिवार की लडकी है । रूपचन्द जानता है कि उस गरीब लडकी के साथ विवाह करने की अनुमति पिता नहीं देंगे । वह डाक्टरों के साथ मिलकर एक चाल चलाता है । डाक्टर रूपचन्द के पिता को विश्वास दिलाता है कि रूपचन्द को एक अजीब ढंग की बीमारी है तो वयलिन का गीत सुनाने से उसकी बीमारी कम हो सकती है, या

रूपचन्द बहुत जल्दी अच्छा हो सकता है । डाक्टरों की मदद से कुसुम का संगीत सुनने का इन्तजाम जल्दी ही होता है । कुसुम की इन्तज़ार में रूपचन्द अपने बिस्तर पर लेटता रहता है । इसके साथ एकांकी समाप्त हो जाता है ।

प्रेम के प्रति नयी पीढी का बदला हुआ दृष्टिकोण भी इसमें मिलता है । आज का नवयुवक प्रेम करता एक से और शादी करता दूसरे से । रूपचन्द प्रेम और विवाह को अलग अलग रखने के पक्षपाती है । वह जानता है वह अपने पिता का इकलौता बेटा है । आँखों के तारे के समान पिता ने उसे पाला पोसा है । यदि पिता की मर्जी के विरुद्ध उस गरीब लडकी से वह शादी करेगा तो उनकी सारी उम्मीदें बरबाद हो जायेगी । वह पिता को सदमा पहूँचाना भी नहीं चाहता । शादी के संबन्ध में भी उसका अलग दृष्टिकोण है । आज के युवक-युवतियाँ विवाह के पहले आपस में समझना चाहते हैं । वे शादी से अच्छे सिटिज़न बनने के बजाय प्रेम के अच्छे सिटिज़न बनाना चाहते है । रूपचन्द कहता है -"बिना आपस में एक दूसरे को समझे शादी शादी नहीं, वह दिल की शादी नहीं, दुनिया को दिखलाने की शादी है ।"[1]

23. ऐक्ट्रेस

भारतीय नारी अपने परंपरागत संस्कार से हमेशा जुडकर रहना चाहती है । आधुनिकता की आँधी में बह जाने के बाद भी उसके मन में परंपरा के प्रति एक खास आकर्षण है । इस एकांकी में

---

1. समाज के स्वर भाग 1 - पृ. 146

मशहूर अभिनेत्री की मानसिकता पर प्रकाश डाला गया है जो अपने रूप की मदिरा लिये हुए हज़ारों उठी हुई नज़रों के सामने जाने के बावजूद भी अपने आपको वही पुरानी पतिपरायणा स्त्री महसूस करती है जो अपनी लज्जा और संकोच में लिपटी रहती थी ।

प्रभाकुमारी ऐसी एक अभिनेत्री है जो अपनी भूमिका में अपने प्राणों को डालकर अपने को भूल जाना चाहती है, अपने अभ्यास में अपने अस्तित्व को धुला लेना चाहती है इतनी बड़ी मशहूर अभिनेत्री होते हुए भी वह अपने जीवन से ऊब सी गई है । प्रभाकुमारी का बाहरी जीवन उसके आन्तरिक जीवन से बिलकुल भिन्न है । इस बाहरी जीवन से उसे मानसिक तुष्टि कभी नहीं मिलती ।

एक बार शूटिंग के अवसर पर सिनेमा पत्र चारुचित्र का संपादक अनंगकुमार अपनी पत्नी कमलकुमारी के साथ प्रभा का चित्र और इंन्टरव्यू लेने केलिए आता है । लेकिन प्रभा किसी को अपना जीवन विवरण देना नहीं चाहती । इसके पहले ही बहुतों ने इसीप्रकार के प्रश्न किये थे लेकिन उसने उत्तर नहीं दिया था । अनंगकुमार पत्नी को प्रभा के पास छोडकर डाइरेक्टर से मिलने जाता है । जल्दी ही कमल को इस बात का पता मिलता है कि प्रभाकुमारी अपने पति के पहले विवाह की स्त्री है । विवाह के केवल एक महीने के भीतर ही अनंगकुमार ने प्रभा का परित्याग कर दिया था । मदिरा ही उनकी प्रेयसी थी । . प्रभा का अपराध मात्र यही था कि वह अपने पति के मित्रों के सामने निकलना नहीं चाहती थी । अपने पतिदेव के मित्र

बैंक के एजन्ट अविवाहित मिस्टर खन्ना के सामने वह कभी नहीं गई । वह बहुत धर्माचरण करनेवाली थी अपने परिजनों के अतिरिक्त अन्य किसी से हँसी मज़ाक वह पसन्द नहीं करती थी । आधुनिक रंग में रंगा हुआ अनंग प्रभा को क्लब ले जाना चाहता था लेकिन अनंग को जब मालूम हुआ कि वह पत्नी उसके जीवन की संगिनी नहीं बन सकती इसी पर उसने प्रभा का परित्याग कर दिया । अन्त में वह घर से कहीं चल पड़ी । सब लोगों ने सोचा कि वह आत्महत्या कर ली । विवाहित अवस्था में अनंग ने अपनी पत्नी को ठीक ढंग से देखा तक नहीं था । उन दोनों का मिलन क्षणिक था वह भी उस समय जब मदिरा से अनंग की आँखें झूमती रहती थी । बरसों बाद प्रभा को देखकर इसलिए ही वह उसे पहचान नहीं सका । प्रभा को कमल की बातों से पता मिला कि प्रभा के चले जाने के बाद अनंग के जीवन में महान परिवर्तन हुआ है । पश्चाताप के मारे उसने मदिरा छोड दी और उसके जीवन में सुधार आया । प्रभा कुमारी को जल्दी ऐसा लगा कि उसने अपना परिचय देकर वास्तव में बड़ी भारी भूल की । वह चाहती है, उसी को यह सूचना न मिले कि प्रभा ही प्रभाकुमारी है और कमल से यह अनुरोध करती है कि उसका रहस्य किसी के पास प्रकट न होने पावे । थोडी देर बाद वहाँ आये अनंगकुमार वह पत्र पढ़कर चौंक जाता है । उस पत्र में लिखा था कि परिस्थितियों को सुलझाने के लिए मंदार झरने में आत्मसमर्पण करने के लिए वह जा रही है ।

प्रभा ने खुदखुशी करने का निर्णय इसलिए लिया कि वह कमलकुमारी के सुख को छीन लेना नहीं चाहती थी । अनंगकुमार और उसकी पत्नी के भविष्य को मैला करना भी नहीं चाहती थी ।

वह जानती थी कि यदि अनंग उसे पहचानेगा तो उसे फिर कमल का ध्यान नहीं रह जाएगा और फिर कमलकुमारी की ज़िन्दगी भी अभिशप्त हो जाएगी । अपने अनुभव के ज़रिये प्रभा ने यह सिद्ध किया कि धन चरणों पर लोट करने के बाद भी कोई भी सुखी नहीं बनता । मन यही चाहता है कि वह अपने आत्मीय के चरणों में लोट जाए । धन और वैभव हृदय की प्यास नहीं बुझा सकते उसकेलिए प्रेम की आवश्यकता है

24. हीरे के झुमके

नारी से संबन्धित एक मनोवैज्ञानिक तथ्य यह है कि वह हमेशा आभूषण प्रिय है । जितने भी गहने उन्हें मिले फिर भी वह उससे अच्छे गहने खरीदना चाहती है । नारी की इस आभूषणप्रियता की कोई सीमा नहीं है । इसके कारण कभी कभी नारी के बीच ईर्ष्या और प्रतिद्वन्द्विता होती है । आभूषण प्रियता के कारण नारी के बीच जो प्रतिद्वन्द्विता और ईर्ष्या होती है उसकी हँसी उडाते हुए डॉ. वर्मा ने प्रस्तुत एकांकी की रचना की है ।

वकील श्याममोहन अपनी पत्नी चन्द्रमोहिनी के साथ एक विवाह में भाग लेने गये । वहाँ आयी महिलाओं की वेश-भूषा और गहनें चन्द्रमोहिनी को बहुत लुभाती है, विशेषकर एक जज की पत्नी मिसेज़ रूपमती के झुमका । उनके सामने चन्द्रमोहिनी को अपनी साडी और हीरे के झुमके फीके जान पड़ती है । इसलिए वह घर में आकर

पति से शिकायत करती है । अब उन्हें बाबू हरनारायण की बेटी की शादी में भाग लेने को जाना है । वह चाहती है कि बाबू हरनारायण की बेटी की शादी में मिसेज़ रूपमती की शान को चूर करना है । इसलिए वह मिसेज़ रूपमती के झुमके की तरह एक झुमका खरीदना चाहती है । पत्नी के हठ के कारण श्याममोहन झुमका खरीदने बाहर जाता है । इतने में चाँद सितारोंवाली हुस्नारों बानो, चन्द्रमोहिनी के पास आती है । उनके पास कई तरह के गहने है । उसमें रूपमती की झुमके की तरह एक झुमका देखकर चन्द्रमोहिनी उसका मूल्य पूछती है । इसपर हुस्नारो बानो मिसेज़ रूपमती के झुमके का रहस्योद्घाटन करती है । वास्तव में वह झुमका बारह रुपये का था । लेकिन रूपमती ने उसे दो हज़ार रुपये का कलकत्ते से लाये हुए झुमका कहा । यह बात जानने पर चन्द्रमोहिनी हुस्नारो बानो से पन्द्रह रुपये का एक नकली झुमका खरीदती है । इतने में श्याममोहन भी एक झुमका खरीदकर वहाँ पहुँचते हैं और कहता है कि यह दो हज़ार रुपये का झुमका है । किन्तु चन्द्रमोहिनी को श्याममोहन की बातों में विश्वास नहीं होता है । वह समझती है कि यह दस रुपये का नकली झुमका है । इन्हीं बीच हुस्नारो बानो वहाँ आकर श्याममोहन से झुमके का मूल्य पूछती है । हुस्नारो बानो से झुमके का रहस्य जानने पर चन्द्रमोहिनी अपने पति को व्यंग्यपूर्ण बातों से हँसी उडाते हैं और कहती है कि अगले विवाह में वह यह झुमका पहनकर जाएगी और कहेगी कि ये चार हज़ार रुपये के झुमके है, असली हीरे के है, अभी बंबई से आए है ।

नारी की शानशौकत पर हँसी उडाना एकांकीकार का मुख्य उद्देश्य है । आज विवाह या किसी समारोह को नारी

लोग शान शौकत की एक प्रतिस्पर्धा ही समझती है । रंग बिरंगी साड़ियाँ और जेवर की जगमगाहट से सूर्य-चन्द्र के प्रकाश भी यहाँ हार हो जाते हैं । इतने सज धजकर महिलायें वहाँ पहुँचती है । एक नारी दूसरी नारी को नीचा दिखाने की कोशिश करती है । इस होड के कारण नारी के बीच ईर्ष्या हो जाती है । इस ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा के आगे पुरुष केवल एक विदूषक बन जाता है ।

25. चक्कर का चक्कर

आज समाज में कई प्रकार के अन्ध विश्वास है । उसमें एक है भूत-प्रेत पर विश्वास । आज तक किसी ने भी भूत या प्रेत को नहीं देखा है फिर भी कुछ लोग इस पर विश्वास करते है । प्रस्तुत एकांकी में हम दो तरह के लोगों को देखते है - भूत प्रेत पर विश्वास करनेवाले और दूसरा इस पर अविश्वास करनेवाले लोग । इन दोनों की धारणा पर चर्चा करते हुए डॉ. वर्मा भूत प्रेत के संबन्ध में यह तथ्य स्वीकार करते हैं - "जब वृक्ष जल जाता है तो राख शेष रहती है । अब चढी हुई नदी उतरती है तो तट पर उसके चिह्न बने रहते है । जब जागृति समाप्त होती है तो स्वप्न में जीवन के चित्र अंकित होते है । इसीप्रकार इस शरीर की समाप्ति के बाद मन के संस्कार जो रूप लेते है उसका नाम है प्रेत ।"[1]

---

1. समाज के स्वर भाग 2 - पृ. 81 - डॉ. रामकुमार वर्मा

राय बहादूर वृजकिशोर अपनी बेटी की शादी मूलचन्द्रसहाय के बेटे श्याममोहन के साथ कराना चाहता है । श्याममोहन एक अच्छा लड़का है, एम. ए में फस्ट डिविज़न पाया है और आई.ए.एस में बैठा है । किन्तु अब श्याममोहन के संबन्ध में कुछ अफवाहें सुनते है । उन्हें कभी कभी चक्कर होता है, नशे में वह गज़लें गाता है, उनके पंजों में दर्द होता है, और वह ज़्यादा पानी पीता है । यह देखकर लोग समझता है कि ये चक्कर-चक्कर नहीं, मामाजी के भूत के करिश्मे है । इस अफवाहे को निर्णय करने के लिए वृजकिशोर अपने नौकर भैरों के साथ मूलचन्द्रसहाय की पुरानी हवेली में आ पहूँचते है । लेकिन तब मूलचन्द्र-सहाय और श्यामकिशोर हवेली में नहीं था । परन्तु वृजकिशोर के आने की खबर सुनकर उनका पुराना मित्र कामताप्रसाद वहाँ आते हैं । बातचित करने के बीच कामताप्रसाद वृजकिशोर से श्यामकिशोर के चक्कर के संबन्ध में कहता है। इन्हीं बीच दरवाज़े पर खट-खट की आवाज़ सुनते है । लेकिन देखने पर वहाँ कोई नहीं दिखाई पडता । इसपर वह वृजकिशोर से कहता है कि श्यामकिशोर के मरे हुए मामा के भूत ही दरवाज़े पर खट खटाता है । इस कमरे में लेटे समय उन्हें हार्ट-अटैक हुई, मृत्यु के बाद भी वह इस कमरे से गए नहीं । इसलिए वह कभी कभी दरवाज़े पर खट खटाता है । श्याममोहन के चक्कर के संबन्ध में वह इस प्रकार कहता है - उनके मामा प्यास से ही मर गए इसलिए श्याममोहन चक्कर में ज़्यादा पानी पीता है, मामा गज़लें बहुत गाते थे इसलिए ही श्याममोहन चक्कर में गज़लें गाता है, और भूतों के पैर टेढे होने के कारण ही श्याममोहन चक्कर में कहते है "मेरे पैर टेढे हो गए । लेकिन

वृजकिशोर को इसपर विश्वास नहीं होता है वह सोचता है कि श्याममोहन को सीरियस टाइप के टाइफोइड है । इसप्रकार कामताप्रसाद वृजकिशोर से श्याममोहन के चक्कर के संबन्ध में कहते समय मूलचन्द्रसहाय बेटे श्याममोहन के साथ वहाँ आते हैं । मूलचन्द्रसहाय और श्याममोहन, वृजकिशोर से बातचित करते हैं । इस समय कामताप्रसाद श्यामकिशोर के चक्कर की परीक्षा करना चाहता है, बातचीत के बीच गज़ल की बात को लाता है । इस समय दरवाज़े पर खटखटाहट की आवाज़ सुनाई पडी और दो तीन बार बिजली का करेंड धीमा और तेज होता है, इसके साथ ही श्याममोहन की भंगिमा बदल जाती है, उनकी आँखें सुर्ख हो जाती है और सहसा कुर्सी पर झुक जाते हैं । उनके पंजों में दर्द होते हैं और वह नशे में गज़ल गाता है । यह भी नहीं वह बार बार पानी पीता है । वृजकिशोर के नौकर भैरो को भूत-प्रेत पर बडा विश्वास है । श्याममोहन का यह चक्कर देखकर वह श्याममोहन को मामा के भूत से बचाना चाहता है । दो तीन बार वह श्याममोहन को पानी देता है । अन्त में उनकी प्यास बुझाने के निश्चय से उन्हें गंगाजल देने के बहाने दूसरे एक कमरे में ले जाता है, और उनके मामा के भूत को गंगाजल में कैद करता है । इसके बाद श्याम-मोहन की तबीयत ठीक हो जाती है । अब उन्हें गज़लों की याद नहीं, प्यास नहीं और पैरों पर दर्द भी नहीं ।

वास्तव में भूत या प्रेत नहीं है । श्याममोहन की बीमारी और मामाजी के भूत के संबन्ध में एकांकीकार इस प्रकार समर्थन करते हैं कि बचपन से ही श्याममोहन ने मामाजी के संबन्ध में सुना था और यह भी उसने समझा कि मामाजी का भूत बरसों से उस हवेली में

निवास करता है, उनके अवचेतन मन में यह धारणा रूढमूल हो चुकी । इसलिए भामा की याद उनके मन में उभरकर आते ही उन्हें चक्कर होते हैं, और इसी याद में वह गज़लें गाता है । लेकिन उन्हें मंत्र तन्त्र पर भी पूरा विश्वास है, वह जानता है मंत्र की शक्ति से भूत गायब होता है । इसलिये मंत्र तंत्र पर कुशलता रखनेवाले नौकर भौंरो के हाथ से गंगाजल पीने पर, उसके मन से भामाजी की याद दूर हो जाती है ।

26. परीक्षा

प्रेम की एक विशेषता यह है कि वह जाति और अवस्था पर ध्यान न रखता है । बीस वर्षीया एक लडकी पचास बरस के एक आदमी को प्यार करती है । उसका प्रेम सच्चा है या नहीं ? इस बात पर एकांकीकार नारी की मनोवैज्ञानिक परीक्षा करते है । एकांकीकार की राय में "जब नदी अपनी बाढ पर आती है तब वह अपने दोनों किनारे डुबा देती है और नये किनारे बनाती है । इसी प्रकार प्रेम जब अपनी बाढ पर आता है तो वह जाति और अवस्था के किनारे डुबा देता है ।"[1]

पचास बरस के प्रोफसर केदारनाथ की शादी बीस वर्षीय रत्ना से होती है । रत्ना केदारनाथ की स्टुडेन्ट थी । केदारनाथ की उम्र की अपेक्षा उसके स्वभाव और उसके लियाकत की ज़्यादा कीमत करके रत्ना ने केदारनाथ से शादी की । शादी के बाद केदारनाथ

---

1. समाज के स्वर भाग 2 - पृ. 145 - डॉ. रामकुमार वर्मा

को मालूम हुआ कि वे गंभीर स्वभाव की है बातचित में हमेशा नपेतुले शब्दों का प्रयोग करती है । उसके मन में हमेशा अपने पति के प्रति एक आदर का भाव है । रत्ना के बर्ताव की सरलता देखकर केदारनाथ को शक होने लगा कि रत्ना क्यों उस पर इतनी दया और कृपा दिखाती है । वह अपने जिगरी दोस्त एवं मनोविज्ञान के विश्वविख्यात वैज्ञानिक डॉ. राजेश्वर रूद्र की मदद से नारी का मनोविज्ञान जानना चाहता है । डॉ. रूद्र ऐसे एक रस बनाने में संलग्न है जिसके पीने से बूढा आदमी जवान हो सकता है । रत्ना की परीक्षा लेने के लिए रूद्र और केदार ने मिलकर एक योजना बनायी । योजना के अनुसार रूद्र केदार को इन्टरनल यूथ का रस पिलाता है, रत्ना को शंका थी कि शायद वह रस कोई हानी पहूँचायेगा । फिर भी अपनी पति की इच्छा रोकना वह नहीं चाहती थी । रस पिलाने के बाद रत्ना ने देखा कि केदार और बिल्कुल बूढे हो गये उनके सभी बाल सफेद हो गये । रूद्र ने कहा कि प्रोफसर केदार पर रस का विपरीत परिणाम हुआ है और वह डॉ. रूद्र से विनती करती है कि पति को ऐसा रस दे जिससे वे पुराने जैसे हो जाय । लेकिन रूद्र उसे समझाता है केदार को पहले जैसी हालत में लाना आसान काम नहीं । एक सुझाव उसने यह भी दिया कि मनोविज्ञान के अनुसार यह परिस्थिति केवल एक बार से ही हट सकती है । वह यह कि रत्ना भी वह रस पीकर बूढी बन जाय तो प्रोफसर केदार को कोई तकलीफ नहीं होगी । रूद्र ने सोचा था, रत्ना कभी इस सुझाव को स्वीकार नहीं करेगी । लेकिन उनके अंदाज गलत निकला । रत्ना रस पीने का निश्चय करती है । लेकिन रस पीने के बाद भी रत्ना में कोई परिवर्तन नहीं हुआ । इसका कारण जब उसने रूद्र से पूछा तभी तो उसे मालूम हुआ कि वह सब केवल

एक एक्सपिरिमेंड था । उनके पति डॉ. रूद्र की सहायता से उसकी परीक्षा ले रहे थे । केदार ने अपने सिर में चोक रगड लेकर अपने बाल को सफेद किया । रत्ना को कुछ दूर कुर्सी पर इसलिए बिठाया रखा था कि वह आसानी से केदार और रूद्र के भेद को न पहचान सके । परीक्षा के बाद केदार कृतार्थ हो गया और उसकी सारी शंकायें निर्मूल हो गयी ।

इस एकांकी की रत्ना उस भारतीय नारी की प्रतीक है जो प्रेम के क्षेत्र में बाहरी सौंदर्य की अपेक्षा आन्तारिक सौंदर्य को तरजीह देती है ।

27. शक्ति संजीवनी

पुरूषों के शोषण की शिकार बननेवाली स्त्रियों के संबन्ध में ही हम अक्सर सुनते हैं । नारी के इशारे पर चलनेवाले पुरूषों का किस्सा हमें विरले ही मिलते हैं ऐसे एक पुरूष की विवशता और उस विवशता से उनकी मुक्ति को आधार बनाकर एकांकी की रचना हुई है ।

आशा अपने पति वकील महेश को अपने इशारे पर नचाती है । घर का सारा काम पति से करवाती है । वह हमेशा शीशे के आगे भौंह रंगने में, भौंह के बाल चुनने में, मुँह पर पाउडर लगाने में और ओठों पर रंग करने में संलग्न रहती है । वह समझती है कि घर के काम करने पर उनकी मेक अप खराब हो जाएगी । वह अपने पति को

नौकर के समान मानती है घर का नौकर उसके डॉट डपट से तंग आकर घर से चला गया, नौकर के चले जाते ही सारा बोझ अकेले महेश को उठाना पडा । आशा की सहेली किशोरी के पति अनूपकुमार महेश की विवशता से भली भाँति अवगत हो जाता है । एक दिन उसके घर में मेहमान के रूप में वह आया था । वह उसका मुक्ति दाता बनता है । अनूपकुमार के सुझाव से आशा पति की थकावट की इलाज कराने के लिए योगिराज को घर में बुलाती है । यह अनूपकुमार की एक चाल थी । जडी बूटी खिलाने के बहाने योगिराज महेश के सुप्त पौरुष को जगा देते हैं । अपने पति के स्वभाव में अचानक आए परिवर्तन को देखकर आशा चकित हो जाती है । उसके पौरुष का मुकाबला करने केलिए वह असमर्थ बन जाती है, वह जल्दी समझ लेती है कि उस घर में उसका निरंकुश शासन अभी नहीं चलेगा । एकांकीकार की राय में पति-पत्नी एक दूसरे को दबाने की और एक दूसरे को अपने अंकुश में रखने की कोशिश करते है तो वहाँ शक्ति संजीवनी का प्रयोग ज़रूर होना चाहिए ।

28. अठारह जुलाई की शाम

विवाह सिर्फ जिस्मों का मिलन नहीं, दो मन का मिलन है । पति-पत्नी दोनों के दृष्टिकोण यदि भिन्न दिशाओं की ओर हैं तो दोनों का मन कभी नहीं मिलेगा । जीवन के प्रति बिलकुल अलग दृष्टिकोण रखनेवाले दम्पति के अलगाव और लगाव ही कथ्य की केन्द्र बिन्दु है ।

प्रमोद और उषा ज़िन्दगी के प्रति अलग अलग दृष्टिकोण रखते हैं । बडे घर की लडकी उषा अपने संवाददाता पति की कम आमदनी से तुष्ट नहीं । वैभव की गोद में पली हुई उषा शादी के बाद भी ऐशोआराम की ज़िन्दगी चाहती है । अपने पति के वेतन में अपने लिए एक साडी भी न खरीद सकती । विवाह के दो महीने के बाद घर का सारा चैन नष्ट हो जाता है । पत्नी की शिकायत सुन सुनकर प्रमोद तंग आ जाता है । पिता के घर में पिता उसे पचास रुपये जेब खर्च के लिए देते थे । यहाँ पति को महीने में चालीस रुपये मिलते हैं इससे एक साडी भी न खरीद सकती । इसके अलावा उन्हें ब्लेयेज़, जम्पर्स, इयरिंग आदि भी खरीदना है । इस पर वह पति से शिकायत करती है । समय काटने केलिए उषा को कई स्थानों पर घूमने की इच्छा है । इसलिए वह माँ की बीमारी का बहाना बनाकर अशोक के साथ देहरादून जाना चाहती है । अशोक एक धनी व्यक्ति है, बी ए में वह उषा के साथ पढता था । प्रमोद को अशोक के चरित्र पर कुछ शक है, फिर भी माँ की बीमारी की खबर सुनकर उसके साथ जाने को प्रमोद उषा को अनुज्ञा देता है । उषा और अशोक के मन में आपस में कुछ खिंचाव है । अशोक जानता है कि उषा अपने वैवाहिक जीवन से बहुत जल्दी ऊब चुकी है, उसकी हालत का अनुचित लाभ उठाना वह चाहता है । प्रमोद के संबन्ध में उषा से अशोक कहता है कि वह तो एक मामूली संवाददाता है स्याही, कागज़, कलम और अखबारों के ढेर के सिवा उसके पास क्या कुछ रहता है ? यह सुनकर प्रमोद के प्रति उषा की घृणा और भी बढती है और घरबार पति को छोडकर अशोक के साथ चले जाने का निश्चय लेती है । वह अठारह जुलाई की शाम थी । उसी दिन एक युवती राजेश्वरी प्रमोद से मिलने

के लिए आती है । राजेश्वरी से हुई बातचित के सिलसिले में उषा समझ लेती है कि अपना पति चाहे धनी न हो फिर भी वे हृदय के धनी है, हृदय को वह पहचानते है, दूसरों के दुखदर्द दूर करने में ही वे जीवन की धन्यता मानते हैं । बिहार में नदियों की बाढ से पीडित किसानों की रक्षा करने के लिए प्रमोद ने जो सेवा की उसका स्पष्ट प्रमाण राजेश्वरी उषा को सुनाती है । राजेश्वरी से हुई बातचित में उषा एक दूसरा सत्य भी जान लेती है कि अशोक धोखेबाजी है उस पर कभी यकीन नहीं करना चाहिए । इतने में वहाँ एक पोस्टमैन प्रमोद के नाम पर आए एक मनीआर्डर देने को आता है । पूछने पर मालूम होता है कि प्रमोद ने बिहार के बाढ-पीडितों को मृत्यु के मुँह से बचाया था, इसलिए वहाँ के नागरिक उन्हें एक मानपत्र देना चाहते हैं और साथ ही दो सौ रूपये भेजे है । यह सुनकर उषा अपने पति के हृदय की उदारता समझती है । अपने पति की महानता समझकर वह पति के साथ सादा जीवन बिताने को तैयार हो जाती है । इतने में प्रमोद और अशोक वहाँ पहुँचता है । अशोक, उषा को एक अंगूठी भी खरीद लाया है । लेकिन उषा उसके साथ जाने को तैयार नहीं, अंगूठी भी वह न स्वीकार करती है ।

इस एकांकी में रामकुमार वर्मा ने इस तथ्य पर ज़ोर दिया है कि धन और रूपये से कोई आदमी बडा नहीं होता, आदमी बडा होता है अपने हृदय से ।

29. रेशमी टाई

मानव मन में फैले हुए कुसंस्कार पर एकांकीकार का जो दृष्टिकोण है उसका चित्रण प्रस्तुत एकांकी में है । जीवन के पूर्वार्द्ध

में जो संस्कार होते हैं, शायद वह बुरे संस्कार हो उससे मुक्ति मिलना बड़ी मुश्किल है । चोरी करना एक दुर्गुण है । उसके संबन्ध में लेखक का मत यह है कि -"यदि सात्विक गुणों से चोरी हो तो अभिनंदनीय है । श्रीकृष्ण की माखन चोरी और नारी हृदय की चोरी पवित्रता और निरीहता की ओर संकेत करती है किन्तु रेशमी टाई की चोरी हृदय पर रहते हुए भी संस्कारों के प्रति बड़ा प्रश्न चिह्न है ।"[1]

इंश्योरेंस कंपनी का एजेन्ट और साम्यवाद का विश्वासी है नवीनचन्द्रराय । उसकी पत्नी है लीला । बचपन से ही नवीनचन्द्रराय को ऐसे एक दुर्गुण है कि अवसर मिलने पर वह दूसरों की चीज़ें हड़प लेते हैं । उनकी पत्नी लीला यह तथ्य जानती है । आज वह एक धनी व्यक्ति है फिर भी उनकी इस आदत में कोई फर्क नहीं । नवीनचन्द्रराय पत्नी लीला को एक नयी रेशमी टाई दिखाते हुए उससे उनकी राय पूछते हैं । तब लीला रेशमी टाई के संबन्ध में अपना मत प्रकट करती है और पूछती है कि यह नयी रेशमी टाई कहाँ से मिली ? इस पर नवीन-चन्द्रराय कहता है कि उसने मदनखन्ना की दूकान में दो टाईज़ पसन्द की और उसमें से एक उसने खरीदा । लेकिन मदनखन्ना ने भूल में दोनों टाईज़ उन्हें दे दिया और एक का दाम लिया । यह सुनकर लीला अपने पति से एक टाई वापस देने को कहती है लेकिन नवीनचन्द्रराय टाई वापस देने को तैयार नहीं, वह दोनों टाईज़ अपने पास रखता है, और सोशिलिज़्म की बात कहते हुए इस चोरी का समर्थन करता है । इतने में सुधालता नामक एक स्वयंसेविका खद्दर बेचने को वहाँ आती है । वहाँ

1. समाज के स्वर '2' संकेत पृ 195 - डॉ रामकुमार वर्मा

पहुँचते समय वह यह तथ्य समझती है कि चौदह नम्बर स्ट्रीट में वह अपना गज भूल गई है । इसलिए गट्ठर नवीनचन्द्रराय के पास रखकर वह गज लेने जाती है । इन्हीं बीच खद्दरवाली की गट्ठर से नवीनचन्द्रराय एक खद्दर चुराकर अलमारी में रखता है । सुधालता लौट आकर अपनी गट्ठर लेकर चली जाती है, लेकिन बाद में वह जानती है कि उसके गट्ठर में एक खद्दर की कमी है इसलिये खद्दर खोजती हुई वह नवीनचन्द्रराय के घर में वापस आती है । अँगूठी खोजती हुई लीला आलमारी खोलते समय वह वहाँ एक खद्दर देखती है वह समझती है कि अपने पति ने खद्दरवाली की गट्ठर से यह खद्दर चुरा ली है । लीला खद्दरवाली से क्षमा माँगती हुई उन्हें खद्दर का पूरा दाम देती है । मेज़ पर खद्दर देखकर नवीनचन्द्रराय विस्मय भरे क्रोध से खद्दर के संबन्ध में पूछताछ करते हैं । लेकिन बाद में वह समझता है कि उनकी चोरी पत्नी ने समझ ली है । इसलिये वह कुर्सी पर बेबसी से गिर पड़ता है । अपनी गलती समझकर वह मदनखन्ना को एक टाई वापस देता है, उसने पत्नी की अँगूठी की चोरी की थी, उस अँगूठी भी वह वापस देता है ।

सामाजिक एकांकी पुनरवलोकन

सामाजिक एकांकियों का अध्ययन करने के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुँचती हूँ कि डॉ. वर्मा ने अपने सभी एकांकियों की रचना किसी न किसी आदर्श की स्थापना के लिए की है । एक हद तक यह आदर्श समाज को स्वस्थ रखने में सहायक है । इन एकांकियों में डॉ. वर्मा ने समाज में फैली हुई अन्ध विश्वास, दहेज प्रथा जैसी विसंगतियों का उन्मूलन करने का प्रयास किया है । उनके अधिकांश एकांकी पारिवारिक

समस्या से संबन्धित है । इन एकांकियों में पति-पत्नी के बीच या सास बहू के बीच होनेवाले झगडे को प्रस्तुत किये गये हैं । पति-पत्नी के बीच होनेवाले शंका, जुगुप्सा, विश्वास का अभाव आदि है इससे पति-पत्नी के रिश्ते में दरारें पैदा होती है । पति-पत्नी के बीच आपसी समझौता टूट जाने का और एक कारण है बेमेल विवाह । "महाभारत में रामायण", "छोटी सी बात", "आँखों का आकाश", "पुरस्कार" आदि एकांकियों में डॉ. वर्मा ने इस समस्या की चर्चा की है ।

आधुनिक समाज से सम्बन्धित एक समस्या है विजातीय विवाह । जाति-पाँति तोडकर विवाह करना लोग कुल धर्म के विपरीत समझते हैं । लेकिन डॉ. वर्मा ने अपने एकांकियों के द्वारा जाति-पाँति एवं जाति बिरादरी के विरुद्ध आवाज़ उठायी है । "जीवन का प्रश्न" नामक एकांकी इसका दृष्टांत हैं । शताब्दियों से समाज में दिखाई पड़नेवाली एक क्रूर व्यवस्था है "दहेज प्रथा" । इस व्यवस्था के कारण आज समाज में दिन व दिन कई निरीह नारियों की हत्या हो जाती है । "एक तोला अफीम की कीमत" में डॉ. वर्मा ने यह समस्या प्रस्तुत की है । "चक्कर का चक्कर" और "छींक" में अन्धविश्वास के प्रति एकांकीकार का व्यंग्य भरी दृष्टिकोण विद्यमान है । समाज को क्षति पहुँचानेवाल और एक कारण है "युद्ध" । चीनी महायुद्ध से पीडित मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण डॉ. वर्मा ने "कलंडर के आखिरी पन्ना" में किया है । जीवन की बुनियादी ज़रूरतों से वंचित आम आदमी की व्यथा की अभिव्यक्ति भी उनके एकांकियों में मिलती है ।

डॉ. वर्मा ने मनोविज्ञान से संबन्धित कुछ एकांकी लिखे हैं । नारी के मनोविज्ञान से संबन्धित एकांकी में नारी को भारतीय आदर्श पतिव्रता नारी के रूप में चित्रित किया साथ ही नारी के मन में विद्यमान ईर्ष्या, आभूषण प्रियता आदि पर करारी चोट की है । नारी से संबन्धित उनकी धारणा यह है कि नारी अबला है उन्हें समाज में रहने के लिए पिता, पति या पुत्र की सहारा आवश्यक है । "रजनी की रात" एवं "मूर्छा" इसका उदाहरण है । "रजनी की रात" में रजनी आधुनिकता की आँधी में बहने की तीव्र इच्छा से सामाजिक बन्धनों को तोडना चाहती है । लेकिन अंत में वह समझती है कि नारी की हैसियत के लिए समाज की दीवारें आवश्यक है । मूर्छा नामक एकांकी में नारी स्वतंत्रता का शोरगुल और उसके आन्दोलन के खोखलेपन का चित्रण है । उसने ऐसे नारियों की भी चर्चा की है जो सुख सुविधापूर्ण ज़िन्दगी के पीछे भटकती है । इस मानसिकता पर चर्चा करते हुए उसने यह दिखाया है कि धन दौलत के चरणों पर कोई सुखी नहीं बनता, हृदय की प्यास बुझाने के लिए प्रेम की शीतल छाया की ज़रूरत है ।

युवकों के मनोविज्ञान से संबन्धित एकांकी में उसने प्रेम और रोमांस की दुनिया में विचरण करनेवाली नयी पीढी की हंसी उठायी है ।

इसके साथ ही डॉ. वर्मा समाज के ऐसे लोगों का भी परिचय कराते हैं जो आडंबर, दम्भ, नृशंसता एवं स्वार्थपरता के कारण समाज को क्षति पहुँचाते हैं । "सही रास्ते" में जयचन्द्र, महेन्द्रकुमार,

केसरी, गिरधारीमल, जानमसीह और "पृथ्वी का स्वर्ग" में सेठ दुलीचन्द का चरित्र इसका दृष्टांत हैं ।

समाज में हम कई तरह के लोगों को देखते हैं । कुछ लोग नृशंसता एवं स्वार्थपरता के कारण समाज को क्षति पहुँचाते हैं तो और कुछ किसी भी कीमत पर जीवनमूल्यों को बनाये रखना चाहता है । अभावग्रस्तता से घिरे रहते वक्त भी नैतिक मूल्यों को ऊँचे उठाना चाहते हैं । बिहारीलाल का जीवन आदर्श इसका स्पष्ट प्रमाण है ।

आदर्शों के प्रति वर्मा के मन में जो गहरा आकर्षण है "पृथ्वी का स्वर्ग"में इसका चित्रण है ।

पाँचवाँ अध्याय

शिल्पगत अध्ययन

पात्र

पात्रों के माध्यम से ही एकांकीकार अपने भावों और विचारों को दर्शकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं । इसलिए एकांकी में पात्रों की आवश्यकता सबसे महत्वपूर्ण है । लेकिन नाटकों की भाँति इसमें अधिक पात्रों की आवश्यकता नहीं । इसमें पात्रों की संख्या कम होती है । इसके सम्बन्ध में डॉ. रामकुमार वर्मा का मत यह है - "एकांकी में पात्र चार या पाँच ही होते हैं जिनका सम्बन्ध नाटक की घटना से सम्बद्ध रहता है । वहाँ केवल मनोरंजन केलिए आवश्यक पात्र की गुंजाइश नहीं । प्रत्येक व्यक्ति की रूपरेखा पत्थर पर खिंची हुई रेखा की भाँति स्पष्ट और गहरी होती है ।"[1] पारलौकिक पात्रों को मंच पर अवतरित करने में कठिनाई है । इसलिए पात्रों की रचना के सम्बन्ध में डॉ. वर्मा ने चार बातें सामान्य रूप से स्वीकार की है । "§1§ पात्र इसी संसार के हो । §2§ पात्रों में जनता को आकर्षित करने की क्षमता हो §3§ पात्रों की रचना मनोवैज्ञानिक आधार पर हो । §4§ नाटक में चार-पाँच पात्रों से अधिक की आवश्यकता नहीं ।"[2]

डॉ. वर्मा के एकांकियों में पात्र तीन श्रेणी में आते हैं - ऐतिहासिक, सामाजिक और पौराणिक । ऐतिहासिक एकांकियों में डॉ. वर्मा ने अतीत भारत के महान सम्राटों एवं उनके जीवन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण घटनाओं का चित्रण किया है । इनमें शिवाजी, विक्रमादित्य

---

1. एकांकी कला - पृ. 41 - डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. त्रिलोकी नारायण दीक्षित
2. एकांकी कला - पृ. 19-डॉ. रामकुमार वर्मा, डॉ. त्रिलोकी नारायण दीक्षित

हर्षवर्धन, औरंगजेब, नानाफड़नीस, दुर्गावती, तैमूर, समुद्रगुप्त आदि के नाम आते हैं । सामाजिक एकांकियों के पात्र अधिकांशत: मध्यवर्गीय परिवार से सम्बन्धित है । पौराणिक एकांकियों में पुराण से सम्बन्धित पात्रों का चित्रण है । भरत, राम, कृष्ण, सीता, अहल्या, सुकन्या, दधीची आदि पात्र इस कोटि में आते हैं ।

पात्रों का वर्गीकरण

ऐतिहासिक एकांकियों में शिवाजी, समुद्रगुप्त, विक्रमादित्य, नाना फटनवीस, बापू, लाल बहादुर शास्त्री आदि पात्र आदर्श प्रतीक के रूप में चित्रित है । "शिवाजी" में शिवाजी के चरित्र की नैतिक दृढ़ता, चरित्र की निर्मलता, शौर्य, मातृभक्ति, स्वदेशानुराग, स्त्रियों की मान-प्रतिष्ठा विषयक दृष्टिकोण आदि ऊँचे आदर्श प्रस्तुत करते हैं । "समुद्रगुप्त" के चरित्र में न्यायप्रियता, बुद्धि कुशाग्रता एवं सूक्ष्म प्रतिभा का चित्रण है । बापू के चरित्र से ईमानदारी, स्वावलंबन की महत्ता, अहिंसा, मन की ताकत, जातीय एकता आदि महत्वपूर्ण तत्वों का प्रतिपादन है । लाल बहादुर शास्त्री जी के चरित्र के द्वारा ज़िन्दगी की किसी भी प्रतिकूल परिस्थिति का सामना करने का उपदेश देते हैं । नाना फटनवीस के चरित्र में साहस, बुद्धि, दूरदर्शिता तथा देशभक्ति का चित्रण है । इन पात्रों के द्वारा वर्मा जी हमें भारतीय संस्कृति के उच्च आदर्शों की याद कराते हैं ।

लेकिन ऐतिहासिक एकांकियों में ऐसे कुछ पात्रों का भी चित्रण है जो विलासी, कायर, देशद्रोही शासक के रूप में आते है । आंभीक, राम गुप्त, कुमारगुप्त, वृहद्रत आदि पात्र इस कोटी में आते हैं । गांधार नरेश आंभीक को कायर एवं देशद्रोही के रूप में चित्रित है । रामगुप्त को कायर एवं विलासी शासक के रूप में चित्रित है । सम्राट कुमारगुप्त के जीवन में विलासी शासक का चित्रण है । सम्राट वृहद्रत प्रजा से अधिक यवनों को प्यार करते थे ।

पौराणिक एकांकियों में राम, भरत, दधीची, कल्पनेमि आदि पात्र भारतीय आदर्श प्रतीक के रूप में चित्रित है ।

सामाजिक एकांकियों का उद्देश्य समाज में व्याप्त कई समस्याओं का चित्रण है । पात्रों का वर्गीकरण की दृष्टि से इसका कोई महत्व नहीं । इसके अधिकांश पात्र शिक्षित मध्यवर्गीय पात्र है । वकील, प्रोफसर, सेठ, डाक्टर, संपादक आदि कई प्रकार के पात्र इस कोटि में आते हैं ।

नारी पात्र - विभिन्न भूमिकायें

ऐतिहासिक एकांकियों के अधिकांश नारी पात्र महान आदर्श से प्रेरित है । आदर्श की रक्षा हेतु वे अपने का बलिदान करने से भी न हिचकती है । मर्यादा की वेदी पर, दुर्गावती, ध्रुवतारिका, कलंकरेखा, चारूमित्रा, दीपदान आदि एकांकियों में नारी अपने देश की

रक्षा के लिए आत्म बलिदान करती है । "मर्यादा की वेदी पर" में भैरवी नामक एक नारी पुरुष वेश में सेल्यूकस से युद्ध करती हुई अपने देश को यवनों से मुक्त कराना चाहती है । लेकिन जब उनकी पराजय होती है तब वह आत्महत्या करती है । दुर्गावती वीर नारी की भाँति मुगल सेनाओं से युद्ध करती है । उनकी राजनीति में षड्यंत्र को कोई स्थान नहीं । इसलिए षड्यंत्रकारियों को उचित दंड देना वह अपना कर्तव्य समझती है । "ध्रुवतारिका" में सफीयत उन्नीसा राजवंश के गौरव तथा देश की मर्यादा- रक्षा हेतु कर्तव्य की वेदी पर अपने प्रणय का बलिदान करती है । "कलंकरेखा" में कृष्णकुमारी जोधपुर के महाराणा मानसिंह के आक्रमण से अपने देश की रक्षा करने के लिए विष-पान करती है । "चारुमित्रा" में अशोक की रक्षा के लिए चारुमित्रा कलिंग सैनिकों से युद्ध करती है । इस युद्ध में वह घायल हो जाती है । "दीपदान" में एक राजपुताना वीरांगना की कहानी प्रस्तुत है । उसमें धाय माँ पन्ना राजकुमार कुंवर उदयसिंह की रक्षा हेतु अपने पुत्र चन्दन को बलिदान करती है । इस प्रकार ऐतिहासिक एकांकियों में कई वीर नारियों का चित्रण है ।

इसके साथ ही ऐतिहासिक एकांकियों में ऐसे कुछ नारी पात्रों का भी चित्रण है जो जिस्म के आकर्षण से देश को क्षति पहुँचाती है । वासवदत्ता, अनन्तदेवी जैसे नारी पात्र इसका उदाहरण है । अधिकार लिप्सा के मोह में अनन्तदेवी षड्यंत्र से अपने पति का वध कर देती है तथा स्कन्दगुप्त के प्रति अन्याय करती है ।

सामाजिक एकांकियों में "परीक्षा" तथा "एक्ट्रेस" में नारी पात्र को आदर्श पतिव्रता नारी के रूप में चित्रित है । "परीक्षा" में बीस वर्षीय रत्ना पचास बरस के अपने पति को बहुत प्यार करती है । वह अपने पति के बाह्य सौंदर्य की अपेक्षा आन्तरिक सौंदर्य को अधिक महत्त्व देती है । "एक्ट्रेस" में अनंगकुमार की उपेक्षिता पत्नी प्रभाकुमारी अपने पति की याद में जीवन बिताती है । "महाभारत में रामायण" "हीरे के झुमके" आदि एकांकियों में नारी पात्रों के मन में विद्यमान ईर्ष्या, जुगुप्सा, आभूषणप्रियता आदि का चित्रण है । "रजनी की रात" तथा "मूर्छा" में नारी स्वतंत्रता पर शोरगुल मचानेवाली नारी पात्रों का चित्रण है । "रजनी की रात" में रजनी तथा "मूर्छा" में बीनाराणी नारी स्वतंत्रता पर शोरगुल मचाती है । लेकिन अन्त में वह समझती है कि नारी की हैसियत के लिए समाज बिलकुल आवश्यक है । इसके साथ ही डॉ. वर्मा ने सामाजिक एकांकियों में ऐसे नारी पात्रों का भी चित्रण किया है जो सुख सुविधापूर्ण जिन्दगी के पीछे भटकती है । "अठारह जुलाई की शाम" में उषा, "शक्ति संजीवनी" में आशा, "प्रेम की आँखें " में रेखा आदि पात्र इसके उदाहरण हैं ।

पौराणिक एकांकियों में अधिकांशत: नारी पात्रों को भारतीय आदर्श नारी के रूप में चित्रित है । "राजारानी सीता" में सीता, "सन्देह की निवृत्ति" में अहल्या तथा सुकन्या में सुकन्या का चरित्र इसका उदाहरण है । इन भारतीय पतिव्रता नारी के द्वारा डॉ. वर्मा ने भारतीय नारी में विद्यमान एकनिष्ठ प्रेम तथा सेवा भाव का चित्रण किया है ।

मुख्य पात्र और गौण पात्र

डॉ. वर्मा के प्राय: सभी एकांकियों में कई गौण पात्रों को देखते हैं । गौण पात्रों का प्रयोग मुख्य पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं के स्पष्टीकरण में सहायक बन जाता है । एकांकी में वातावरण के निर्माण में गौण पात्रों का प्रयोग सहायक सिद्ध होता है । लेखक प्राय: मुख्य पात्रों को इतिहास से लेकर शेष पात्रों को अपनी कल्पना से निर्मित करता है । इन काल्पनिक पात्रों पर ऐतिहासिक तथ्यों का आरोप लगाने पर ऐतिहासिक प्रतीति हो जाती है । डॉ. वर्मा ने ऐसे अनेक पात्रों की सृष्टि की है । "चारुमित्रा" में अशोक से सम्बन्धित ऐतिहासिक घटना को प्रस्तुत करने के लिए "चारुमित्रा" नामक एक काल्पनिक पात्र की सृष्टि की है । "श्री विक्रमादित्य" में शक राजकुमार क्षत्रप भूमक की सृष्टि की गई है । "समुद्रगुप्त पराक्रमांक" में मणिभद्र, धवलकीर्ति, राजनर्तकी रत्नप्रभा आदि पात्रों की सृष्टि की है । उसी प्रकार सभी एकांकियों में काल्पनिक पात्र प्रचुरता से मिलते हैं । वास्तव में ये सभी पात्र गौण पात्र है । चाहे सामाजिक हो ऐतिहासिक हो या पौराणिक सभी एकांकियों में ऐसे पात्रों की भरमार है जो जीवन के मूल्यों को और आदर्शों को ऊँचे उठाते हैं ।

चरित्रचित्रण

एकांकी में चरित्रचित्रण की सर्वोपरि महत्ता रही है । चरित्रचित्रण के सम्बन्ध में डॉ. वर्मा का मत यह है - "रंगमंच के नाटकों में

चरित्र-चित्रण विशेष महत्व रखता है । चरित्र चित्रण का सम्बन्ध व्यक्तित्व से है और व्यक्तित्व मनोविज्ञान पर आधारित है । मनोविज्ञान के दो पक्ष है : पहला पक्ष व्यक्ति के संस्कारों से सम्बन्ध रखता है, जो उसके स्वभाव का निर्माण करते हैं । ये संस्कार उसने अपने वंश से उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त किये हैं जो उसके रक्त में है । ये बड़ी कठिनाई से बदलते हैं । वैभव और विपत्ति में भी ये व्यक्ति का साथ नहीं छोड़ते और अनायास ही उसके मुख से निकल पड़ते हैं ।"[1] "मनोविज्ञान का दूसरा पक्ष परिस्थितियों के प्रभाव से सम्बन्ध रखता है । पात्र के संस्कारों पर जब परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है तो वे अपना विकास करने लगते हैं । यदि प्रभाव संस्कार के अनुकूल होता है तो पात्र उचित या अनुचित दिशा में सरलता से विकास करने लगता है । यदि यह प्रभाव संस्कार के प्रतिकूल पड़ता है तो पात्र में अन्तर्द्वन्द्व या मानसिक संघर्ष आरंभ हो जाता है । इससे पात्र के मनोविज्ञान के भीतर का एक-एक पार्श्व झलकने लगता है । संस्कार और प्रभाव की उचित युक्ति में ही चरित्र चित्रण का सौन्दर्य है । जब यह सौन्दर्य अभिनय कला के साँचे में ढलता है तो रंगमंच पर सच्चे जीवन का अवतरण होता है ।"[2] डॉ. वर्मा के ऐतिहासिक एकांकियों में अधिकांश चरित्र प्रधान है । शिवाजी, विक्रमादित्य, समुद्रगुप्त, बापू, दुर्गावती, नाना फड़नवीस आदि इसका उदाहरण है । चरित्र प्रधान एकांकी के सम्बन्ध में उनका मत यह है - "आधुनिक जीवन को देखते हुए हमारे नाटकों को चरित्र प्रधान होना

---

1. दीपदान भूमिका - पृ. 13-14 - डॉ. रामकुमार वर्मा
2. दीपदान भूमिका - पृ. 15 - डॉ. रामकुमार वर्मा

चाहिए । प्रत्येक व्यक्ति की रूपरेखा मनोभावों के विकासानुसार स्पष्ट होनी चाहिए । हमें वर्ग और समूह के पर्याय व्यक्तियों पर अधिक ध्यान देना चाहिए, क्योंकि उन्हीं के मनोविज्ञान के सहारे हम जीवन के गूढ रहस्यों से परिचित हो सकते हैं ।"[1] शिवाजी की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करने के लिए डॉ. वर्मा उनके जीवन सम्बन्धी महत्वपूर्ण घटना यहाँ प्रस्तुत करते हैं । शिवाजी के मुख्य सेनापति आबाजी सोनदेव बीजापुर आक्रमण में प्राप्त सभी वस्तुओं के साथ बीजापुर के सुबेदार अहमद की पुत्रवधू गौहरबानू को भी शिवाजी के सम्मुख भेंट करते हैं । लेकिन शिवाजी सेनापति को डाँट करते हुए गौहरबानू को माँ की भाँति उसे सिंहासन पर बिठाकर समस्त सरदारों से उसे माँ-स्वरूपा अभिवादन करवाते हैं । साथ ही वह अपने आदर्श, समस्त सरदारों को याद कराते हैं । यह घटना उनके चरित्र की निर्मलता दिखाने में सफल हुए है । इसी प्रकार "औरंगजेब की आखिरी रात" नामक एकांकी में औरंगजेब की चरित्र सम्बन्धी विशेषतायें प्रस्तुत की है । औरंगजेब अत्यन्त क्रूर शासक था । साम्राज्य विस्तार के मोह में उसने कई प्रकार का अत्याचार किया । लेकिन मृत्यु के समय इन दुष्कृत्यों के कारण उनके मन में पश्चात्ताप होता है । बेहोशी में वे कई बातें अपनी बेटी जीनत उन्नीसा से कहते हैं । औरंगजेब से निकलते हुए ये शब्द उनके चरित्रचित्रण में बहुत सहायक है ।

---

1. रेशमीटाई भूमिका - पृ. 14 - डॉ. रामकुमार वर्मा

इन एकांकियों में पात्रों के चरित्रचित्रण के लिए लेखक ने मनोवैज्ञानिक पद्धति को स्वीकार किया है । पात्रों के मन की गहराई में उतरकर उनके मानसिक संघर्ष को लेखक संवादों के ज़रिए प्रस्तुत करते हैं । "औरंगजेब की आखिरी रात" में लेखक ने इस पद्धति को स्वीकार किया है । "रात का रहस्य" में बिम्बसार एवं पत्नी वासवी के संवादों द्वारा पितृ-वत्सलता का आदर्श प्रस्तुत किया गया है । पुत्र अजातशत्रु द्वारा जितना कठोर दंड मिलने पर भी, अजातशत्रु का पुत्रप्राप्ति की सूचना मिलकर पिता बिम्बसार आनन्दातिरेक से मूर्च्छित हो जाते हैं । यहाँ लेखक का उद्देश्य बिम्बसार की पितृ-वत्सलता दिखाना है । बिम्बसार के मनोवैज्ञानिक प्रस्तुतीकरण द्वारा यह उद्देश्य सफल हुआ है । इसप्रकार सामाजिक, पौराणिक एकांकियों में भी पात्रों के चरित्रचित्रण के लिए मनोवैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग है । "परीक्षा" नामक एकांकी में रत्ना की मनोवैज्ञानिक परीक्षा द्वारा भारतीय नारी के मन में विद्यमान पातिव्रत्य को दिखलाया है । कहाँ से कहाँ, हीरे के झुमके, महाभारत में रामायण आदि एकांकी स्त्री मनोविज्ञान पर आधारित है । "कहाँ से कहाँ" तथा "महाभारत में रामायण" में नारी के बीच होनेवाले ईर्ष्या, जुगुप्सा आदि मनोभावों का चित्रण है । नारी-नारी के बीच ईर्ष्या होना स्वाभाविक बात है । भिन्न भिन्न विचारधाराओं में विश्वास रखनेवाली महिलायें है सास और बहू । जब ये दोनों आपस में मिलती है तब दोनों के बीच संघर्ष होता है । संघर्ष की चरमावस्था पर दोनों आपस में समझती है । इस अवस्था पर पाठक या दर्शक इन दोनों पात्रों की चरित्र संबन्धी विशेषतायें समझते हैं । "भरत का भाग्य" में भरत के संवादों से उनके चरित्र सम्बन्धी सभी विशेषतायें वैराग्य, भ्रातृ-स्नेह तथा भाई के प्रति अनन्य श्रद्धा

पाठक समझ सकते हैं । राम के वियोग से भरत बहुत दुःखी रहते हैं, राम की पादुकाओं की पूजा करते हुए शासन करते हैं, तथा उनकी प्रतीक्षा में घड़ियाँ गिनते रहते हैं । उनके आगमन के समय आनन्दातिरेक से मूर्च्छित हो जाते हैं । ये सभी घटनाऐं उनके भ्रातृ-स्नेह दिखलाती हैं । इसप्रकार सभी एकांकियों में चरित्रचित्रण सम्बन्धी सूक्ष्मता ही रह पड़ते है ।

संघर्ष

संघर्ष एकांकियों का प्राण है । संघर्ष के द्वारा एकांकी का विकास होता है । एकांकी में संघर्ष के प्रयोग के सम्बन्ध में डॉ. वर्मा का मत यह है "नाटक का प्राण उसके संघर्ष में पोषित होता है । यह संघर्ष जितना अधिक नाटककार की विवेचन शक्ति में होगा, उतना ही जिज्ञासमय उसका नाटक होगा । अतः नाटककार ऐसी स्थितियों की खोज में रहता है जिसमें उसे विरोध की तेजस्वी शक्तियाँ मिलती हैं । नाटक लिखने के पूर्व उसके हृदय में ही एक विप्लव होता है । वह उस विप्लव को अपनी अनुभूति की फूँक से और भी उत्तेजित करता है । फिर उसे एक ज्वालामुखी का रूप देकर अपने नाटक में रख देता है ।"[1] संघर्ष दो प्रकार के होते हैं - बाह्य संघर्ष और आन्तरिक संघर्ष । डॉ. वर्मा अपने सभी एकांकियों में बाह्य संघर्ष की अपेक्षा आन्तरिक संघर्ष को अधिक स्थान देते है । इसके सम्बन्ध में डॉ. वर्मा स्वयं कहते हैं - "जब यह संघर्ष दो बाह्य परिस्थितियों में होता है तो बाह्य द्वन्द्व कहा जाता है और जब

---

1. रेशमीटाई - भूमिका - पृ. 7 - डॉ. रामकुमार वर्मा

यह संघर्ष व्यक्ति की दो भावनाओं के बीच होता है तो उसे अन्तर्द्वन्द्व की संज्ञा दी जाती है । अन्तर्द्वन्द्व मनोविज्ञान के क्रोड में पोषित होता है । आज के नाट्य साहित्य में बाह्य द्वन्द्व की अपेक्षा अन्दर्द्वन्द्व की ही प्रमुखता है । एकांकी में तो यह अन्दर्द्वन्द्व और अधिक तीव्रता के साथ प्रस्तुत किया गया है । अधिकांश एकांकी तो अन्तर्द्वन्द्व के चित्रण के लिए ही लिखे गये हैं ।"[1]

उनके सभी एकांकियों में मनोवैज्ञानिक संघर्ष दीख पडते हैं । "दीपदान" नामक एकांकी में पुत्रवात्सल्य और स्वामिभक्ति के बीच पडकर तडपनेवाली पन्ना के हृदय को एकांकीकार ने बहुत मर्मस्पर्शी ढंग में चित्रित किया है । उसके मन में यही संघर्ष उठता रहता है कि वह अपने भोले बच्चे के साथ कपट कर रही है । लेकिन उसके मातृत्व में उदयसिंह ऐसी समाया है कि उस पराये बच्चे की रक्षा के लिए वह अपने बच्चे की बलि देती है । उस पराये बच्चे की रक्षा करते हुए एक राजवंश को बगार से बचा रही थी । उसीप्रकार "चारुमित्रा" में भी मनोवैज्ञानिक संघर्ष का एक सुन्दर चित्र है । स्वामिभक्ति तथा देशभक्ति ये दोनों विचारधारायें चारुमित्रा के मन में संघर्ष का कारण बन रही है । चारुमित्रा कलिंग कन्या है । इसलिए अपने देश की रक्षा करना उनका कर्तव्य है । लेकिन वह सम्राट अशोक की परिचारिका है । इसलिए अशोक के विरुद्ध वह कुछ नहीं कर सकती । अन्त में वह अपनी जान की बलि देती हुई सम्राट अशोक की रक्षा करती है । अशोक के शिविर में उनपर आक्रमण

---

1. इन्द्रधनुष भूमिका - पृ. 5 - डॉ. रामकुमार वर्मा

करने के लिए छिपकर बैठे कलिंग सैनिकों से संघर्ष कर वह बुरी तरह घायल हो जाती है । "कलंकरेखा" नामक एकांकी में भी मनोवैज्ञानिक संघर्ष का प्रयोग है । उदयपुर के महाराणा भीमसिंह अपनी पुत्री कृष्णकुमारी का विवाह सम्बन्ध जयपुर के महाराजा जगतसिंह के साथ करने का निश्चय लेता है । लेकिन जोधपुर के महाराणा यह विवाह सम्बन्ध स्वयं से करना चाहता है । इसलिए मानसिंह, भीमसिंह को यह चुनौती भेजता है कि यदि कृष्णकुमारी का विवाह मानसिंह से नहीं किया जाए तो युद्ध के लिए प्रस्तुत हो जाय । यह सुनकर भीमसिंह बहुत व्याकुल हो जाता है । प्रजा की रक्षा करना तथा अपनी बेटी की रक्षा करना उनका कर्तव्य है । इस अवसर उनके मन में जो संघर्ष होता है, इन शब्दों में है -

"महाराणा - किन्तु महारानी । क्या एक कन्या के पीछे मेवाड, अम्बर और मारवाड के हज़ारों वीरों को रक्त में डूब जाने दूँ ? जिन सरदारों ने वंशानुगत मेवाड की सेवा में अपना जीवन व्यतीत किया है क्या उनके पवित्र रक्त को पानी की तरह बह जाने दूँ ? एक ओर कृष्णा का विवाह, दूसरी ओर सहस्रों वीरों के पवित्र रक्त के व्यर्थ बहाने का प्रश्न है ।"[1]

अन्त में भीमसिंह अपनी पुत्री का वध करने का निश्चय लेता है और

---

1. रक्ततरंगिम भूमिका - पृ, 148 - डॉ. रामकुमार वर्मा

इसका दायित्व अपने भाई जवानसिंह पर सौंपता है । इस अवसर कर्तव्य तथा वात्सल्य के कारण उनके मन में संघर्ष होता है ।

"जवानसिंह - तो फिर यह उठी कटार (अपने हाथ के कडे पर शब्द करता हुआ कटार ऊपर उठता है) जय एकलिंग । .....(करुण स्वर में) ओह । मेरा हाथ काँप रहा है । यह कटार मुझसे संभल नहीं सकती । (कठार के गिरने की आवाज़) मैं हत्या नहीं कर सकता । इतने कोमल शरीर पर यह क्रूरता । नहीं, नहीं ।"[1]

उनके इन शब्दों में यह मनोवैज्ञानिक संघर्ष मुखर हो उठते हैं । "सन्देह की निवृत्ति" नामक एकांकी में भी मनोवैज्ञानिक संघर्ष का प्रयोग है । महर्षि गौतम अपनी पत्नी अहल्या का वध करने का कार्य पुत्र चिनगारी पर सौंपता है । लेकिन हत्या का कारण उससे न कहता है, इसलिए पुत्र चिनगारी असमंजस में पड जाता है । माँ की हत्या करना उचित है ? या अनुचित ? पुत्र चिनगारी इस मनोवैज्ञानिक संघर्ष में पड जाता है । इस प्रकार सभी एकांकियों में कथावस्तु की चरमसीमा पर मनोवैज्ञानिक संघर्ष का प्रयोग दीख पडता है ।

संवाद

संवाद एकांकी नाटकों के लिए सबसे आवश्यक तत्व है । इसके द्वारा एकांकीकार अपने विचारों तथा अनुभूतियों को दर्शकों के

---

1. रजतरश्मि भूमिका - पृ. 157 - डॉ. रामकुमार वर्मा

सम्मुख प्रस्तुत करता है । सुन्दर और आकर्षक कथोपकथन एकांकी के समस्त अभावों को दूर कर देता है । संवाद या कथोपकथन की अनेक विशेषतायें हैं । एकांकी में कथोपकथन अत्यन्त संक्षिप्त होना चाहिए । अनावश्यक वाक्यों और शब्दावलियों को एकांकियों में कोई स्थान नहीं है । संवाद मर्मस्पर्शी और वाग्वैदग्ध्यपूर्ण होना चाहिए । कथोपकथन में चरित्र की चारित्रिकता को प्रकट करने की पूर्ण शक्ति होनी चाहिए । कथोपकथन सरल और स्पष्ट होना चाहिए साथ ही कथोपकथन में पात्रों के भावों को प्रकट करने की क्षमता होनी चाहिए । स्वगत कथन एकांकी के लिए अस्वाभाविक और अवांछनीय है ।

डॉ. वर्मा के अनुसार "संवादों की उपयोगिता पात्रों के मनोविज्ञान और व्यक्तित्व को चित्रित करने में हैं । इसलिए पात्रों के अनुकूल संवाद होना आवश्यक है । यह संवाद कथावस्तु का विशिष्ट भाग हो, केवल मात्र मनोरंजन के लिए संवाद का विस्तार नहीं होना चाहिए । वह पूर्ण स्वाभाविक और परिस्थिति के अनुकूल हो ।"[1] डॉ. वर्मा के एकांकियों में संवाद पात्रों के मनोविज्ञान और व्यक्तित्व का चित्रण करने में सफल हुए हैं । संवाद की भाषा के अनुसार पात्रों के भिन्न भिन्न भाव मुखर हो उठते हैं । इसलिए संवाद रस संचार करने में सहायक सिद्ध होता है । संवादों के माध्यम से ही पात्र के मन में विद्यमान वीर, करुणा, रौद्र, वात्सल्य, भयानक आदि कई प्रकार

---

1. शिवाजी भूमिका - पृ. 17 - डॉ. रामकुमार वर्मा

के भाव प्रकट होते हैं । ऐतिहासिक एकांकियों के संवादों में वीरता की प्रधानता है । "औरंगज़ेब की आखिरी रात" में औरंगजेब की पश्चाताप भावना, चारुमित्रा में चारुमित्रा की देशभक्ति एवं स्वामिभक्ति, शिवाजी में शिवाजी की नैतिक दृढ़ता, भरत का भाग्य में भरत की भ्रातृभक्ति का परिचय पाठकों को उनके संवादों के ज़रिए ही प्राप्त होता है ।

उनके संवादों की एक विशेषता पात्रों के चरित्रचित्रण में उनकी प्रवीणता है । सभी एकांकियों में संवादों के माध्यम से ही पात्रों की मनोदशा प्रकट होती है । इस सम्बन्ध में डॉ. वर्मा ने स्वयं कहा है - "पात्रों के संवाद उनके मनोविज्ञान से ही परिचालित होते हैं । पात्र के हृदय में गूँजनेवाला एक-एक शब्द अपनी भाव-राशि में सजा हुआ एक - एक मोती है । उसकी आब तभी चमक सकेगी जब वह संवाद में अपना वास्तविक स्थान प्राप्त करेगा । यही कारण है कि संवाद के माध्यम से ही चरित्रचित्रण की महत्ता दृष्टिगोचर होती है ।"[1] उनके एकांकियों में विषय के अनुरूप भावात्मक, आलंकारिक, काव्यात्मक, हास्य व्यंग्यमयी एवं विश्लेषणात्मक भाषा शैली का प्रयोग मिलते हैं । एक कवि होने के कारण उनके संवादों में अनजान से काव्यमयी भाषा शैली आती है । यह विशेषता उन्हें अन्य एकांकियों से पृथक कर देती है । उनका प्रथम एकांकी "बादल की मृत्यु" इसका उदाहरण है ।

---

1. नाना फड़नवीस भूमिका - पृ. 13 - डॉ. रामकुमार वर्मा

उदा:-"बादल संध्या से कहती है - महारानी संध्या । रुको, कुछ देर सरिता में अपना मुख देखो । लहरों की लचकती हुई रूप-राशि में यौवन के समान बरस पड़ो । पृथ्वी के अंग में सुनहले अंगराग के समान लगी रहो । परमात्मा की सत्ता के समान कुछ देर क्षितिज-रेखा में सुनहले फूल गूँथो । क्यों रानी परमात्मा की सत्ता किसे कहते हैं ।"[1] उसी प्रकार "चम्पक", "चारुमित्रा" आदि एकांकियों में भी काव्यमयी संवाद दिखाई पड़ते हैं । उनके संवाद सम्बन्धी दूसरी विशेषता आलंकारिकता है । कई एकांकियों में उपमा, रूपक आदि कई प्रकार के अलंकार दिखाई पड़ते हैं ।

उदा:- "चम्पक" नामक एकांकी का एक संवाद

"तुम्हारे कान, जैसे रेशम के दो छोटे छोटे टुकडे ईश्वर ने तुम्हारे सिर के समीप गूँथ दिए है ।"[2] "तुम्हारी कोमल पूँछ इन्द्रधनुष के समान झुकी हुई है ।"[3] मैं जब टहलने जाता हूँ तो, तो धूमकेतु की भाँति मेरे पीछे हँसी की रेखा होती है ।"[4] "बहुत धीरे से मेरे पैरों पर अपना रख देता है, मानो रात-भर मेरे चरणों के समीप बैठकर मेरी आराधना करता रहता है ।"[5] आदि ।

उन्होंने हास्य व्यंग्य एकांकियों की रचना की है । इन एकांकियों के संवाद व्यंग्यात्मक वाक्यों से भरे हुए है । पृथ्वी का

---

1. आजकल नवम्बर 1990 - पृ. 7
2. समाज के स्वर-3 - पृ. 159 - डॉ. रामकुमार वर्मा
3. समाज के स्वर 3 - पृ. 159 - डॉ. रामकुमार वर्मा
4. समाज के स्वर 3 - पृ. 161 - डॉ. रामकुमार वर्मा
5. समाज के स्वर 3 - पृ. 162 - डॉ. रामकुमार वर्मा

स्वर्ग, रंगीन स्वप्न, फैल्ट हैट, रूप की बीमारी, कवि पतंग, नमस्कार की बात, कहाँ से कहाँ, आशीर्वाद, इलेक्शन, सही रास्ता आदि एकांकी इसके उदाहरण हैं । कभी कभी उनके एकांकियों में पात्रों के मनोभावों के सूक्ष्म विश्लेषण में विश्लेषणात्मक भाषा शैली तथा प्रणय प्रसंगों में भावात्मक भाषा शैली भी मिलती है । उन्होंने कुछ एकांकियों में स्वगत कथन का प्रयोग किया है । "रजनी की रात" इसका उदाहरण है । "रजनी की रात" में रजनी स्वयं कहती है - "रजनी - (गहरी सांस लेकर) जीवन का पहला अनुभव । अकेली, सबसे अलग । मैं ने कहा ..... साधना के लिए एकान्त की आवश्यकता हैं ..... आनन्द -साधना के लिए एकान्त की आवश्यकता है ..... । आनन्द बाबू ने कहा .....समाज एक बिगड़ा हुआ जानवर है - अगर मैं इस जानवर को पुचकार कर वश में न कर सकूँगा तो ऐसी गोली मार दूँगा कि वह तकलीफ से कराहने लगे । कितनी शक्ति ..... कितनी आत्महत्या । ..... मैं समाज में चली जाऊँ ..... ? जाऊँ..... नहीं नहीं, मैं यहीं रहूँगी..... यहीं रहूँगी । यहीं रहूँगी । (सोचती हुई पिताजी के तैल चित्र के पास जाकर) पिताजी, मैं यहीं रहूँगी । मैं दुनिया को दिखलाना चाहती हूँ कि सुख कहाँ और किस में हैं । लेकिन आपकी आँखों में आंसू .....पिताजी । (भावावेग से हट जाती है और अंगीठी के पास जाती है । बैठकर सोचते हुए) आ-नं-द ओह । कैसा जी हो रहा है । (सोचती है । पुस्तक पढ़ने की कोशिश करती है, व्यर्थ । पुकारकर) केतर ।"[1]

---

1. समाज के स्वर 3 - पृ. 69 - डॉ. रामकुमार वर्मा

भाषा

भाषा एकांकी का एक महत्वपूर्ण तत्व है । एकांकी की उत्कृष्टता भाषा शैली पर निर्भर है । एकांकी की भाषा बोधगम्य और सरल होना आवश्यक है । डॉ. वर्मा ने अपने एकांकियों में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है । इस सम्बन्ध में उनकी धारणा यह है कि "यदि रंगमंच पर स्वाभाविकता का लाना विधेय है तो हमें प्रत्येक पात्र के स्वभाव और व्यक्तित्व के अनुसार कथोपकथन की शैली का निर्धारण करना होगा । इससे नाटक में विविधता और रस का उद्रेक होगा और कुतूहल को बल प्राप्त होगा । यदि नाटक में विदेशी पात्र है तो उसकी भाषा के अधिक से अधिक समीप होगी । यदि पात्र सामान्य होगा तो उस शैली से विनोद की सृष्टि होगी । यदि पात्र गंभीर होगा तो उससे उसके व्यक्तित्व का बोध होगा । दोनों ही परिस्थितियों में स्वाभाविकता की रक्षा होगी ।"[1]

पात्रानुकूल भाषा डॉ. वर्मा के एकांकियों की एक विशेषता है । वातावरण और प्रसंग के अनुसार भाषा शैली बदलती रहती है । यह पात्रानुकूल भाषा एकांकियों को सहजता एवं स्वाभाविकता देती है । उनके एकांकियों में परिस्थिति के अनुसार भाषा में वैचित्र्य है । ऐतिहासिक एवं पौराणिक नाटकों में - प्राचीन भारत की सभ्यता का और संस्कृति से संबन्धित नाटकों में तत्सम प्रधान शुद्ध हिन्दी का

---

1. दीपदान भूमिका - पृ. 17 - डॉ. रामकुमार वर्मा

व्यवहार हुआ है । मुगलकालीन राजाओं से सम्बन्धित एकांकियों की भाषा में मुगलकालीन संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित है । श्री विक्रमादित्य, समुद्रगुप्त, पराक्रमांक, कादम्ब या विष आदि एकांकियों में संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग है । "तैमूर की हार" में अपभ्रंश मिश्रित खडीबोली तथा उर्दू-फारसी का और "दुर्गावती" में अरबी-फारसी का प्रयोग है ।

उदा:- "महारानी यह ज्वाला हिन्दुस्तान का जलवा है । मैं नवाब साहब बहादुर से यही अर्ज करूँगा कि वह मलकए-आलिया को अपनी हमशीरा हो समझे । आपके अदल और मेहरबानी का हजार-हजार शुक्रिया । बन्दा खिदमत में आदाब बजा लाता है ।"[1] ऐतिहासिक एकांकियों में अधिकांशतः हिन्दु पात्र शुद्ध सुसंस्कृत खडीबोली में वार्तालाप करते हैं तो मुसलमान उर्दू, अरबी फारसी शब्दों से प्रयुक्त भाषा का प्रयोग करते हैं । -दीने इलाही" तथा "वाजिद अलिशाह" की भाषा उर्दु-फारसी मिश्रित खडीबोली है । सामाजिक एकांकी अधिकांशतः मध्यमवर्ग के जीवन से सम्बन्धित है । इनकी भाषा मूलतः समाज के दैनिक जीवन में प्रयुक्त होनेवाली है । इनमें पढ़े-लिखे लोगों के मुँह से खडीबोली और अंग्रेजी का तथा ग्रामीण अनपढ़ लोगों के मुँह से अवधी शब्द निकलते हैं । उदा:- "फैल्ट हैट" में शीला के संवादों में डायरेक्ट ऐक्शन, सिविल डिसओबीडियन्स, स्टुडेन्ट्स, ऐक्टर, कांग्रेस, मिनिस्टरी, टेबल आदि शब्द आते हैं ।

---

1. रजतरश्मि - पृ. 100 - डॉ. रामकुमार वर्मा

संकलनत्रय

भारतीय नाट्यशास्त्र में सबसे पहले केवल दो संकलन थे कार्य और काल संकलन । लेकिन डॉ. वर्मा ने पाश्चात्य प्रभाव से प्रेरित होकर स्थान संकलन को भी नाटकीय तत्वों में जोड़ने की चेष्टा की । इस प्रकार संकलनत्रय का सिद्धांत सबसे पहले डॉ. वर्मा ने एकांकी के लिए स्वीकार किया है । "संकलनत्रय का तात्पर्य है समय, कार्य एवं स्थान की इकाई का संकलन ।"[1]

डॉ. रामकुमार वर्मा का विचार यह है कि "एकांकी ही एक ऐसी रूपक रचना है जिसमें संकलनत्रय का विधान अनिवार्य रूप से आवश्यक है एक सम्पूर्ण कार्य एक ही स्थान पर एक ही समय में घटित होना आवश्यक है । एकांकी नाटककार की कुशलता तो यही है कि वह एक ही स्थान पर कार्यों की विविध घटनाओं की क्रिया और प्रतिक्रिया इस भाँति उपस्थित करें कि कुतूहल की संचित राशि चरम सीमा में उभरकर किसी सत्य की ओर संकेत कर दे । अतः एकांकी में अनेक दृश्यों का विधान एकांकी की कला के विपरीत चला जाता है । घटनाओं की विकासोन्मुखता को आघात पहुँचता है और एकांकी की सम्बद्धता विनष्ट हो जाती है । एकांकी कला तो तभी पूर्ण कही जा सकती है जब घटना कार्य का रूप लेकर अपने रूप में

---

1. एकांकी कला - पृ. 33 - डॉ. रामकुमार वर्मा, त्रिलोकी नारायण दीक्षित

कसी हुई हो, उसका संकेत जीवन के किसी तथ्य की ओर हो और वह अपने रूप में किसी अन्य घटना की अपेक्षा न रखती हो । वह घटना अपने ऐसे रूप में उपस्थित हो कि उसकी चरम परिणति एक ही स्थान पर हो और ऐसे क्षण में हो जो विविध दृश्यों की मांग न करे । इसी शैली में संकलनत्रय का विधान है जो एकांकी के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है ।"[1]

लेकिन हिन्दी एकांकीकारों में संकलनत्रय के सम्बन्ध में मतभेद है । कुछ विद्वानों के अनुसार संकलनत्रय सिद्धांत एकांकी के लिए आवश्यक नहीं है । सेठ गोविन्ददास के अनुसार स्थान संकलन को एकांकी में कोई स्थान नहीं है । डॉ. नगेन्द्र के अनुसार काल तथा स्थान की एकता एकांकी के लिए आवश्यक है लेकिन समय संकलन की ज़रूरत नहीं ।

डॉ. रामकुमार वर्मा के सभी एकांकियों में संकलनत्रय का पालन किया गया है । उनके एकांकियों में सारे दृश्य एक ही काल के है तथा एक ही स्थान पर दिखाये जा सकते हैं सभी एकांकियों में केवल एक दृश्य है । इन सभी कारणों से स्थान, काल तथा कार्य की एकता उत्पन्न करने में सहायक होती है । दीपदान नामक एकांकी की सारी घटनायें सन् 1836 ई. की है । आरंभ से अंत तक सभी घटनायें कुंवर उदयसिंह के कक्ष में है । एकांकी में केवल एक दृश्य है । प्रस्तुत एकांकी में जो घटना है यह धाय माँ पन्ना की स्वामिभक्ति एवं देशभक्ति

---

1. एकांकीकला - पृ. 35 - डॉ. रामकुमार वर्मा

दिखलाने में सफल हुए हैं । सीमित समयों के भीतर ही एकांकी समाप्त हो जाता है ।

"रात का रहस्य" एकांकी की सभी घटनायें मगध सम्राट अजातशत्रु के पिता बिम्बसार की कुटी में है । एकांकी की घटनाऐं ई॰पू॰ 548 की है । एकांकी का समय रात्रि के दूसरे पहर है । रात्रि के दूसरे पहर से आरंभ होकर दो पहर बाद समाप्त हो जाता है । एकांकीकार का उद्देश्य बिम्बसार की पितृ-वत्सलता दिखाना है । बिम्बसार के जीवन की अन्तिम घटना उसके लिए पर्याप्त है । प्रस्तुत एकांकी के स्थान, समय, एवं वातावरण इस घटना को प्रभावोत्पादक बनाने में सहायक हो जाते हैं ।

"औरंगज़ेब की आखिरी रात" डॉ॰ वर्मा के ऐतिहासिक एकांकियों में एक उत्कृष्ट एकांकी है । एकांकी का समय और स्थान, 18 फरवरी 1707 रात्रि के तीन बजे अहमदनगर के किले हैं । औरंगज़ेब अत्यन्त क्रूर, अत्याचारी शासक था । लेकिन जीवन के अन्तिम क्षणों में उनको अपने द्वारा किये गये दुष्कृत्यों पर पश्चात्ताप होता है । 18 फरवरी 1707 रात की एक घटना औरंगज़ेब की मृत्यु के अन्तिम क्षण उनके मनपरिवर्तन को दिखलाने में सफल है ।

संकलनत्रय विशेष रूप से ऐतिहासिक और पौराणिक एकांकी के लिए बहुत आवश्यक है । इन सभी एकांकियों में स्थान, कार्य

एवं समय संकलन से जो प्रभाव उत्पन्न होता है वह अत्यन्त गहरा तथा व्यापक है ।

उनके सभी एकांकियों में एक ही स्थान पर कार्यों की विविध घटनाओं की क्रिया और प्रतिक्रिया कौशल के साथ प्रस्तुत हुई है । इसके कारण पाठकों का कुतूहल बढ़ता चला गया है और हम ऐतिहासिक सत्य को उसकी संपूर्णता में हृदयंगम कर लेते हैं । इन्हीं तत्वों के कारण एकांकी का जो रूप दिया है वह हमें निश्चित उद्देश्य तक पहुँचाने में समर्थ है ।

सामाजिक एकांकी में उन्होंने संकलनत्रय का पालन किया है । लेकिन इन एकांकियों में काल और स्थान की एकता ऐतिहासिक एकांकियों से भिन्न है । इन एकांकियों का स्थान अधिकांशत: किसी घर या दफ्तर है । "रजनी की रात" में आरंभ से अंत तक सभी घटनाऐं रजनी के घर में है । परीक्षा नामक एकांकी की सभी घटनायें डॉ. राजेश्वर रूद्र के आफीस में है । अठारह जुलाई का शाम का स्थान प्रमोद का मकान है । "कहाँ से कहाँ" में सभी घटनायें केसरीनन्दन के घर में है ।

सभी एकांकियों में उन्होंने समय का निर्देश किया है "रूप की बीमारी" का समय 15 सितम्बर 1938 है, "अठारह जुलाई की

शाम" नामक एकांकी का समय अठारह जुलाई के चार बजे है । सभी एकांकियों में केवल एक दृश्य है ।

इन सभी एकांकियों का विषय मुख्यत: समाज के शिक्षित मध्यमवर्ग से सम्बन्धित कई प्रकार की समस्यायें हैं । विवाह एंव प्रेम सम्बन्धी समस्या, दाम्पत्य जीवन की समस्या, सामाजिक आर्थिक एवं नैतिक व्यवस्था सम्बन्धी समस्या, सामाजिक अन्धविश्वास आदि है ।

पौराणिक एकांकियों में भी उन्होंने संकलनत्रय का पालन किया है । "शैलशिखर" की सारी घटनायें महर्षि दधीची के आश्रम में घटित हुई है । एकांकी का समय प्रभात काल है । कार्य है महर्षि दधीची का अस्थिदान । केवल एक दृश्य में एकांकी समाप्त होता है । "राजरानी सीता" की सारी घटनाऐं अशोक वाटिका में है । एकांकी का समय भगवान शंकर के महोत्सव का दिन है । "भरत का भाग्य" में केवल एक अंक है लेकिन चार दृश्य हैं । पहला दृश्य "पर्णकुटी" में दूसरा दृश्य गुरु वशिष्ठ के आश्रम में, तीसरा दृश्य माता कौशल्या के महल में तथा चौथा दृश्य नन्दिग्राम में है । एकांकी का कार्य है राम के आगमन में प्रतीक्षारत भारत का वर्णन । इसप्रकार डॉ. वर्मा ने सभी एकांकियों में संकलनत्रय का पालन किया है ।

रामकुमार वर्मा की रंगमंचीय अवधारणा

प्रसिद्ध एकांकीकार डॉ. रामकुमार वर्मा का ध्यान मुख्यतः रंगमंच की ओर रहा है । वे स्वयं एक अभिनेता रहे हैं । इसलिए उसने रंगमंच की सारी कठिनाइयों को समझकर उसे सरल बनाने का कार्य किया । रंगमंच के सम्बन्ध में डॉ. वर्मा का मत यह है कि "जब तक हम रंगमंच की पूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं कर लेते तब तक हम अभिनय के योग्य नाटकों की सृष्टि नहीं कर सकते । अतः साहित्य और रंगमंच के योग में ही हम वास्तविक नाटकों का रूप प्राप्त कर सकेंगे ।"[1] "नाटक के रंगमंच पर जैसे हम एक और संसार की सृष्टि करते हैं और हम अपनी परिस्थितियों और समस्याओं को सुलझाने या अन्य व्यक्तियों के राग-विराग में सहानुभूति और सहयोग प्राप्त करने की एक नई दृष्टि प्राप्त करते हैं । अतः यदि नाटक साहित्य का सबसे बलिष्ठ अंग होना चाहता है तो उसे रंगमंच का आश्रय ग्रहण करना ही होगा । यदि नाटक प्राण है तो रंगमंच उसका शरीर । बिना शरीर के प्राण की अभिव्यक्ति संभव नहीं हो सकती ।"[2]

रंगमंचीय एकांकियों के लिए रंग-निर्देश, मंच-सज्जा, प्रकाश-ध्वनि की व्यवस्था, पात्रों की वेशभूषा, उनके अभिनय सम्बन्धी हाव-भाव आदि का स्पष्ट एवं विस्तृत विवेचन देना आवश्यक है ।

---

1. दीपदान - पृ. 19 - डॉ. रामकुमार वर्मा
2. दीपदान - पृ. 18 - डॉ. रामकुमार वर्मा

उन्होंने अपने सभी एकांकियों में इन बातों पर ध्यान रखा है । रंगमंचीय एकांकियों के टेकनीक सम्बन्धी उनकी धारणा यह है कि "मंच पर उपस्थित किये जानेवाले एकांकी में प्रतिन्यास लिखने की आवश्यकता है जिससे रंगमंच पर आवश्यक व्यवस्था हो सके । पात्रों की अवस्था और वेश-भूषा का निर्देश आवश्यक है जिससे व्यक्तित्व की रूपरेखा स्पष्ट हो सके । नाटक के उपयोग में आनेवाली वस्तुओं की स्थिति और उनका विवरण देना आवश्यक है । अभिनय के अंतर्गत मुख पर आने जानेवाले भाव आंग संचालन की व्यवस्था देनी आवश्यक है । पात्रों द्वारा उठना, बैठना, घूमना, आगे बढ़ना, पीछे हटना, लंगड़ाकर चलना आदि कार्यों के निर्देश की आवश्यकता है । संकेत करना, कान में कहना, मुस्कुराना, भौहों पर बल पड़ना, ठोकर खाना, हाथ से बुलाना, मन ही मन पत्र, पुस्तक या अखबार पढ़ना आदि का अभिनय स्पष्ट किया जा सकता है ।"[1]

रंगमंचीय एकांकियों के लिए पात्रों के चरित्र चित्रण, संवाद योजना आदि बातों पर भी ध्यान रखना आवश्यक है । इसके सम्बन्ध में डॉ. वर्मा की राय यह है कि "रंगमंच के नाटकों में चरित्र चित्रण विशेष महत्व रखता है । चरित्रचित्रण का सम्बन्ध व्यक्तित्व से है और व्यक्तित्व मनोविज्ञान पर आधारित है ।"[2] संस्कार और प्रभाव की उचित युति में ही चरित्रचित्रण का सौन्दर्य है जब वह सौन्दर्य अभिनयकला के साँचे में ढलता है तो रंगमंच पर सच्चे जीवन का अवतरण

---

1. रजतरश्मि - पृ. 12 - डॉ. रामकुमार वर्मा
2. दीपदान - पृ. 13 - डॉ. रामकुमार वर्मा

होता है । इस अभिनय कला में कृत्रिमता के लिए कोई स्थान नहीं है ।"[1]
"रंगमंच के नाटकों के लिए संवाद संक्षिप्त और चुभते हुए होने चाहिए । कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक भावों को व्यक्त करानेवाली प्रभावशाली भाषा हो जिससे हृदय पर पात्र की पूरी छाप पड सके ।"[2]

डॉ. वर्मा के रंगमंचीय एकांकियों की विशेषता यह है कि उन्होंने साधारण, आडम्बरहीन, रंगमंच के लिए एकांकी लिखे । इसलिए ये सरलता से मंच पर अभिनीत हो सकते हैं । उनके अधिकांश एकांकी ड्राइंगरूम एकांकी है, यथार्थवादी मंच विन्यास के एकांकी । कुर्सी, टेबुल, आलमारी और सोफासेट के मध्य प्राय: सभी एकांकियों का विकास होता है । इसलिए अभिनेता की दृष्टि से इसमें कोई कठिनाई नहीं है ।

वर्माजी के कई एकांकी रंगमंच पर सफलता से अभिनीत हो चुके हैं । उनके चारुमित्रा, रजनी की रात, रम्परास, राजरानी सीता, परीक्षा, रूप की बीमारी, अठारह जुलाई की शाम, एक तोले अफीम की कीमत, समुद्रगुप्त, पराक्रमांक, प्रेम की आँखें आदि उदाहरण है ।

समुद्रगुप्त पराक्रमांक नामक एकांकी रंगमंच पर अभिनीत हो चुके हैं । प्रस्तुत एकांकी की मंच सज्जा अत्यन्त सरल है ।

---

1. दीपदान - पृ. 14 - 15 - डॉ. रामकुमार वर्मा
2. दीपदान - पृ. 15 - डॉ. रामकुमार वर्मा

एकांकी का स्थान पाटलीपुत्र में समुद्रगुप्त पराक्रमांक के भंडागार के बाहरी कक्ष है । मंच की सजावट इसप्रकार है दिवालों पर अनेक नृत्य-मुद्राओं में नर्तकियों के चित्र हैं । स्फटिक पत्थरों के स्तम्भों पर दीपों का आलोक हो रहा है । पीछे लोह दण्डों से बना हुआ परिवेष है ।

प्रत्येक पात्र की वेशभूषा एकांकी के अनुकूल है । समुद्रगुप्त की वेशभूषा इसप्रकार है शरीर पर श्वेत और पीत परिधान । रत्नजटित शिरोभूषण, केश उन्मुक्त । पृष्ट वक्षस्थल जिस पर रत्नों के हार । कटिबन्ध में कृपाण । नृत्य एवं गीत के प्रति उनकी रुचि दिखाने का एकांकी में प्रबन्ध है । दिवालों पर नृत्य-मुद्राओं में नर्तकियों के चित्र है । समुद्रगुप्त का वीणा वादन उनकी गानप्रियता दिखाते हैं । राज्यश्री नामक एकांकी रंगमंच पर अभिनीत हो चुका है । प्रस्तुत एकांकी की सारी घटनाऐं विन्ध्याटवी में आचार्य दिवाकर के आश्रम में है । पक्षियों का कलरव, संस्कृत पदोच्चारण एवं मुनियों के सान्निध्य से एकांकी में एक आश्रम की प्रतीती हो जाती है । शुभ सूचना देने के लिए कभी कभी शंख-ध्वनि का प्रस्ताव है । जब महाराज हर्षवर्धन आश्रम में पहुँचते है तब मुनियों द्वारा शंख ध्वनि सुनाई पड़ती है । वन प्रान्त में वृक्षाटवी के समीप जलती हुई चिता । चिता के समीप एक स्त्री द्वारा मंगल पाठ । आरती करती हुई नारियों के कंठ से सिसकियाँ । यह दृश्य राज्यश्री का चिता प्रवेश सूचित करता है ।

"चारुमित्रा" नामक एकांकी सर्वप्रथम इलाहाबाद युनिवेर्सिटी "विमेंस होस्टल" में 16 नवम्बर 1941 को विद्यार्थियों द्वारा अभिनीत हुआ ।

रेशमीटाई संग्रह के सभी एकांकी परीक्षा, रूप की बीमारी, अठारह जुलाई की शाम, एक तोले अफीम की कीमत, रेशमीटाई आदि रंगमंच पर अभिनीत हो चुके हैं ।

परीक्षा नामक एकांकी सर्वप्रथम 1940 में प्रयाग विश्वविद्यालय के म्यौर होस्टल के विद्यार्थियों द्वारा अभिनीत हो चुके हैं । प्रस्तुत एकांकी की रंगसज्जा साधारण और आडम्बरहीन है । एकांकी की सभी घटनायें एक दफ्तर में है । इस एकांकी में वर्माजी ने यथार्थवादी मंच विन्यास का प्रयोग किया हैं । रंगसज्जा इसप्रकार है । दीवार पर वैज्ञानिकों के चित्र और चार्ट हैं । एक टेबुल जिसपर फूलदान, फोन, कागज़, कलम आदि रखे हैं । आसपास दो तीन कुर्सियाँ और कौच है । दाहिनी ओर एक टेबुल और कुर्सी है । टेबिल पर एक टाइपराइटर और कागज़ है । इसप्रकार रंगसज्जा बहुत सरल है । इसमें पात्रों की संख्या कम है । तीन प्रमुख पात्र है डॉ. राजेश्वर रुद्र, प्रो. केदारनाथ और मिसेज़ रत्ना । मिस्टर किशोर और रोशन । सभी पात्रों की वेशभूषा वातावरण के अनुकूल है । प्रो. केदारनाथ, किशोर आदि उच्च शिक्षा प्राप्त लोग अंग्रेज़ी वेशभूषा पसन्द करते हैं । इन पात्रों की भाषा में अनेक अंग्रेज़ी शब्द आये हुए है । जैसे - टेबिल, लबोरेटरी, थैंक्स, विज़िटिंग कार्ड आदि ।

रूप की बीमारी एकांकी का सर्वप्रथम अभिनय प्रयाग विश्वविद्यालय के सर सी. पी. बैनर्जी हास्टल के विद्यार्थियों द्वारा सन् 1940 में हुआ । प्रस्तुत एकांकी में भी यथार्थवादी मंच विन्यास

का प्रयोग है । रंगमंच पर रूपचन्द्र के शयन कमरे का दृश्य है । "कमरा सजा हुआ है । दीवारों पर चित्र लगे हुए है । सामने शंकर-पार्वती का एक बहुत बड़ा चित्र है । कमरे के बीचों बीच एक पलंग है । जिसमें आगे पीछे बड़े शीशे लगे हुए हैं । पलंग पर रूपचन्द्र लेटे हुए हैं । सिरहाने एक छोटी टेबुल है । जिस पर दवा पीने का गिलास, एक टाइमपीस, घड़ी और थर्मामीटर रखा है । पास की दूसरी टेबुल पर कुछ फल रखे हैं । मेटलपीस पर फूलदान तथा मिट्टी के खूबसूरत खिलौने सजे हुए हैं । दोनों कोनों पर महात्मागांधी और जवाहरलाल नेहरू के बस्ट सुशोभित है । उनकी विरुद्ध दिशा में लेनिन और स्टेलिन के चित्र है । पलंग के समीप तीन चार कुर्सियाँ पड़ी हैं । कमरे में अगरबत्ती की हल्की सुगन्ध महक रही है ।"[1] रंगमंचीय एकांकी के अनुकूल संवादों के बीच पात्रों के मुँह पर भिन्न भिन्न भाव स्पष्ट है । कभी कभी आश्चर्य, प्रसन्नता, घबराहट, क्रोध आदि कई प्रकार के भाव पात्रों के मुँह पर स्पष्ट है ।

पात्रों की भाषा में भिन्नता है । "डॉ. दासगुप्ता - खबरदारी से धो लाओ (सोमेश्वर से) जानती नेई । दुई क्वाइण्ट बाड़ा हय । पालश (Pulse) तो ठीक है । वेशी दिन नाहीं लागेगा ।"[2] "डॉ. कपूर - गुड ईवनिंग सेठ साहब, गुड ईवनिंग डाक्टर, आइ वाज इन दि पे । क्या तबीयत कुछ ज्यादा खराब है ? (रूप की ओर देखकर) गुड ईवनिंग मिस्टर रूप ।"[3] पात्रानुकूल भाषा डॉ. वर्मा के एकांकियों

---

1. समाज के स्वर भाग 1 - पृ. 125 - डॉ. रामकुमार वर्मा
2. समाज के स्वर भाग 1 - पृ. 131 - डॉ. रामकुमार वर्मा
3. समाज के स्वर भाग 2 - पृ. 132 - डॉ. रामकुमार वर्मा

की एक विशेषता है । प्रस्तुत एकांकी में केवल छह पात्र है ।

"अठारह जुलाई की शाम" नामक एकांकी का सर्वप्रथम अभिनय कायस्थ पाठशाला कालेज के विद्यार्थियों द्वारा 19 दिसम्बर 1938 में डाक्टर ताराचन्द और लेखक के निर्देशन में हुआ । प्रस्तुत एकांकी में भी यथार्थवादी मंच विन्यास का प्रयोग है । "रंगमंच पर प्रमोद के मकान का दृश्य है । समय चार बजे शाम । कमरे में एक ओर महात्मा गांधी का चित्र, दूसरी ओर प्रमोद का फोटो । खूंटी पर कुछ कपड़े टंगे हुए हैं । समीप ही कैलेंडर, जिसमें अठारह जुलाई का पृष्ठ । दरवाजे के ऊपर क्लाक ।"[1] रंगमंचीय एकांकी में घड़ी एवं कैलेंडर के द्वारा समय को सूचित करना बहुत सरल है । प्रस्तुत एकांकी में वर्माजी ने इसके प्रयोग किये हैं । रंगमंचीय होने के कारण पात्रों की वेशभूषा में ध्यान रखना आवश्यक है । प्रस्तुत एकांकी में वर्माजी ने पात्रों के अनुकूल वेशभूषा का निर्देश किये हैं । प्रमोद में फैशन का प्रभाव बिलकुल नहीं है । उसके अनुसार वह साफ धोती और आधी बाँह की खद्दर की कमीज़ पहने हुए हैं । पैर में स्लीपर्स और बाल बिखरे हुए । लेकिन प्रमोद की पत्नी उषा फैशन से पूर्ण प्रभावित है । उनकी वेशभूषा इसप्रकार है - "लिपस्टिक लगा रही है । वह लगभग बीस वर्ष की होगी । सुन्दर मुख और निखरा हुआ रंग । सलोने मुख पर क्रीम और उस पर पाउडर की चाँदनी । क्रेप की साड़ी और उस पर बाएल का जम्पर । कानों में

---

1. समाज के स्वर भाग 3 - पृ. 213 - डॉ. रामकुमार वर्मा

नए डिज़ाइन के इयरिंग । कन्धे के समीप डायमंड ब्रूच । गले में सोने की चेन और स्वास्तिका । हाथ में सोने की गोल घड़ी और एक पतली रेशमी चूड़ी ।"[1]

"चारुमित्रा" नामक नाटक का सर्वप्रथम अभिनय इलाहाबाद युनिवेर्सिटी "विमेंस हॉस्टल" द्वारा चन्द्रावती त्रिपाठी के निर्देशन में 16 नवम्बर 1941 को हुआ । प्रस्तुत एकांकी के प्रारंभ में वर्माजी ने एक विस्तृत प्रतिन्यास लिखा है । पात्रों की वेशभूषा, मंच की सजावट, आदि बातों पर उन्होंने ध्यान रखा है । सम्राट अशोक के सम्बन्ध में उन्होंने कहा है । "उनका व्यक्तित्व दृढ और तेजस्वी है । ऊँचा कद और भरे हुए अंग, जिन पर शस्त्र सजे हुए हैं, एक बड़ी ढाल उनकी पीठ पर कसी हुई है और तलवार उनके हाथ का भाग बन गई है । सुन्दर मुखाकृति, जिसमें अभिमान और उत्साह का चित्र शक्ति की रेखाओं से खिंचा हुआ है । मस्तक पर शिरस्त्राण और कानों में कुण्डल, भौंहें मिली हुई और ओठ कसे हुए । शरीर पर सटा हुआ वस्त्र । चाल में सतर्कता और दृढ़ता ।"[2] मंच की सजावट बहुत सरल है । एकांकी की सभी घटनाऐं एक शिविर में है । दूर पानी के बहने और शिलाओं से टकर खाने की आवाज़ । शिविर में चारों ओर लताओं और गुलमों का जाल । समस्त वातावरण में शान्ति और सौन्दर्य । कभी किसी सैनिक की ललकार या पक्षी के तीखे स्वर दर्शकों में एक शिविर की प्रतीती

---

1. समाज के स्वर भाग 2 - पृ. 213 - डॉ. रामकुमार वर्मा
2. चारुमित्रा - पृ. 5 - डॉ. रामकुमार वर्मा

हो जाते हैं । रंगमंचीय एकांकी होने के कारण पात्रों के मुख पर आने जानेवाले भाव और अंगसंचालन की व्यवस्था देना आवश्यक है । प्रस्तुत एकांकी में वर्माजी ने इन बातों पर ध्यान रखा है । कभी हँसकर, कभी आवेश से, कभी कभी पुकारने का शब्द है । इस एकांकी में चारुमित्रा के एक नृत्य है । यह नृत्य युद्ध की विभीषिका से त्रस्त तिष्यरक्षिता के मन को आनन्द देने के लिए सहायक है । अशोक के सैनिकों द्वारा एक निरीह बच्चे की मृत्यु हो गयी । उनकी माँ अपने बच्चे की लाश लेकर अशोक के पास पहुँचती है । तब नेपथ्य में एक भयानक तुमुल और किसी एक स्त्री का क्रन्दन का स्वर सुनाई पड़ते हैं ।

"रजनी की रात" नामक एकांकी का सर्वप्रथम अभिनय इलाहाबाद युनिवेर्सिटी डेलीगेसी बीमेंस ऐसोसियेशन द्वारा डेलीगेसी के वार्षिक समारोह के अवसर पर कुमारी शांति सिनहा बी.ए. और कुमारी मीना आनंद बी.ए. के निर्देशन में 4 दिसम्बर 1941 को हुआ । रंगमंचीय एकांकी के अनुकूल इस एकांकी के प्रारंभ में एक विस्तृत प्रतिन्यास लिखा है । मंच सज्जा एवं पात्रों की वेशभूषा के सम्बन्ध में निर्देश दिए है । सामाजिक एकांकी के अनुकूल वातावरण के निर्देश देने में उन्होंने ध्यान रखा है । प्रस्तुत एकांकी की मंच सज्जा यथार्थवादी मंचीयता के अनुकूल है । "कमरे में सजावट है । नीचे कालीन फूलदान रखा है । कमरे में दो तीन कुर्सियाँ पड़ी हैं । कोने में सफेद चादर से सजा हुआ पलंग है । पलंग के समीप आलमारी में पुस्तकें सुन्दरता के साथ सजी है । आलमारी पर हाथी-दाँत और संगमरमर की कुछ मूर्तियाँ रखी है ।

आलमारी के समीप एक टेबुल और कुर्सी है जिस पर बैठकर रजनी कभी कभी लिखती पढती है ।[1] पात्रों के मुँह पर आने जानेवाले भाव और पात्रों की भाषा पर भी उन्होंने ध्यान रखा है । संवाद छोटे होने के कारण अभिनेता में कोई कठिनाई नहीं है । पात्रों की संख्या कम है । प्रधान तीन पात्र है रजनी, कनक और आनन्द । केसर और मंगल अप्रधान पात्र है ।

पौराणिक एकांकियों में राजरानी सीता और रम्यरास दोनों एकांकी रंगमंच पर अभिनीत हो चुके हैं । राजरानी सीता नामक एकांकी का स्थान अशोक वाटिका है । प्रस्तुत एकांकी में वर्माजी ने रंगसज्जा के बारे में अधिक निर्देश नहीं दिया है । मंच की सजावट इसप्रकार है अशोक वृक्ष के नीचे महारानी सीता शोकमग्न मुद्रा में बैठी हुई है । उनके समीप दासी विचित्रा बैठी है । वेशभूषा के सम्बन्ध में भी उन्होंने निर्देश नहीं दिया है । उस समय रावण वहाँ एक बडा उत्सव मना रहे हैं । शंखों और घंटों की ध्वनि से यह सूचित करते हैं ।

प्रेम की आँखें नामक एकांकी रंगमंच पर अभिनीत हो चुके हैं । प्रस्तुत एकांकी में वर्माजी ने प्रतिन्यास नहीं लिखा । विस्तृत रंग निर्देश भी नहीं है । यथार्थवादी मंच विन्यास के अनुसार प्रस्तुत

---

1. समाज के स्वर भाग 3 - पृ. 53 - डॉ. रामकुमार वर्मा

एकांकी की रचना की है । एकांकी रंगसज्जा इसप्रकार है - "मदन मोहन का बैठक खाना । "रेखा एक आराम कुर्सी पर बैठी हुई एक पुस्तक "दि एपिक ऑफ माउंट एवरेस्ट" पढ़ रही है ।"[1] प्रस्तुत एकांकी में पात्रों की संख्या कम है । केवल तीन पात्र है । इसलिए मंचीयता में कठिनाई नहीं है । एकांकी के पात्र हैं — वकील, उनकी पत्नी और एक मुवक्किल । साधारण आदमी होने के कारण उन्हें प्रत्येक वेशविधान की आवश्यकता नहीं है । भाषा के सम्बन्ध में उन्होंने ध्यान रखा है । संवाद अत्यन्त संक्षिप्त है । संवादों के बीच पात्रों के मुँह पर कई तरह के भाव स्पष्ट है । कभी व्यंग्य से, कभी हँसकर, कभी अन्यमनस्कता, कभी तीव्रस्वर में ये पात्र बोलते हैं । मंचीयता के लिए आवश्यक सभी तत्व इस एकांकी में है ।

औरंगज़ेब की आखिरी रात भी रंगमंचीय दृष्टि से लिखा गया एकांकी है । इसमें औरंगज़ेब नामक पात्र को रंगमंच पर अवतरित करने के लिए बहुत कठिनाई है । प्रस्तुत एकांकी में औरंगज़ेब अपनी मृत्यु शय्या पर अन्तिम सांस ले रहा है । वह नेपथ्य की ओर संकेत कर डरावनी और खोफनाक शक्ले अपनी कल्पना द्वारा देखता है । अर्ध रात्रि में उसे अपने चारों ओर पिता-भाइयों तथा पुत्रों के चित्र दिखाई पड़ते हैं । उनकी आवाज़ में पश्चात्ताप और वेदना है । केवल एक सफल अभिनेता ही ऐसे एक पात्र की भूमिका निभा सकता है ।

---

1. समाज के स्वर भाग । - पृ. 43 - डॉ. रामकुमार वर्मा

प्रस्तुत एकांकी में वर्माजी ने एक विस्तृत प्रतिन्यास लिखा है । यह मंचीयता के लिए बहुत सहायक है । पात्रों की वेशभूषा के सम्बन्ध में उन्होंने निर्देश दिए है । औरंगज़ेब की वेशभूषा इसप्रकार है - "वे एक सफेद रेशम की चादर कमर तक ओढे हुए है । दुबला पतला शरीर । कटी-छटी सफेद दाढी । एक लम्बी किन्तु वृद्धावस्था के कारण कुछ झुकी हुई । वे सफेद लंबा कुरता पहने हुए है, जो रेशमी तनी से दाहिने कन्धे पर कसा हुआ है । गले में मोतियों की एक बडी माला पडी हुई है जिसके मध्य में एक बडा नीलम जडा है । हाथ में तसबीह है । आलमगीर की मुख मुद्रा अत्यन्त मलीन और पश्चात्ताप से परिपूर्ण है ।"[1] उसीप्रकार जीनत उन्नीसा की वेशभूषा के सम्बन्ध में भी उन्होंने निर्देश दिए है । रंगमंचीय दृष्टिकोण से भाषा, संवाद योजना, ध्वनि संकेत आदि बातों को ध्यान रखा है । पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग है । संवादों के बीच पात्रों के मुँह पर कई तरह के भाव स्पष्ट है । कभी शिथिल स्वरों में, कभी खांसते हुए, विह्वल होकर, चौंककर ये पात्र बोलते हैं । उनके मुँह पर दुःख, निराशा, चिन्ता, आदि कई प्रकार के भाव स्पष्ट है । औरंगज़ेब के शयनकक्ष में सोने के पिंजडे में एक पक्षी है जिसे औरंगज़ेब के कहने पर जीनत उन्नीसा उसे मुक्त कर देती है । इसे प्रतीक के रूप में समझकर डॉ. वर्मा औरंगज़ेब के जीवन में अपने अपराधों की स्वीकारोक्ति के अनन्तर मंगलमय प्रभात की सूचना देते हैं । रंगमंचीय एकांकी के लिए सभी तत्वों को उन्होंने निर्देश दिए हैं ।

उनके इन रंगमंचीय एकांकियों की विशेषता यह है कि इनके प्रायः सभी एकांकियों में केवल एक ही दृश्य है । सभी एकांकियों

---

1. इतिहास के स्वर भाग 3 - पृ. 102 - डॉ. रामकुमार वर्मा

में पात्रों की मनोवैज्ञानिकता और भाषा पर उन्होंने ध्यान रखा है । संकलनत्रय का निर्वाह है । विस्तृत रंग संकेत, रूप सज्जा, रंग संकेत आदि बातों पर उन्होंने ध्यान रखा है । सभी एकांकियों में पात्रों की संख्या कम है । अनावश्यक कथा विस्तार, अनावश्यक संवाद, गीत या नृत्य नहीं है । इसप्रकार उनके सभी एकांकी मंचीयता के अनुकूल है ।

रेडियो एकांकी

डॉ. वर्मा का ध्यान मुख्यत: रंगमंच की ओर रहा है लेकिन उन्होंने रेडियो के लिए भी कुछ एकांकी लिखे हैं । रंगमंचीय एकांकी तथा रेडियो एकांकी दोनों की कलात्मकता अलग अलग है । रेडियो एकांकी में समस्त ज्ञानेन्द्रियों का केन्द्रबिन्दु श्रवणेन्द्रिय ही है । रेडियो एकांकी में ध्वनि की प्रधानता है । ध्वनि के माध्यम से श्रोता सारी घटनायें समझ सकते हैं । संवादों को सजीव बनाने केलिए संवादों के सम्बन्ध रखनेवाले अभिनय में ध्वनि भरने की आवश्यकता है । रेडियो एकांकी के टेकनीक सम्बन्धी डॉ. वर्मा की धारणा यह है कि "ध्वनि नाटक के लिए निम्नलिखित स्थूल रूपरेखा पर ध्यान रखना होगा : नाटक का समस्त प्रतिन्यास आगे होनेवाले संवादों द्वारा स्पष्ट हो सके । नाटक में घटनाओं की गति क्षिप्र होनी चाहिए क्योंकि कान लम्बे संवादों को देर तक सुनने के अभ्यस्त नहीं है । संवादों को सजीव बनाने के लिए संवादों से सम्बन्ध रखनेवाले अभिनय में ध्वनि भरने की आवश्यकता होगी । नाटक में घटनाओं की प्रमुखता होनी चाहिए जिससे पात्रों के कार्य-कलाप

आरोह या अवरोह उपस्थित किया जा सके । पात्रों या घटनाओं में जितना अधिक विरोध या संघर्ष उपस्थित किया जा सकेगा नाटक उतना ही अधिक मनोरंजन का विस्तार कर सकेगा । असंभावित या अप्रत्याशित घटनाओं का स्वाभाविक संघटन कौतूहल की पूर्ति करेगा । घटना या पात्र कार्य और कारण से अनुबन्धित होकर जितने शीघ्र विकास करेंगे उतनी अधिक मात्रा में नाटक सम्बद्ध होगा । छोटे-छोटे कार्यों की स्वाभाविकता ही रेडियो नाटक में प्राण की भाँति अनिवार्य होगी । ऐतिहासिक नाटकों की अपेक्षा सामाजिक या पारिवारिक नाटक ही रेडियो पर अधिक सफल होंगे । ऐतिहासिक नाटकों में रंगमंच पर पृष्ठ-पट या वेश-भूषा तो सहज ही उपस्थित की जा सकती है जो रेडियो पर संभव नहीं है । रेडियो पर समस्त अभिनय को कंठ ध्वनि में भरना पड़ता है । अतः रेडियो में कंठ-ध्वनि प्रमुख स्थान प्राप्त करती है । रेडियो पर अभिनय करनेवालों को पात्र के समस्त व्यक्तित्व, अवस्था और आत्मा को कंठ से ही ध्वनित करना पड़ता है । वातावरण की पूर्ति के लिए संगीत और ध्वनि फलन का उपयोग करना पड़ता है । इन सीमित आलंबनों के सहारे भी रेडियो ने एकांकी नाटकों के प्रस्तार में बड़ी सहायता पहुँचाई है ।"[1]

"भरत का भाग्य" रेडियो केलिए लिखा गया एक एकांकी है । इसलिए इस एकांकी को प्रतिन्यास नहीं लिखा है । रेडियो एकांकी के अनुसार इसमें ध्वनियों की प्रत्येक व्यवस्था है । राम के वनवास के समय भरत राम की पादुकाओं का पूजन करते हुए शासन कार्य देख रहे हैं ।

---

1. रजतरश्मि भूमिका - पृ. 12-13 - डॉ. रामकुमार वर्मा

यहाँ एकांकी में राम की पादुकाओं का पूजन शंख ध्वनि से सूचित है । राम के वनवास में भरत को बहुत दुःख है । वह सोचता है कि उनके कारण ही राम को वन जाना पडा । उनके मन के यह दुःख उनके संवादों से स्पष्ट है । वह कभी गहरी सांस लेकर बोलता है । कभी उनके बोलने के बीच गला भर आता है ।

जब राम सीता के साथ नान्दिग्राम में पहुँचते हैं तब उस गाँव के सभी नागरिक उन्हें स्वीकार करने को तैयार होकर खड़े हैं । घोड़ों की टाप और पहियों की थरथराहट, शंखों और तुरहियों के बजने के कोलाहल से यह स्पष्ट है । जब राम वहाँ पहुँचता है तब पुष्पक विमान की आवाज़ होती है । "राजाधिराज राम की जय । भगवती सीता की जय, महाराज लक्ष्मण की जय । भगवती सीता की जय, महाराज लक्ष्मण की जय ।" इन जयघोषों से भरत के आनन्द स्पष्ट है । महाराज रामचन्द्र जी की जय । शंखों और तुरहियों के बजने के कोलाहल से नागरिकों के आनन्द स्पष्ट है ।

डॉ. वर्मा के "बादल की मृत्यु" नामक एकांकी रंगमंचीय दृष्टि से असफल है । इसके सभी पात्र निर्जीव हैं । इसके पात्र संध्या, बादल और आकाश है । इन पात्रों को रंगमंच पर न प्रस्तुत कर सकता है । इसलिए इसको रंगमंच की दृष्टि से कोई महत्व नहीं । लंबे कथोपकथन, पद्यात्मक संवाद, अलंकृत भाषा शैली आदि के कारण यह एकांकी पाठ्य बन गया है ।

स्वर्णश्री नामक एकांकी रेडियो द्वारा प्रसारित हो चुका है । इस एकांकी में रेडियो केलिए आवश्यक ध्वनि व्यवस्था है । एकांकी के आरंभ में तूर्य की तीन बार ध्वनि होती है । दूर से आता हुआ, जनता का सम्मिलित स्वर । कहीं कहीं बीच में आदेश सुन पड़ता है - "सावधान" और उसके बाद ही किसी नारी का स्वर नहीं ..... नहीं..... नहीं..... तीसरी बार का .....नहीं ..... एक चीत्कार के रूप में होता है ।" इससे विद्रोह की सूचना मिलती है । तुमुल के शब्द और जयघोष सेनापति पुष्य मित्र के आगमन की सूचना देते हैं । सेनापति पुष्यमित्र की धनुर्विद्या के अवसर पर बाण चलने की ध्वनि और धनुर्विद्या में विजयी होने पर जयघोष की ध्वनि सुनाई पड़ती है । अंत में बाण के माध्यम से बृहद्रत का वध करता है । इस अवसर पर भीषण कराह की ध्वनि सुनाई पड़ती है । इसप्रकार एकांकी में हर एक घटना को ध्वनि के माध्यम से समझ सकते हैं ।

रंगमंच तथा रेडियो दोनों के लिए उपयुक्त एकांकी

"रजतरश्मि" में संगृहीत नाटक इस ढंग से लिखे गये हैं कि रंगमंच और रेडियो दोनों के द्वारा सफलतापूर्वक अभिनीत किये जा सके । तैमूर की हार, दुर्गावती, औरंगज़ेब की आखिरी रात, कलंक-रेखा, कौमुदी महोत्सव आदि एकांकी इसके उदाहरण हैं । इनमें ध्वन्यात्मक मूल्यों पर अपेक्षाकृत अधिक ध्यान रखा गया है, और इनकी शैली सरलतर है ।

"तैमूर की हार" नामक एकांकी प्रथम बार आकाशवाणी इलाहाबाद से 27 नवम्बर 1950 को प्रसारित हुआ । प्रस्तुत एकांकी रंगमंच और रेडियो दोनों की दृष्टि में लिखे हुए हैं । इस एकांकी में रंगमंचीय एकांकी के अनुकूल प्रतिन्यास लिखा है ।

रेडियो एकांकी होने के कारण संवादों एवं ध्वनियों के माध्यम से श्रोता सारी घटनाऐं समझ सकते हैं । घबराये हुए स्वर, भगदड़ की आवाज़, चीख और पुकार से भिन्न भिन्न पात्रों की भयानकता स्पष्ट हो जाती है । तैमूर को अपनी शक्ति पर बड़ा गर्व है । संवादों के बीच व्यंग्य भरे अट्टहास से यह स्पष्ट है ।

यह एकांकी रंगमंचीय दृष्टि से भी सफल है । एकांकी में पात्रों की संख्या अधिक है तो भी मुख्य पात्र कम है । एकांकी के आरंभ में प्रतिन्यास लिखा है । एकांकी की सभी घटनायें एक छोटे कमरे में घटित हुई है । रंग सज्जा बहुत सरल है । पात्रों के मुख पर आने जानेवाले भाव और अंगसंचालन की प्रत्येक व्यवस्था भी है । कभी कभी सोचते हुए, आँसू बहाते हुए, घबराते हुए भिन्न भिन्न पात्र रंगमंच पर आते हैं । इसलिए यह एकांकी दोनों दृष्टियों से सफल है ।

दुर्गावती नामक एकांकी प्रथम बार आकाशवाणी इलाहाबाद से 28 जून 1951 को प्रसारित हुआ । संवाद एवं ध्वनियों के माध्यम से सारी घटनाऐं समझ सकते हैं । नेपथ्य में हाथियों के चलने की आवाज़ । उनके दोनों ओर झूलती हुई घंटियाँ बारी-बारी से

ध्वनि दे रही है । पात्रों के शब्दों में कई तरह के भाव है । उन शब्दों से पात्रों के क्रोध, चिन्ता, घबराहट, आदि समझ सकते हैं । जंजीर की ध्वनि, शंख ध्वनि, रण-वाद्य और तूर्य की ध्वनि आदि ध्वनियाँ भी इस एकांकी में है । गंडासेन को बन्दी बनाता है । लेकिन जब वह भावावेश में बात करता है तो हाथ हिलने से जंजीर का शब्द होता है । महारानी दुर्गावती के पधारने पर शंख ध्वनि है । यह ध्वनि उनके आने की सूचना देती है । युद्ध घोषणा के समय नेपथ्य में रण-वाद्य और तूर्य की ध्वनि सुनाई पड़ती है ।

दुर्गावती नामक एकांकी मंचीयता की दृष्टि से भी लिखा गया एक एकांकी है । इस एकांकी में प्रतिन्यास लिखा है । लेकिन पात्रों की वेशभूषा के सम्बन्ध में प्रत्येक निर्देश नहीं है । पात्रों की संख्या अधिक है । आठ पात्र हैं । चार प्रमुख पात्र हैं । रंग सज्जा के सम्बन्ध में निर्देश नहीं है । संवाद के बीच में पात्रों के मुँह पर जो भाव है उसके सम्बन्ध में भी उन्होंने ध्यान रखा है ।

"औरंगज़ेब की आखिरी रात" प्रस्तुत एकांकी रंगमंच तथा रेडियो दोनों की दृष्टि से लिखा गया है । यह एकांकी अनेक बार "आकाशवाणी" दिल्ली, लखनऊ और पटना से प्रसारित हुआ । इसका गुजराती अनुवाद बंबई से प्रसारित हुआ । इस एकांकी में एक विस्तृत प्रतिन्यास लिखा है । पात्रों की वेशभूषा, रंग सज्जा आदि

के बारे में निर्देश दिए है । रेडियो एकांकी होने के कारण इसमें ध्वनि की प्रधानता है । जीवन भर युद्धों में जूझते हुए औरंगज़ेब अब वृद्ध और जर्जर हो गये हैं । विजय-स्वप्न निराशा में तिरोहित हो चला है । अब वह ज्वर एवं खांसी से प्रताडित अपने जीवन की अन्तिम घडियाँ गिन रहा है । जीनत के साथ औरंगज़ेब के संवाद से यह मनोवैज्ञानिकता स्पष्ट है । उनके शब्दों से ही दुःख, आश्चर्य, घबराहट, धैर्य, सन्तोष आदि कई प्रकार के भाव श्रोता समझ सकते हैं । प्रस्तुत एकांकी में पात्रों की संख्या कम है । भाषा के सम्बन्ध में उन्होंने ध्यान रखा है ।

रंग संकेत

रंगमंचीय एकांकियों केलिए रंगसंकेत की बहुत आवश्यकता है । वर्माजी ने अपने सभी रंगमंचीय एकांकियों में रंगमंचीय सुविधाओं एवं शिल्प का विशेष ध्यान रखा है । रंग संकेत की व्यवस्था इसलिए होते हैं कि पात्रों की एक साधारण रूप रेखा, उनकी आयु, मंच पर पात्रों की प्रस्तुति आदि बातें डायरेक्टर समझ सकते हैं । रजतरश्मि की भूमिका में उन्होंने रंगसंकेत सम्बन्धी अपनी अवधारणा इसप्रकार दी है - "रंगमंच पर उपस्थित किये जानेवाले एकांकी में प्रतिन्यास लिखने की आवश्यकता है जिससे रंगमंच पर आवश्यक व्यवस्था हो सके । नाटक के उपयोग में आनेवाली वस्तुओं की स्थिति और उनका विवरण देना आवश्यक है । अभिनय के अन्तर्गत मुख पर आने जानेवाले भाव और अंगसंचालन की व्यवस्था देना आवश्यक है ।"[1]

---

1. रजतरश्मि भूमिका - पृ. 12 - डॉ. रामकुमार वर्मा

डॉ. वर्मा ने रंग संकेत की रचना के पाँच उद्देश्य निर्धारित किए है - §1§ रंगभूमि की व्यवस्था केलिए इनकी रचना सहायक होती है जिससे रंग भूमि का एक स्पष्ट चित्र ध्यान में बस जाता है । पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को भी इस व्यवस्था द्वारा और अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त किया जा सकता है । §2§ इन संकेतों द्वारा पात्रों को अभिनय करने में सरलता हो जाती है । साथ ही नाटककार की मनोवैज्ञानिक प्रतिभा एवं मानवीय भावों को समझने की कुशलता का परिचय मिल जाता है । §3§ इन संकेतों द्वारा पात्रों की रूप कल्पना में सहायता मिलती है । §4§ कथावस्तु के दुरूह एवं विस्तृत स्थलों को इन संकेतों द्वारा संक्षिप्त रूप में चित्रित कर दिया जाता है । §5§ उन भावों और घटनाओं की अभिव्यक्ति के ये सबसे सबल साधन है, जिनका न कथोपकथन द्वारा न ही किसी नाटकीय प्रयत्न द्वारा अभिव्यक्तिकरण हो सकता था ।

डॉ. वर्मा ने अपने सभी रंगमंचीय एकांकियों में प्रतिन्यास लिखा है । इस प्रतिन्यास में पात्रों की रूप कल्पना, दृश्य सज्जा, पात्रों के वेशविधान, उपर्युक्त एकांकी के लिए आवश्यक चीज़ें आदि के बारे में लिखा है । इसलिए निर्देशक को एकांकी रंगमंच पर प्रस्तुत करने में कोई कठिनाई नहीं । कभी कभी यह प्रतिन्यास कुछ विस्तृत बन गया है । शिवाजी, औरंगज़ेब की आखिरी रात, चारुमित्रा आदि एकांकी के प्रतिन्यास इसका उदाहरण है । लेकिन इससे निर्देशक को कोई कठिनाई नहीं है । "वासवदत्ता" नामक एकांकी के प्रतिन्यास में कुछ निरर्थक कवि कल्पना है । यह निरर्थक कवि कल्पना निर्देशक को

एकांकी की मंचीयता में कठिनाई प्रस्तुत करती है । इसके सम्बन्ध में डॉ. वर्मा ने स्वयं कहा है कि प्रतिन्यास में आई हुई कल्पनायें छोडी जा सकती है ।

उन्होंने सभी एकांकियों में रंगमंच को दृष्टि में रखकर पात्रों के मनोविज्ञान के अनुकूल परिस्थितियों और वातावरण के अनुरूप सादा रंग संकेत दिए हैं । वर्जित कथावस्तु, युद्ध, हत्या आदि तत्वों को उन्होंने प्राय: सभी एकांकियों से निकाल दिया है ।

ऐतिहासिक, सामाजिक और पौराणिक एकांकियों के वातावरण भिन्न भिन्न है । इसलिए इन एकांकियों की दृश्य सज्जा में परिवर्तन लाना आवश्यक है । डॉ. वर्मा ने अपने ऐतिहासिक, सामाजिक पौराणिक एकांकियों की दृश्य सज्जा युगानुरूप एवं वातावरणानुकूल चित्रित की है । ऐतिहासिक एकांकियों का मंच दर्शक को उसी युग के वातावरण की भावभूमि पर पहूँचा देता है, जिस युग से एकांकी सम्बन्धित है । शिवाजी एकांकी की दृश्य सज्जा इसप्रकार हैं - "औरंगज़ेब अहमदनगर के किले में बीमार पड़े हुए है । उनका शरीर टूट चुका है । उन्हें ज्वर और खांसी है । इस समय उनकी अवस्था 89 वर्ष की है । एक साधारण पलंग पर लेटे हुए हैं । सिरहाने सफेद रेशम का तकिया है, जिसके दोनों बाजुओं में जरी की हल्की पट्टियाँ है । वे एक सफेद रेशम की चादर कमर तक ओढे हुए है । दुबला पतला शरीर । कटी-छुटी सफेद ठाढी । नाक लम्बी किन्तु वृद्धावस्था के कारण कुछ

झुकी हुई । वे सफेद लम्बा कुरता पहने हुए है, जो रेशमी तनी से दाहिने कन्धे पर कसा हुआ है । गले में मोतियों की एक बड़ी माला पड़ी हुई है जिसके मध्य में एक बड़ा नीलम जड़ा है हाथ में तसबीह है ।

आलमगीर की मुखमुद्रा अत्यन्त मलीन और पश्चात्ताप से परिपूर्ण है । उनके दाहिनी ओर एक सुसज्जित पीठिका पर उनकी पुत्री जीनत उन्नीसा बेगम बैठी हुई है । उसकी आयु ५० वर्ष के लगभग है । देखने में सौम्य और आकर्षक । वह नीले रंग की रेशमी तलवार और प्याजी रंग की ओढनी से सुसज्जित है । गले में रत्नों की माला है और कमर में मोतियों की पेटी कसी हुई है । उसके मुख पर भी भय और आशंका की रेखायें अंकित है ।

कमरे में कोई विशेष सजावट नहीं है, किन्तु सारे वायुमंडल में एक पवित्रता है । पलंग के सिरहाने दो शमादान जल रही हैं । दूसरी ओर केवल एक है, जिससे आलमगीर की आँखों में चकाचौंध न हो । पलंग के दाहिने ओर जीनत उन्नीसा की पीठिका से समीप ही एक बड़ी खिड़की है , जिससे हवा का मन्द झोंका आ रहा है । उससे घने अन्धकार के बीच में आकाश के तारे दिखाई पड़ रहे हैं । आलमगीर के सामने कोने की ओर सोने के पिंजड़े में एक पक्षी बैठा हुआ है जो कभी कभी अपने पंख फटफटा देता है । पलंग से कुछ हट कर सिरहाने की ओर एक तिपाई है जिस पर दवा की शीशियाँ रखी हुई है । उसके समीप एक ऊँचे स्टैण्ड पर लंबे मुँह वाली सोने की

सुराही है, उसमें गुलाब जल रखा हुआ है । उसके पास ही एक सोने का प्याला एक रेशमी कपड़े से ढका हुआ है ।"[1]

सामाजिक एकांकी की जो दृश्य सज्जा है वह ऐतिहासिक एकांकी की दृश्य सज्जा से बिलकुल भिन्न है । उनके अधिकांश सामाजिक एकांकी ड्राइंगरूम एकांकी है । कुर्सी, टेबुल और अलमारी के मध्य प्राय: सभी एकांकियों का विस्तार होता है । दृश्य सज्जा में उन्होंने वातावरणानुकूल एकांकी के लिए आवश्यक चीज़ों का निर्देश दिए है । ऐतिहासिक एकांकियों में जहाँ हाथी, घोड़े, मधुपात्र, स्वर्ण थाल, कादम्ब पात्र, सिंहासन आदि का निर्देश किए है तो सामाजिक एकांकियों में रेलगाड़ी, तांगा, मोटर, रेडियो, काफी सेट, कुर्सी, सोफा आदि का निर्देश दिए है ।

ध्वनिव्यवस्था

एकांकी की संवेदना को तीव्रता लाने के लिए ध्वनि बहुत सहायक है । ध्वनि के कारण एकांकी को गति मिलती है साथ ही एकांकी को कौतूहलपूर्ण एवं प्रभावशाली बना देती है । रंगमंचीय तथा रेडियो एकांकी दोनों में ध्वनि का प्रयोग है । लेकिन रंगमंचीय एकांकी की अपेक्षा रेडियो एकांकी में ध्वनि को महत्वपूर्ण स्थान है । दुर्गावती

---

1. इतिहास के स्वर भाग 3 - पृ. 102 - डॉ. रामकुमार वर्मा

नामक एकांकी में शंख ध्वनि, रण वाद्य और तूर्य की ध्वनि से युद्ध की सूचना है । "राजरानी सीता" में शंख ध्वनि और घंट ध्वनि से उत्सव की सूचना देते हैं । "भरत के भाग्य" में शंख ध्वनि, तुरहियों के बजने का शब्द, जयघोष, पुष्पक विमान के शब्द आदि ध्वनियाँ है । राम के पादुकाओं के पूजन के समय शंख ध्वनि, राम के आगमन के समय जयघोष, शंखों और तुरहियों के बजने का कोलाहल, पुष्पक विमान के शब्द आदि ध्वनियों की व्यवस्था की गयी है । "कादम्ब या विष" में अनन्त देवी अपनी परिचारिका से प्रणय निवेदन सुनाना मांगती है । तब वह वीणा में राग भैरव, राग मालकोश और मृदंग में राग हिण्डोल की ध्वनियों से प्रणय निवेदन सुनाती है । उसीप्रकार उनके रोष को परिचारिका डामरू में राग मारू के माध्यम से सुनाती है । इस प्रकार सभी एकांकियों में ध्वनि की व्यवस्था है ।

प्रकाशयोजना

मंच सज्जा में प्रकाश व्यवस्था को महत्वपूर्ण स्थान है । प्रकाश व्यवस्था के बिना मंच सज्जा फीकी लगेगी । औरंगज़ेब की आखिरी रात में प्रकाश व्यवस्था इस प्रकार है - पलंग के सिरहाने दो शमादान जल रही है । दूसरी ओर केवल एक है । प्रस्तुत एकांकी में मुसलमानी रहन सहन के अनुसार शमादान की व्यवस्था एकांकी के लिए अनुकूल है । "तैमूर की हार" में कल्याणी अंगीठी के पास बैठी हुई कोयले डालकर आग तेज कर रही है । इसप्रकार उन्होंने इस एकांकी में प्रकाश की

व्यवस्था की है । सामाजिक एकांकियों में प्रकाश का उल्लेख कम हैं । परीक्षा नामक एकांकी में डॉ. राजेश्वर रुद्र वैज्ञानिक अनुसन्धान से ऐसा एक रस खोज निकलाता है जिसके पीने पर वृद्ध व्यक्ति जवान बन जाएगा । प्रोफ्सर केदारनाथ पर इस रस का परीक्षण करते हैं । तब डॉ. वर्मा ने प्रकाश की व्यवस्था इस प्रकार की है । जब डॉ. रुद्र बोतल हाथ में लेते हैं तब स्टेज का सारा प्रकाश बुझा दिया जाता है । केवल बोतल और गिलास के उठाने और रखने की आवाज़ आती है ।

गीत, नृत्य आदि का प्रयोग

संगीत एवं नृत्य को मंच सज्जा में प्रमुख स्थान है । संगीत के माध्यम से कहीं किसी पात्र की संगीतप्रियता दिखाते है तो और कहीं किसी पात्र की विलासप्रियता दिखाते हैं । डॉ. वर्मा के एकांकियों में संगीत एवं नृत्य का प्रयोग बहुत कम है । समुद्रगुप्त पराक्रमांक में समुद्रगुप्त की संगीतापृयता दिखाने के लिए संगीत की व्यवस्था है । समुद्रगुप्त की मधुर वीणा की दिव्य अनुभूति से प्रभावित होकर राजनर्तकी रत्नप्रभा चोरों का सारा रहस्य खोल देती है । "तैमूर की हार" में ऐसा एक गीत है -

"अब मत जाना तुम दूर .....दूर ।
उठ रही है पच्छिम में धूर,
उठ रही है पच्छिम में धूर
आ गया तुरक ..... आ गया तुरक,

नशे में चुर ..... नशे में चुर..... चुर
अब मत जाना तुम दूर..... दूर ।"[1]

प्रस्तुत गीत से कल्याणी अपने पुत्र बलकरन को तुरक आक्रमण की कहानी सुनाती है । पश्चिम से तुरक लोग आकर बड़ी बड़ी तलवारें लिये लोगों का मार काट करते हिन्दुस्तान का धन लूट चले जाते थे । तुरक के भीषण अत्याचार की कहानी इन पंक्तियों में है ।

---

1. रजतरश्मि - पृ. 43 - डॉ. रामकुमार वर्मा

उपसंहार

उपसंहार

डॉ. रामकुमार वर्मा हिन्दी साहित्य के आदर्शवादी एकांकीकार है । उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं को अपनाया है । कविता, नाटक, निबन्ध, आलोचना, संस्मरण, समीक्षा, एकांकी आदि में उनकी लेखनी सफलतापूर्वक चली है । इन सभी रचनाओं में उनका उद्देश्य भारतवर्ष की कीर्ति संसार के कोने में फैलाना तथा विद्यार्थियों के हृदय में अपने सांस्कृतिक और ऐतिहासिक आदर्शों के प्रति गौरव स्वाभिमान का भाव जागृत कराना है । भारतीय संस्कृति के प्रति उन्हें बड़ा गर्व है । उनके सभी एकांकियों में यह दृष्टि विद्यमान है ।

विषय की दृष्टि से उन्होंने ऐतिहासिक, सामाजिक, पौराणिक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक सभी प्रकार के एकांकियों की रचना की है । लेकिन उनका क्षेत्र मुख्यतः ऐतिहासिक और सामाजिक है । इसमें एक ओर उन्होंने देश के महान् व्यक्तियों के जीवन चरितों का प्रतिपादन किया है तो दूसरी ओर विभिन्न युगों से सम्बन्धित राष्ट्रीय भावना को भी एकांकी का विषय बनाया है । इसके लिए उन्होंने प्राचीन भारतीय संस्कृति, सभ्यता और त्याग बलिदान के कथानक विशेष रूप से चुने हैं । उनके ऐतिहासिक एकांकियों में बौद्ध युग, हिन्दु युग, मुस्लिम युग, अँग्रेज युग, स्वातन्त्र्योत्तर युग आदि भिन्न भिन्न युगों से सम्बन्धित संस्कृति का प्रभाव परिलक्षित है ।

भारतीय संस्कृति का यशोगान भारतीय जनता की सुप्त चेतना जगाने में पर्याप्त है । आदर्शवादी एकांकीकार होने के कारण

चरित्र निर्माण की दिशा को उन्होंने विशेष महत्व दिया है । उनका विश्वास यह था कि राष्ट्र की संस्कृति में ऐतिहासिक महापुरुषों का विशेष हाथ है । इसलिए ही उन्होंने इतिहास से महत् व्यक्तियों को तथा उनसे सम्बन्धित घटनाओं को एकांकी का विषय बनाया । इतिहास पुरुष चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य, शिवाजी, नानाफडनवीस, समुद्रगुप्त आदि महत् व्यक्तियों का चरित्र देश की प्रतिष्ठा बढाने में बहुत उपयुक्त है । साथ ही उन्होंने अपने देश की कमियों को भी सूचित किया है । अहम की भावना, स्वार्थ लिप्सा, कायरता, तथा विलासिता के कारण कई शासकों ने अपने देश को क्षति पहुँचायी है । उनका वर्णन भी उनके ऐतिहासिक एकांकियों में मिलते हैं । मानवीय मूल्यों को वह अधिक महत्व देता है । उनके ऐतिहासिक, पौराणिक एकांकी इसका दृष्टांत है । ऐतिहासिक एकांकियों में अहम और वैभव में डूबकर जनता के प्रति अत्याचार करनेवाले राजा को दंड देना वह उचित समझता है । उनके मत में न्याय का दंड प्रत्येक व्यक्ति को मिलना चाहिए ।

सामाजिक एकांकी अधिकांशत: मध्यवर्गीय समाज से सम्बन्धित है । इसमें उन्होंने अपने चारों ओर दिखाई पडनेवाले यथार्थता एवं वास्तविकता को एकांकी का विषय बनाया है । परिवार, व्यक्ति और वर्ग इनका मुख्य विषय है । उन्होंने पारिवारिक तनावों का समाधानात्मक चित्रण मनोविज्ञान की पीठिका पर अत्यन्त स्वाभाविक रूप में किया है । उनके विचार में व्यक्ति, समाज का मूलभूत इकाई है । इसलिए सामाजिक विकृतियों के प्रभाव व्यक्ति मानस पर पडना स्वाभाविक बात है । पात्रों के मन की गहराई में पहुँचकर उनके चरित्र सम्बन्धी विशेषताएँ लेखक यहाँ प्रस्तुत करते हैं । समाज में कुछ लोग ऐसे दिखाई

पड़ते हैं जो बाहर से साफ सुथरे हैं, किन्तु अन्दर से दिल के काले और गंदे होते हैं । छल, कपट, धोखेबाज, अत्याचार, शोषण आदि के कारण समाज को क्षति पहुँचाते हैं । इन पात्रों के मन एकांकीकार ने यहाँ खोल दिखाया है । साथ ही, उन्होंने मध्यम वर्ग से सम्बन्धित कई समस्यायें बेकारी, गरीबी, प्रेम एवं विवाह, जाति-पाँति, अन्धविश्वास आदि को एकांकी का विषय बनाया है । अनमेल विवाह के कारण पति-पत्नी के बीच शंका एवं कुंठा का बीज अंकुरित होता है । वर्माजी ने अत्यन्त मनोवैज्ञानिक ढंग से यह समस्या प्रस्तुत की है । अन्धविश्वास पर उन्हें कुछ भी विश्वास नहीं । अशिक्षित लोगों के बीच फैली हुई अन्धविश्वास, जाति-पाँति आदि कुरीतियों को समाज से उन्मूलन करने का प्रयास उनके एकांकियों में है । इन सभी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करने में उन्होंने हास्य व्यंग्य का सहारा लिया है ।

पौराणिक एकांकियों के द्वारा उन्होंने भारतीय संस्कृति की महत्ता दिखलायी है । राम, भरत, सीता, दधीची, अहल्या, शुकन्या आदि पात्रों को आदर्श प्रतीक के रूप में चित्रित है ।

नारी पात्रों के चित्रण में उन्होंने विशेष ध्यान रखा है । वीरता, त्याग, उत्सर्ग, कर्तव्य, ममता, सहनशीलता आदि भारतीय नारी के विशिष्ट गुण है । ऐतिहासिक एकांकियों में नारी को वीर आदर्श प्रतीक के रूप में चित्रित है । देश की रक्षा के लिए आत्मबलिदान करनेवाली अनेक वीर नारियों का चित्र उनके ऐतिहासिक एकांकियों में मिलते हैं । लेकिन पौराणिक एकांकियों में नारी को आदर्श पतिव्रता के रूप में चित्रित है।

ऐतिहासिक एकांकियों में चारुमित्रा, दीपदान, कलंकरेखा को छोड़कर शेष सभी एकांकी सुखान्त है । सामाजिक पौराणिक एकांकियों में आदर्शवाद की घनी चेतना के कारण अस्वाभाविकता और कृत्रिमता आ गई है । अतः पाठकों की संवेदना को नहीं छूती । ऐतिहासिक एकांकी पाठकों को बांधने में जितने सफल निकले सामाजिक और पौराणिक एकांकी उतने सफल नहीं । सामाजिक एकांकी विभिन्न स्तर के हैं । इनमें नारी मानसिकता के इर्द गिर्द घूमनेवाले एकांकी अन्य सामाजिक एकांकियों की तुलना में काफी प्रभावशाली है ।

पात्रों के चरित्रचित्रण, भाषा, संकलनत्रय, संवाद आदि तथ्यों पर उन्होंने विशेष ध्यान रखा है । भारतीय इतिहास या पुराण से उन्होंने जिन पात्रों को चुन लिया है उनका चरित्र प्रायः इतिहास या पुराण के आधार पर ही रखा है । लेकिन अन्य पात्रों की अपेक्षा इन पात्रों में आदर्शवाद की प्रमुखता अधिक है । कम से कम शब्दों में सूक्ष्म स्पर्शों द्वारा पात्रों के स्पष्ट रेखाचित्र खींच लेना इनकी कला की प्रमुख विशेषता है । प्रायः सभी एकांकियों में पात्रों की संख्या कम है । मुख्य पात्रों के चरित्र के स्पष्टीकरण के लिए उन्होंने काल्पनिक पात्रों की सृष्टि की है । पात्रों के चरित्रचित्रण केलिए उन्होंने अधिकांश मनोवैज्ञानिक पद्धति स्वीकार की ।

संघर्ष एकांकी का प्राण है । डॉ. वर्मा ने अपने एकांकियों में आन्तरिक संघर्ष को अधिक महत्व दिया । उनके प्रायः सभी एकांकी आन्तरिक संघर्ष प्रधान है । उनके संवादों में काव्यात्मकता,

चित्रात्मकता एवं लाक्षणिकता का प्रयोग है । हृदय के भावों के अनुसार पात्रों के संवादों में भिन्नता होती है । कभी कभी उन्होंने भावपरक एवं अलंकृत वाक्यों का भी प्रयोग किया है । काव्यात्मक भाषा शैली एवं स्वगत कथन का प्रयोग एकांकी की नाटकीयता में बाधक बन जाते हैं । सभी प्रकार के एकांकियों में वातावरण यथानुकूल है । ऐतिहासिक, सामाजिक या पौराणिक एकांकी में कथानक के अनुकूल वातावरण का प्रयोग करने में उन्होंने विशेष ध्यान रखा है ।

उनकी भाषा सहज, सरल एवं स्वाभाविक है । पात्रानुकूल भाषा उनके एकांकियों की सबसे बड़ी विशेषता है । उनकी भाषा वातावरण पात्र एवं प्रसंगानुकूल बदलती रहती है । उनके एकांकियों में अंग्रेज़ी, संस्कृत, उर्दू, अरबी, फारसी आदि भाषाओं का प्रयोग मिलते हैं । संकलनत्रय का प्रयोग उनके एकांकी सम्बन्धी सबसे बड़ी विशेषता है । पाश्चात्य प्रभाव से प्रेरित होकर डॉ. वर्मा ने सबसे पहले संकलनत्रय को स्वीकार किया । उनके सभी एकांकियों में इसका पालन हुआ है । उनके सभी एकांकी एक अंक में समाप्त होते हैं ।

उन्होंने पाठ्य नाट्य साहित्य की अपेक्षा अभिनेय नाट्य साहित्य को अधिक प्रधानता दी है । उनके प्राय: सभी एकांकी रंगमंच या रेडियो केलिए उपयुक्त है । स्वयं अभिनेता होने के कारण रंगमंच की सारी कठिनाइयों से वे भली-भाँति परिचित है । स्टेज का ध्यान उन्होंने कई नाटकों में विशेष रूप से रखा है । प्रत्येक एकांकी में उन्होंने रंग-निर्देश, मंच सज्जा, प्रकाश ध्वनि की व्यवस्था, पात्रों की वेशभूषा, उनके अभिनय

संबन्धी हाव-भाव आदि बातों पर ध्यान रखा है । उनके अधिकांश सामाजिक एकांकी यथार्थवादी मंच विन्यास के अनुसार है । प्रयाग विश्वविद्यालय तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के ड्रेमेटिक एसोसियेशन द्वारा उनके वासमित्रा, परीक्षा, राज्यश्री, रूप की बीमारी, अठारह जुलाई की शाम, रजनी की रात, राजरानी सीता, प्रेम की आँखें आदि एकांकी रंगमंच पर अभिनीत हो चुके हैं । औरंगज़ेब की आखिरी रात नामक एकांकी भारत नाट्य संस्था द्वारा भी अभिनीत है । तैमूर की हार, दुर्गावती, औरंगज़ेब की आखिरी रात, स्वर्णश्री, आदि एकांकी आकाशवाणी इलाहाबाद से प्रसारित हो चुके हैं । उनके कुछ एकांकी तैमूर की हार, दुर्गावती, औरंगज़ेब की आखिरी रात, कलंकरेखा, कौमुदी महोत्सव आदि रेडियो तथा रंगमंच दोनों केलिए उपयुक्त है । इन एकांकियों में उन्होंने रंगमंच के अनुकूल प्रतिन्यास तथा रेडियो के अनुकूल ध्वनि व्यवस्था की है ।

डॉ. रामकुमार वर्मा के एकांकियों का विश्लेषण करने से यह जाहिर है, उनके एकांकी ऐतिहासिक हो सामाजिक हो या पौराणिक सभी रचनाओं में उन्होंने जीवनमूल्यों को तर्जीह दी है । जिन्दगी को सही दिशा की ओर ले जानेवाले जीवनमूल्यों के प्रति एक नई स्फूर्ति जागृत कराना रामकुमार वर्मा का लक्ष्य है ।

उनके एकांकियों में भारतीय संस्कृति की जो चेतना स्पंदित है, नैतिक मूल्यों एवं ऊँची मानवीय भावनाओं की जो आवाज़ गूँजती है, उससे उनके एकांकी चिरकाल तक स्मरण किए जाएँगे, हिन्दी एकांकी के विकास में उनका स्थान अक्षुण्ण रहेगा ।

परिशिष्ट

सहायक ग्रन्थ सूची

मौलिक ग्रंथ

1. कैलेण्डर का आखिरी पन्ना - डॉ. रामकुमार वर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 8 फौज बाज़ार, दिल्ली -6 1972.

2. रम्यरास - डॉ. रामकुमार वर्मा, रामनारायणलाल प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, प्रयाग

3. जुही के फूल - डॉ. रामकुमार वर्मा, राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली, ई. सं. 1972

4. इन्द्रधनुष - डॉ. रामकुमार वर्मा, राजकिशोर प्रकाशन, 18-बी, एडमान्सटन रोड, इलाहाबाद, ई. सं. 1959

5. रेशमी टाई - डॉ. रामकुमार वर्मा, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद

6. सरस एकांकी नाटक - डॉ. रामकुमार वर्मा, हिन्दी भवन, 370 रानी मंडी, इलाहाबाद - 3, 1955

7. रजतरश्मि - डॉ. रामकुमार वर्मा, अयोध्यासिंह गोयलीय मंत्री, भारतीय ज्ञानपीठ दुर्गाकुण्ड रोड, बनारस, मार्च 1952

8. चारुमित्रा - डॉ. रामकुमार वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, 15-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद - 1, 1967.

9. दीपदान - डॉ. रामकुमार वर्मा, भारती-भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, द्वि. सं. 2015 वि.

10. सप्तकिरण - डॉ. रामकुमार वर्मा, नेशनल इन्फरमेशन ऐंड पब्लिकेशन्स लिमिटेड, नेशनल हाउस, 6, तुलक रोड, अपोलो बंदर, बंबई - 1, प्र. सं. 1947

11. रजनी की रात - डॉ. रामकुमार वर्मा, लोक भारती प्रकाशन, 15-ए, महात्मागांधी मार्ग, इलाहाबाद - 1, प्र. सं. 1968

12. खट्टे मीठे एकांकी - डॉ. रामकुमार वर्मा, साहित्य भवन (प्रा.) लिमिटेड, के. पी. कक्कड रोड, इलाहाबाद-211003, 1973 ई.

13. अमरराज - डॉ. रामकुमार वर्मा, सेन्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद, द्वि. सं. 1956

14. पाञ्चजन्य - डॉ. रामकुमार वर्मा, भारती साहित्य मन्दिर, फव्वारा, दिल्ली -6, 1957.

15. मयूरपंख - डॉ. रामकुमार वर्मा, साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड, इलाहाबाद - 3, 1964

16. नानाफडनवीस - डॉ. रामकुमार वर्मा, रामनारायणलाल बेनी प्रसाद, प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, इलाहाबाद - 2, 1962.

17. शिवाजी - डॉ. रामकुमार वर्मा, साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग, प्र.सं. 1965.

18. रिमझिम - डॉ. रामकुमार वर्मा, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, च.सं. 1964.

19. तीन एकांकी - डॉ. रामकुमार वर्मा, सरस्वती मन्दिर, जतनबर, बनारस 1951.

20. चार ऐतिहासिक एकांकी - डॉ. रामकुमार वर्मा, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद

21. समाज के स्वर (भाग-1) व्यक्ति - डॉ. रामकुमार वर्मा, आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली- 110006, 1988.

22. समाज के स्वर (भाग-2) परिवार - डॉ. रामकुमार वर्मा, आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006, 1991.

23. समाज के स्वर (भाग-3) वर्ग - डॉ. रामकुमार वर्मा, आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006. 1984.

24. इतिहास के स्वर (भाग-1) - डॉ. रामकुमार वर्मा, आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006, 1986.

25. इतिहास के स्वर (भाग-2) - डॉ. रामकुमार वर्मा, आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली - 110006.

26. इतिहास के स्वर (भाग-3) - डॉ. रामकुमार वर्मा, आत्माराम एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली - 110006, 1986.

27. मेरे सर्वश्रेष्ठ एकांकी - डॉ. रामकुमार वर्मा, सुलभ प्रकाशन, 17, अशोक मार्ग, लखनऊ 1990.

28. चित्र एकांकी - डॉ. रामकुमार वर्मा, सुलभ प्रकाशन, 17. अशोक मार्ग, लखनऊ

आलोचनात्मक ग्रंथ

1. कबीर का रहस्यवाद - डॉ. रामकुमार वर्मा, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद 1961.

2. साहित्य समालोचना - डॉ. रामकुमार वर्मा, हिन्दी भवन, 370 रानी मंडी, इलाहाबाद - 3, 1961

3. साहित्य शास्त्र - डॉ. रामकुमार वर्मा, लोकभारती प्रकाशन, 15-ए, महात्मागांधी मार्ग, इलाहाबाद, प्र. सं. 1968 ई.

4. एकांकी कला - डॉ. रामकुमार वर्मा तथा त्रिलोकी नारायण दीक्षित, रामनारायण लाल प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता, इलाहाबाद, द्वि. सं. 1960

संदर्भ ग्रन्थ

1. हिन्दी एकांकी : स्वरूप और विश्लेषण - डॉ. रमेश तिवारी, स्मृति प्रकाशन, 61 महाजनी टोला, इलाहाबाद, 1973

2. आधुनिकता और हिन्दी एकांकी - डॉ. मक्खनलाल शर्मा, शब्द और शब्द, डी 118 अशोक विहार, दिल्ली-110052

3.	हिन्दी एकांकी की शिल्पविधि का विकास	– डॉ शिवनाथ कुमार, ग्रन्थम राम भाग, कानपुर, जुलाई 1966 ·
4.	हिन्दी एकांकी : तत्व, विकास प्रमुख एकांकीकार	– प्रो. रामचरण महेन्द्र, सरस्वती प्रकाशन मन्दिर, मोतीकटरा, आगरा, जून 1966.
5.	एकांकी और एकांकीकार	– डॉ. रामचरण महेन्द्र, वाणी प्रकाशन, 4697/5, 21 ए, दरियागंज, नयी दिल्ली – 110002, 1989.
6.	प्रतिनिधि एकांकीकार	– डॉ. रामचरण महेन्द्र, साहित्य सदन, देहरादून, प्र. सं. 1965
7.	हिन्दी एकांकी का रंगमंचीय अनुशीलन	– डॉ. भुवनेश्वर महतो, अन्नपूर्णा प्रकाशन, 106/154 गाँधी नगर, कानपुर, प्र. सं. 1980.
8.	हिन्दी एकांकी और एकांकीकार	– डॉ. जगदीश दत्त शर्मा तथा डॉ. श्याम किशोर शर्मा, अखिल भारतीय विक्रम परिषद, जैन गर्ल्स डिग्री के वचाटेर्स, प्रेमपुरी, मुजफ्फर नगर (उ. प्र.) 1983.
9.	एकांकी कुसुम	– डॉ. रामकुमार वर्मा, रंजन प्रकाशन प्रसाद पारिजात, सिटी स्टेशन रोड, आगरा –3, प्र. सं. 27 नवंबर 1960.
10.	हिन्दी के ऐतिहासिक एकांकी एक अनुशीलन	– डॉ. सौ अमरजा अजित रेखी, अन्नपूर्णा प्रकाशन, 127/1100– डब्ल्यू –1, साकेत नगर, कानपुर – 208014, प्र. सं. 1989.

11.	हिन्दी एकांकी और डॉ. रामकुमार-वर्मा	डॉ. पुष्पलता श्रीवास्तव, पराग प्रकाशन, 3/114, कर्ण गली, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली-32, प्र.सं. 1979.
12.	हिन्दी एकांकी और एकांकीकार	- डॉ. रमासूद, अन्नपूर्णा प्रकाशन, 127/1100 डब्ल्यु वन साकेत नगर, कानपुर, 1981.
13.	हिन्दी नाटक उद्भव और विकास	- डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, 1991.
14.	आधुनिक हिन्दी नाटक	- डॉ. नगेन्द्र, साहित्य रत्न भंडार, आगरा, जनवरी 1960.
15.	नाटक की परख	- डॉ. एस.पी. खन्ना, साहित्य भवन (प्राइवेट) लिमिटेड, इलाहाबाद, 1959 ई.
16.	प्रतिनिधि एकांकी	- उपेन्द्रनाथ अश्क, नीलाम प्रकाशन, खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद - 1.
17.	डॉ. रामकुमार वर्मा का काव्य	- प्रेमनाथ त्रिपाठी, चन्द्रलोक प्रकाशन, 5-अ, सरदार पटेल मार्ग, इलाहाबाद - 1, 1965.
18.	नाटककार डॉ. रामकुमार वर्मा	- कमल सूर्यवंशी, विकास प्रकाशन 127/145, डब्ल्यु-1, साकेत नगर, कानपुर - 208014, जून 1989.

19. प्राचीन ऐतिहासिक उपन्यास : इतिहास और कला - डॉ. सुषमा त्यागी, अनुराधा प्रकाशन, 105, फूलबाग कॉलोनी, सूरज कुण्ड रोड, मेरठ - 250002, प्र.सं. 1985.

20. ऐतिहासिक उपन्यासों का रचना कौशल - डॉ. दीनानाथ सिंह, विजय प्रकाशन मन्दिर, बी, 21176, कमच्छा, वाराणसी, 1992.

21. डॉ. रामकुमार वर्मा की साहित्य साधना - डॉ. चन्द्रिका प्रसाद शर्मा, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, 93, के.पी. कक्कड़ रोड, इलाहाबाद - 3, प्र.सं. 1990.

22. हिन्दी के समस्या नाटक - डॉ. विनयकुमार, नीलाभ प्रकाशन, 5, खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद -1, प्र.सं. 1938.

23. आधुनिक हिन्दी नाटक - डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2/35, अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली - 6, 1970.

24. हिन्दी नाटक और नाटककार - डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल "चन्द्र" कु. नीलाम मसन्द, पुस्तक संस्थान, 105/50 ए, नेहरू नगर, कानपुर - 208012, 1977.

25. बीसवीं शताब्दी के हिन्दी नाटकों का समाजशास्त्रीय अध्ययन - डॉ. लाजपतराय गुप्त, कल्पना प्रकाशन, 7, कबाड़ी बाजार, मेरठ कैण्ड - 25000 प्र.सं. सितम्बर 1974.

26. रंगमंच की भूमिका और हिन्दी नाटक - डॉ. रघुवरदयाल वार्ष्णेय, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, के-71, कृष्णनगर, दिल्ली

27. भारतीय नाट्य साहित्य - डॉ. नगेन्द्र, एस चन्द एण्ड कम्पनी, रामनगर, नई दिल्ली, 1968.

28. पृथ्वीराज रासो के पात्रों की ऐतिहासिकता - डॉ. कृष्णचन्द्र अग्रवाल, विश्वविद्यालय हिन्दी प्रकाशन, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ-1, प्र. सं. 2025 वि.

29. डॉ. रामकुमार वर्मा अभिनन्दन ग्रंथ - डॉ. जगदीश गुप्त, भारती परिषद, प्रयाग

30. History and Culture of Indian People (Volume 2) Age of Imperial Unity - R.C.Majumdar Bharatiya Vidya Bhavan Bombay.

संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर - नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

पत्रिकाऐं

आजकल - नवम्बर 1990

प्रकर - जून 1984

प्रकर - मई-जून 1972

प्रकर - जनवरी 1986

प्रकर - मई 1992

दक्षिण भारत - जनवरी, फरवरी, मार्च 1991

व्योत्सना - सितम्बर 1986

व्योत्सना - जनवरी 1991.